

श्रीः ।

श्रीव्रजविहार ।



श्रीयुत महाराज मुकुन्द स्वामीजीके चरण-
कमल सेवी श्रीवृन्दावन निवासी परमा-
नुरागी श्रीनारायणस्वामीजी कृत ।

दोहा-प्रगट भये पंजाबमें, सारस्वत द्विज वंश ।
संन्यासी व्रजरसगमन, सारग्रहण जिमि हंस ॥

जिसमें

श्रीकृष्णचंद आनन्दकन्द श्रीव्रजचन्द पूर्णब्रह्मकी
विचित्र लीला लिखी हैं ।

जिसको

खेमराज श्रीकृष्णदासने

मुम्बई

निज "श्रीवेङ्कटेश्वर" छापाखानामें

मुद्रितकर प्रसिद्ध किया ।

संवत् १९५६, शके १८२१.

धन्यवाद ।

श्रीवृन्दावन धाम पुण्यस्थल निवासि श्रीमन्महाराज कृष्ण चरणारविंदपरायणभवभयानिस्तारण परिव्राजकाचार्य गोस्वामि श्रीनारायण स्वामीजीको हम शतशः धन्यवाद तनमनसे देते हैं जिन्होंने अपनी उदार उज्ज्वल बुद्धिसे कलिग्रासित पुरुषोंके निस्तारार्थ अत्यंत रोचक ज्ञान भक्तिमार्गी यह "ब्रजविहार" ग्रंथ रचकर जगत्में विकास किया और अतुल यश कीर्तिके भागीहुये अतिरिक्त इसके पाँच वार सहस्रों ग्रंथ छपाकर परम दयालु श्रीस्वामीजीने परमार्थ ही साधु संतों और कृष्ण कथामृताभिलाषियोंको समर्पण कर दिया जिस किसी महात्माने इस अतुल प्रशंसनीय अनुपम ग्रंथ पानेके निमित्त स्वामीजीसे निवेदन किया उसी की इच्छा पूर्ण की. जब इस ग्रंथका माहात्म्य इतना बढ़ा कि, सभी भारतान्तर्गत निवासि कृष्ण कथामृत अभिलाषित इस पुण्य ग्रंथके दर्शनार्थ उत्सुक हुये और पानेकी इच्छाकरने लगे तब श्रीस्वामीजी महाराजने अपने उदार स्वभावसे प्रसन्नता पूर्वक इस ग्रंथके छापनेका और रजिस्टरी करनेका हक हमको प्रदान कर दिया हमने महाराजकी आज्ञा शिरोधार्य की, आजकलके समयमें ऐसा दान शील और परोपकारी होना विशेष प्रशंसाका पात्र और जगदुर्लभ है हम सहर्ष अन्तःकरणसे ईश्वरसे यही मनाते हैं कि "जबतक रवि शशि तपहिं अकाशा । तब तक ग्रंथ करहि परकाशा" ॥

आपका कृपाकांक्षी

खेमराज श्रीकृष्णदास,

"श्रीवेङ्कटेश्वर" यन्त्रालयाध्यक्ष–मुंबई.

प्रगट पत्र ।



प्रगट हो कि, यह परम मनोहर पुस्तक "श्रीव्रजविहार" जिस में श्रीकृष्णचन्द्र आनन्दकन्द ब्रजचन्द परब्रह्म की अनेक विचित्र लीलाओं का वर्णन है और ब्रजभाषा के सुललित छन्दों में रसिकजन व प्रेमियों के उत्साह बढ़ाने वाली यह रचना है सो यह कुछ नारायण स्वामी जी की चातुर्य्यता नहीं है किन्तु उक्त श्रीस्वामी जीके हृदयमें श्रीलाड़िली लाल जीने प्रेरणा करके रचना कराई है इस का यही कारण है कि, सर्वजनों को इन की वाणी अत्यन्त प्रिय है और यही हेतु श्रीभगवत्प्रेरणा का प्रत्यक्ष होताहै ॥

भरतखण्ड निवासी रसिक जनों को यह पदार्थ प्राप्ति होना दुर्ल्लभ था इसलिये ये प्रथम संवत् १९४० वैक्रमी में श्री स्वामी जी के परम सेवक लाला गणेशीलाल साहूकारनिवासी नोह ज़िला गुडगांवा हाल निवासी श्रीवृन्दावन ने प्रथमबार ॥

तत्पश्चात् सज्जन रसिकों की अधिक चाहना देख द्वितीय बार उक्त श्रीस्वामीजी महाराज के परमसेवक लाला वसन्तराय साहूकार व लाला भागमल व लाला डल्लूराम जालन्धर निवासियोंने परोपकारार्थ मुद्रित कराई ॥

श्री महाराज के परम सेवक सर्दार भक्तसिंह रईस रियासत कपूरथला व रावछत्रकर्ण मण्डलोई जमींदार इन्दौर ने परम कृपालु श्रीस्वामी जी महाराजसे आज्ञा लेकर तृतीयबार ॥

श्रीस्वामीजी महाराजके चरणकमलानुरागी परम सेवक सेठ गंगाप्रसाद रईस आगरा-व ठाकुर महाचंद रईस अमृतसर वालिये कृष्ण कोट-लाला नाथूराम हैडमास्टर रईस रिवाड़ी बाबू भक्तराम रईस लाहोरने रसिक जनोंके आनंदार्थ चतुर्थ बार मुद्रित कराई ॥

श्रीस्वामीजी महाराजकी आज्ञानुसार चौधरी महादेव प्रसाद रईस प्रयाग ने पंचमबार छपवाई ॥

अब हजारों रसिकजनों और प्रेमियोंकी अत्यन्त चाहना देख कर श्रीस्वामीजी महाराजने उक्त सेवकोंसे पुस्तकें छपवाकर बाँटने का प्रबंध न देखा-क्योंकि इस पुस्तक की चाहना प्रति दिन जगत् में बढ़ती जाती है-इसलिये हम सेवकों ने परमदयालु श्री स्वामीजी महाराजसे प्रार्थना करके पुस्तकके छापने और बेंचने का अधिकार खेमराज श्रीकृष्णदास "श्रीवेङ्कटेश्वर" यन्त्रालयाध्यक्ष मुम्बई को दिलादिया है आशा है कि, उक्त महाशय सब प्रकार सुंदर पुस्तक छापकर अभिलाषियों का मनोरथ पूर्ण करेंगे ॥

सेवक-

बाबू-रामनारायण सिंह, बाबू भक्तराम व ठाकुर महाचंद.

श्रीः ।

अथ श्रीब्रजविहार का सूचीपत्र प्रारंभः ।

इति.

श्रीः।

अथ अनुरागरस दोहावली का सूचीपत्र.

॥ श्रीः ॥

श्रीराधाकृष्णाभ्यां नमः ।

अथ गोपालाष्टकप्रारम्भः ।



विहरत स्वच्छन्दं आनन्दकन्दं
श्री ब्रजचन्दं ब्रह्मपरम् ।
पूरण शशि वदनं शोभासदनं
जितछबिमदनं रूपवरम् ॥
हलधर वरवीरं श्यामशरीरं
गुणगम्भीरं धीर धरम् ।
भज श्रीगोपालं दीनदयालं
वचन रसालं तापहरम् ॥ १ ॥
राजत वनमाला रूपविशाला
चालमराला सुरत हरम् ।
कुण्डल धृत करणं गिरिवर धरणं
निज जन शरणं कृपाकरम् ॥
गोपन कृतसंगं ललित त्रिभंगं

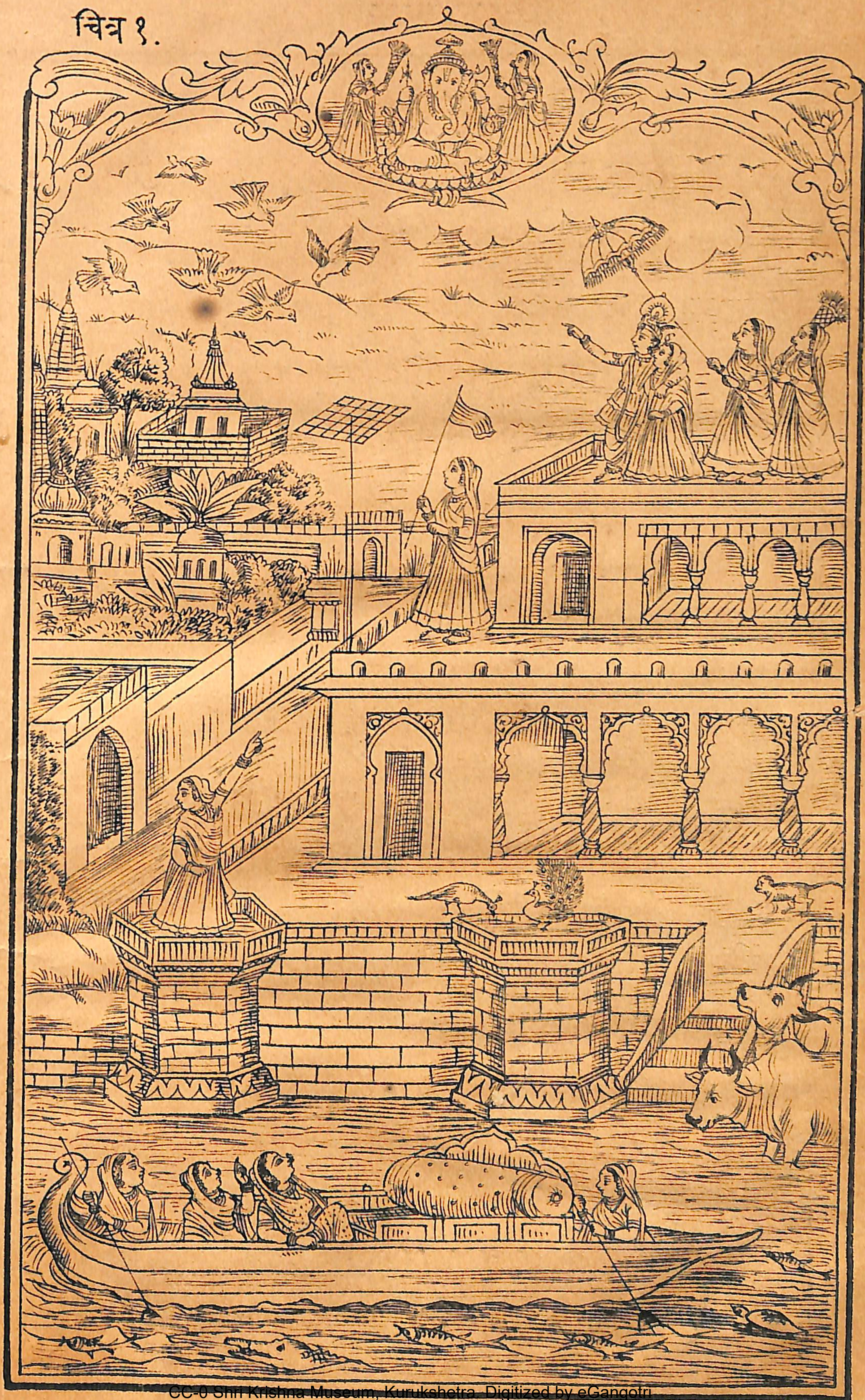
लज्जित अनंगं निरखि परम् ।
भज श्रीगोपालं दीनदयालं
वचन रसालं ताप हरम् ॥ २ ॥
जलधर वर श्यामं पूरणकामं
अतिसुखधामं दुःख हरम् ।
वृन्दावन क्रीड़ित असुरन पीड़ित
ब्रजतिय ब्रीड़ित रसिकवरम् ॥
नूपुर ध्वनि चरणं मुनिमन हरणं
तारण तरणं तुष्टतरम् ।
भज श्रीगोपालं दीनदयालं
वचन रसालं ताप हरम् ॥ ३ ॥
राधा उर हारं रूप अपारं
नीर विहारं चीर हरम् ।
कुंचित वरकेशं मुकुट विशेषं
गोपसुवेषं निगम वरम्
कोमल अतिचरणं वेदविवरणं
जगदुद्धरणं मृदुलतरम् ।
भज श्रीगोपालं दीनदयालं

वचन रसालं तापहरम् ॥ ४ ॥
अलकन मुखराजत मन्मथलाजत
किंकिणि बाजत मधुर स्वरम् ।
वंशीकृत नादं हरत विषादं
युगवरपादं तिमिर हरम् ॥
भक्तन आधीनं चरित नवीनं
परम प्रवीणं प्रेम परम् ।
भज श्रीगोपालं दीनदयालं
वचन रसालं ताप हरम् ॥ ५ ॥
अति नृत्यप्रवीरे धीरसमीरे
यमुना तीरे रास करम् ।
कलगान अनूपं श्यामस्वरूपं
त्रिभुवन भूपं मोद भरम् ॥
राधागुणगायक ब्रजसुखदायक
सुरवर नायक वेणु धरम् ।
भज श्रीगोपालं दीनदयालं
वचन रसालं ताप हरम् ॥ ६ ॥
सुन्दर मृदुहासं विपिन विलासं

कुञ्ज निवासं केलि करम् ।
युवतीदृगअञ्जन जनमनरञ्जन
केशी भञ्जन भार हरम् ।
भूषणनिजभवनं गजगतिगमनं
कालिय दमनं नृत्य करम् ।
भज श्रीगोपालं दीनदयालं
वचन रसालं ताप हरम् ॥७॥
गोरजमुखशोभित सुर नर लोभित
मन्मथ क्षोभित हृदय परम् ।
गोपनसहभुञ्जे विपिननिकुञ्जे
वत्सनपुञ्जे द्रुहिण हरम् ॥
यहछबितारायण लखिनारायण
भयेपारायण अखिल नरम् ।
भज श्रीगोपालं दीनदयालं
वचन रसालं ताप हरम् ॥८॥
इति श्रीनारायण स्वामिजी विरचितं
श्रीगोपालाष्टकं सम्पूर्णम् ।

स्थान वृन्दावन केशीघाट छत्री.

चित्र १.



॥ श्रीः ॥

श्रीनिकुञ्जविहारिणे नमः ।

अथ श्रीब्रजविहार.

श्रीनारायण स्वामीजीकृत ।

रागशहानौ ।

वन्दौं श्रीगुरु चरण कमलवर ॥ आस्ताई ॥ जिन को नाम सकल मंगलनिधि, ध्यान धरत अघ रहत न पलभर॥परम उदार सार निगमागम, भक्ति ज्ञान की खान मनोहर ॥ नारायण मोहिं दीन जानिके, वास दियो वृन्दावन गहि कर ॥ १ ॥

रागशहानौ ।

धनि धनि श्रीवृन्दावन धाम ॥ आस्ताई ॥ जाकी महिमा वेद बखानत, सब विधि पूरण काम ॥ आश करत हैं जाकी रजकी, ब्रह्मादिक सुर ग्राम ॥ लाड़िलीलाल जहाँ नित विहरत, रतिपति छबि अभिराम ॥ रसिकन को जीवन धन कहियत, मंगल आठोंयाम ॥ नारायण बिन कृपा जुगलवर, छिन न मिलै विश्राम ॥ २ ॥

राग शहानौ ।

वन्दों श्रीराधा ब्रजचन्द ॥ आस्ताई ॥ जिनके गुणगण अति अपार हैं, गावत वेद भेद बहु छन्द ॥ करत अनेक भाँति सों लीला, भक्तजनन मन देत अनंद ॥ एक वदनसों कहाँ लगि वरणें, नारायण मोसम मतिमंद ॥ ३ ॥

भजन कालिंगड़ा ।

करि मन जुगलचरण अनुराग ॥ आस्ताई ॥ बहुत दिवस तोहिं सोवत बीते, जागरे मूरख जाग ॥ बेमुखियन की संगतिसों तू, जैसे बनै त्यों भाग ॥ उनको साथ सदा दुखदाई, जिमि ढिग कारेनाग ॥ है बैरी पुनि मीत है मारै, मृग को बरुवा राग ॥ या विधि तोहिं विषै दुख देंगे, चेतरे मन्द अभाग ॥ बस वृन्दावन भज राधावर, भूलिके अन्त न लाग ॥ नारायण बनि जायगी तेरी, अब तू भ्रमना त्याग ४

रागकाफ़ी ।

मन चेति नहीं पछितावैगो ॥ आस्ताई ॥ भजिलैरे श्रीनन्दनँदन को, जो तोहि पार लगावैगो ॥ झूठ साँचके ब्यौहारन सों, कहाँ लग द्रव्य कमावैगो ॥ निशि वासर याही चिन्ता में, रोरो के मरिजावैगो ॥ जिनके काज अनीति करै तू, कोउ काम नाहिं आ-

वैगो ॥ जब यमदूत तोहिं पकरेंगे, तब न कछू बस्या वैगो ॥ नारायण यामें मेरीमें, योंहीं उमरि गमावैगो ॥ अन्तसमय ढिग आयगयो अब, फिरि कब हरिगुण गावैगो ॥ ५ ॥

कालिंगड़ा ।

मूरख छाँड़ि वृथा अभिमान॥आस्ताई॥औसर बीति चल्यो है तेरो दोदिन को महमान ॥ भूप अनेक भये पृथिवी पै, रूप तेज बलवान ॥ कौन बचे या काल व्यालतें, मिटिगये नाम निशान ॥ धवल धाम धन गज रथ सेना, नारी चंद समान ॥ अंत समय सबही को तजिके, जाय बसे शमशान ॥ तजि सतसंग भ्रमत विषयन में, जाविधि मरकट श्वान ॥ छिनिभरि बैठि न सुमिरन कीनो, जासों होय कल्यान ॥ रेमन मूढ़ अंत जिन भटकै, मेरो कह्योअब मान ॥ नारायण ब्रजराज कुँवर सों, वेगहि करि पहँचान ॥ ६ ॥

सोरठ-धीमाताल ।

टेर सुनों ब्रजराज दुलारे॥आस्ताई॥दीन मलीन हीन शुभगुण सों, आय परयोहूंद्वार तिहारे ॥ काम क्रोध अति कपट लोभ मद, सोई माने निज प्रीतम प्यारे ॥ भ्रमत रह्यो इन संग विषयन में, तो पद

कमल न मैं उरधारे ॥ कौन कुकर्म किये नहिं मैंने जोगये भूलि सो लिये उधारे ॥ यहाँलों खेप भरी रचि पचिके, चकितरहे लखिके बनजारे ॥ अबतौ एकबेर कहौ हँसिके, आजहीसों तुम भये हमारे ॥ याही कृपाते नारायण की, वेग लगेगी नावकिनारे ७

कालिंगड़ा धीमाताल ।

गोविंद गोविंद गोविंद भजरे ॥ आस्ताई ॥ आदि अनन्त सार निगमागम, जाहि नवत सुर नर मुनि अजरे ॥ दंभ कपट कामादि मान मद, इन वैरि-नको तुरतहि तजिरे ॥ नारायण मन करि सत संगति, काल व्यालते निर्भय गजरे ॥ ८ ॥

बिहाग धीमाताल ।

करिमन नंदनँदन को ध्यान ॥ आस्ताई ॥ यह अवसर तोहिफिरि न मिलैगो, मेरो कह्यो अब मान ॥ घूँघर वारी अलकें मुखपर, कुंडल झलकत कान ॥ नारायण अलसाने नैना, झूमत रूपनिधान ॥ ९ ॥

रागकालिंगड़ा तीनताल ।

भजमन श्रीराधा गोपाल ॥ आस्ताई ॥ गोल कपोल अधर बिंबाफल, लोचन परम विशाल ॥ शुक नासा भौं दूज चन्द्रसम, अति सुन्दर हैं भाल ॥ मुकुट चन्द्रिका शीश लसतहैं, घुँघरारे बरबाल ॥ रतन

जटित कुंडल कर कंकण, गल मुतियन की माल ॥ पग नूपुर मणि खचित बजत जब, चलत हंसगति चाल ॥ गौर श्याम तन बसन अमोलिक, कर महँदीसों लाल ॥ मृदु मुसिक्यान मनोहर चितवन, बोलन अधिक रसाल ॥ कुंज भवनमें बैठ दोऊ जन, गावत अद्भुतख्याल ॥ नारायण या छबिको निरखत, पुनि पुनि होत निहाल ॥ १० ॥

कवित्त ।

चाहें तू योगकरि भ्रुकुटी मध्य ध्यान धरि; चाहें नाम रूप मिथ्या जानिके निहारलै ॥ निर्गुण निर्भय निराकार ज्योति व्यापरह्यो, ऐसो तत्त्वज्ञान निज मनमें तू धारलै॥नारायण अपने को आपही बखान करि; मोतें वह भिन्न नहीं याविधि पुकारलै ॥ जौलों तोहिं नंदको कुमार नहीं दृष्टि परै; तब लों तू भले बैठि ब्रह्म को विचारिलै ॥ ११ ॥

इति श्रीपदसिद्धान्त समाप्त ॥

अथ बधाई के भजन ।

ध्रुपद सारंग ।

आजतौ बधाई माई भवन भवन बाजि रही, महाराज दशरथ गृह प्रगटे सुखधाम ॥ आस्ताई ॥ रन

वासे अति अनंद, निरख वदन अवधचन्द, पुनिपुनि उर लावत, सुख पावत सब बाम ॥ पुरजन मनअति उमंग, जहां तहां है रागरंग, देत ना प्रतीत बीतजात अष्टयाम ॥ विप्र करत वेदगान; पावत सनमान दान, नारायण लोगन के पूरण भये काम॥ १ ॥

जँगले का ज़िला ।

आज अवधपुरी आनंद छायो ॥ आस्ताई ॥ घर घर मंगलचार बधाई, कौशल्या रानी सुत जायो ॥ शुभनक्षत्र पुनर्वसु नौमी, चैत्रमास सब भाँति सुहायो ॥ भौमवार बर मध्य दिवसके, श्रीरघुवीर जनम तब पायो ॥ निगमागम जाकी महिमा को, गावत गावत पार न पायो ॥ सो महाराज काज भक्तन के, नृप दशरथको कुँवर कहायो ॥ जाके दरशन को सुर तरसें, ताहि धायलै कंठ लगायो ॥ नारायण अपनी भक्ती को, जग में प्रगट प्रभाव दिखायो ॥ २ ॥

बधाई जँगले का ज़िला ।

आज महरि घर देउरी बधाई ॥ आस्ताई ॥ शुभ लक्षण सुन्दर सुत जायो बड़ भागिनि है यशुमति माई ॥ वृद्ध वधू सब जुरि मिलि आईं, यथायोग्य कुलरीति कराई ॥ दान मान विप्रनको दीनों मणि-

मुक्ता पट भूषणताई ॥ मृगनयनी कल कोकिलबयनी, करि शृँगार बैठीं अगनाई ॥ लैलै नाम नंद यशुमति को, गावत गारी परम सुहाई॥ ध्वज पताक तोरण मणिजाला, द्वारन वन्दनवार बँधाई ॥ नारायण ब्रज आनँद छायो, प्रगट भये जहां कुँवर कन्हाई ॥ ३ ॥

बधाई ध्रुपद ।

धन्य धन्य तू है रानी कियो उपकार घनो, ऐसो सुत जायो जासा जगतहू तरैगो ॥ आस्ताई ॥ जाको मुख निरखतही दूरहोत कालरोग, कौतुक करि गिरिवर निज करपै लै धरैगो ॥ पूतना प्रलम्ब तृणावर्त्त केशि कंस आदि, महाबीर असुरन के प्राणन हरैगो ॥ नारायण ऐसे कुछ परेहैं नक्षत्र याके, सुरपति को गर्व छिन में दूरि सब करैगो॥४॥

बधाई राग शहानौ ।

देखि चरित मोहि अजरज आवै ॥ आस्ताई ॥ जो कर्त्ता जगपालक हर्त्ता, सो अब नंद को लाल कहावै ॥ बिन कर चरण श्रवण नासा दृग, नेति नेति जाको श्रुति गावै ॥ ताकूं पकरि महरि अँगुरीतें, आँगन में चलिबो सिखरावै ॥ ब्रह्म अनादि अलक्ष अगोचर, ज्योति अजन्म अनंत कहावै ॥

सो शशि वदन सदन शोभा को, नँदरानी निज गोद खिलावै॥जाके डर डोलत नभ धरनी, काल कराल सदाभय पावै॥ सो ब्रजराज आज जननी की, भौंह चढ़ीको निरख डरावै॥ जाके सुमरणते जीवन को भवबंधन छिन में छुटि जावै॥ सोई आज बँध्यो ऊखलते, निरखन को सगरी ब्रज धावै॥ पूरण काम क्षीरसागर पति, माँगि माँगि दधि माखन खावै॥ भक्ताधीन सदा नारायण, प्रेम की महिमा प्रगट दिखावै॥ ५॥

इति श्रीबधाईके भजन सम्पूर्णम्॥

अथ स्तुति यमलार्जुनकी ।

गीतिका छंद ।

पारब्रह्म परमेश्वर अवगति, भवन चतुर्दश नाथ हरी॥ जब जब भीर परी संतन पै, प्रगट होय प्रतिपाल करी॥

आदि अंत सब के तुम स्वामी, ब्रह्मादिक हैं अनुगामी॥ कृष्ण नमामि नमामि नमामी, दया-सिंधु अन्तरयामी॥

जाकोध्यान धरत योगी जन, शेष जपत नित नाम नये॥ सो भवतारण दुष्ट निवारण, संतन कारण प्रगट भये॥

जिनको नाम सुनत यम डरपत, थरथर काँपत काल हियो॥ तिनको पकरि नंद की रानी, ऊखल सों लै बाँधि दियो॥

जै दुख मोचन पंकजलोचन, उपमा जाय न कहत बनी॥ जै सुखसागर सब गुण आगर, शोभा अंग अनंग घनी॥

नारद को हम अति गुण मानें, शाप नहीं वरदान दियो॥ जा कारणतें प्रभू आपने, दर्शन दियो सनाथ कियो॥

जो हरहू के ध्यान न आवत, अपर अमर हैं किहि लेखे॥ सो हरि प्रगट नंद के आँगन, ऊखल संग बँधे देखे॥

जिनकी पदरज को सुर तरसें, अगम अगोचर दनुजारी॥ त्राहि त्राहि प्रणतारत भंजन, जन मन रंजन सुखकारी॥

तुमरी माया जीव भुलानों, किहि विधि नाथ तुमें जाने॥ तुमही कृपा करौ जब स्वामी, तबहीं तुमको पहिंचाने॥

हे मुकुंद मधुसूदन श्रीपति, कृपानिवास कृपा कीजै॥ इन चरणन में सदा रहै मन, यह वरदान हमें दीजै॥ जै केशव जै अधम उधारण, दयासिंधु

हरि नित्य मगन ॥ जै सुन्दर ब्रजराज शशीमुख, सदा बसो मम हृदय गगन ॥

रसना नित तुम्हरे गुणगावै, श्रवण कथा सुनि मोद भरैं ॥ कर नित करैं तुम्हारी सेवा, नैन संत जन दरश करैं ॥

नेम धर्म व्रत जप तप संयम, योग यज्ञ आचार करैं ॥ नारायण विन भक्ति न रीझौ वेद संत सब साख भरैं ॥ १३ ॥

इति श्रीयमलार्जुन की स्तुति समाप्त ॥

अथ माखन चोर लीला प्रारंभः।

(समाजी वचन)

॥ दोहा ॥

नारायण इक ब्रजवधू, चली न्हायवे प्रात ॥
ढिग की सखी बुलायके, कही तासु यह बात॥१॥

दोहा।

बीर यहांपै तनक तू, बैठी चौकसी काज।
मेरे घर आवे नहीं, चोरन को शिरताज ॥ २॥

कालिंगड़ा।

यमुना न्हान चली ब्रजगोरी॥आस्ताई॥सजनी एक चौकसी कारन, बैठारा निज घर की पौरी ॥ ताके भवन धसे मनमोहन, कियो चहत माखन की

चोरी॥रूप ठगौरी डारि सखीपै, आप गये जहाँधरी कमोरी॥ कछु खायो कछु भूमि गिरायो, आँगन माँहि मट्ठुकिया फोरी॥ नारायण या विधि कुचाल करि, भाजि गये निधि वन की खोरी॥ ३॥

दोहा।

जब द्वारे आई सखी, छींक भई ततकाल।
पुनि आँगन में जायके, देखी अधिक कुचाल॥४॥

सखी वचन सखी प्रति परस्पर।

कालिंगड़ा।

किन मेरो माखन बिखरायो॥आस्ताई॥फूटी परी मट्ठुकिया आँगन, कहा भयो भीतर को आयो। मैं निज हितू जानके तोको, रखवारी करिवे बैठायो॥ अरी भटू तुमहू रही सोवत, भलो चोरते भवन रखायो। आवत छींक भई मो सन्मुख, उन अपनो फल प्रगट दिखायो॥ नारायण तैं प्रेमिनि बनिके, मेरो घर सबरो लुटवायो॥ ५॥

सखी को उत्तर।

आसावरी।

वाकी चौकसी कैसे करूं मैं ना जानूं कितसों वह आवै॥ आस्ताई॥ अचक अचक पग धरत द्वारपै, नूपुर की धुनि होन न पावै॥ उझकि उझकि इत

उत में झांकिके, फिर सैनन निज सखा बुलावै ॥ छींके धरी कमोरी माखन, अँगुरी सों पुनि तिन्हें बतावै ॥ वस्तु चोर हो ताकूं पकरे, चाहै जितौ बलवान कहावै ॥ नारायण वा चित के चोर सों, काहू की न कछू बसियावै ॥ ६ ॥

पुनि सखीवचन ।

दोहा ।

तोहि चतुर जानूं जबी, चोर न जावे भाज ।
हाथ पकरि पुनिलैचलें, यशुमतिके ढिगआज॥७॥

समाजी वचन ।

दोहा ।

कुलदेवी पूजन चलीं, इतनी कहि ब्रजनार ॥
पुनि ताके घर में गये, चोरनके सरदार ॥ ८ ॥

दोहा ।

झट किंवार की ओटते,निकसि नवेली बाल॥लपकि झपकि निज अंक भरि, पकरि लिये गोपाल॥९॥

सखी वचन लालजी प्रति ।

राग भैरव ।

मोहन अब कित भाजिके जैहौ॥आस्ताई॥ बहुत अनीति करौ तुम ब्रज में, आज सबी फल पैहौ ॥ राखूंगी तोहि पकरि भवन में कौन सहाय बुलैहौ॥

चंचल चपल चोर चूड़ामणि, पुनि माखन न चुरै-
हौ।नाच गाय कछू करौ वीनति, गहरी भेट चढ़ैहौ।।
नारायण जबही छूटौगे, फिर न टेढ़े बतरैहौ ॥ १०॥

लालजी वचन सखी प्रति।

कालिंगड़ा।

सखी मोहि चोर चोर मति भाख ॥ आस्ताई ॥
तुही कहै मेरौ दधि नीकौ, तनक श्याम लै चाखै ॥
निशि दिन मेरे नंदबबा घर, तोसी आवत लाख ॥
मैं चोरीको नाम न जानूं, बूझिलै मेरी साख ॥
मोहिं कहा तेरे गोरस सों, चाहैं गैल में नाख ॥
नारायण जो हमें देय तू, सो अपने घर राख॥११॥

सखी वचन लालजी प्रति।

राग खट।

अब तुम कहां जावौगे भाज ॥ आस्ताई ॥ चोरी
करत फिरत नित घर घर, तनक न आवत लाज ॥
बांधूंगी मैं हाथ तिहारे, भले मिले हौ आज ॥ नारा-
यण निज भवन होयगो, नन्दराय को राज ॥ १२ ॥

वार्त्तिक।

यों कहके सखी श्रीलालजी के हाथ बांधवेलगी,
तब लालजी बोले, अरी तोहि हाथ बांधवौऊ नाहिं
आवै, देख हम तोहि सिखावें ॥ १३ ॥

दोहा ।

छैल छली छल कपटसों, बाँधि सखी के हाथ ।
माखन ताहि दिखायके, जेंवत ग्वालों साथ॥ १४॥

दोहा ।

गिरितनया कूं पूजिके, घर आई ब्रजनार ।
मगन भई निज हिये में, कौतुक नयो निहार॥ १५॥

सखी वचन लालजी प्रति ।

कालिंगड़ा ।

आज यहां कैसे तुमआये॥आस्ताई॥सूने भवन धसत नहिं डरपत, ऐसे निडर कौन के जाये ॥ छींके सों मटुकी उतारते, नेक नहीं मन में सकुचाये ॥ भले सपूत भये निज कुल में, लाज सरम के खोज मिटाये ॥ काहेको यह ग्वाल बाल सब, ओर पास तुमने बैठाये॥ नारायण याही विधि घर घर, जेंवत हो नित माल पराये ॥ १६ ॥

लालजी वचन ।

राग खम्माच ।

मैं कहा कहूं कछु कही न जावै॥आस्ताई॥ऐसो समौं कबू नहिं देख्यो, कीजै भलौ बुराई आवै ॥ तो छींके एक चढ़ी बिलैया, माखन मटकी भूमि



गिरावै ॥ ताहि बिड़ारि करूं रखवारी, याहूपै मोहिं दोष लगावै ॥ यही समझकै सखा बुलाये, मति कहूं ग्वालिन फैल मचावै ॥ नारायण यह साख भरेंगे, घर बुलायके चोर बनावै ॥ १७ ॥

वार्त्तिक ।

यह वचन रसीले सुनिके सखी मुसक्याय गई, अरु शोभा धाम की शोभा निरखिके बोली, बलिहार या चतुराई पै, तब आप बोले अरी सखी! घबरावै क्यों है अभी तौ कई बेर बलिहार होयगी ॥ १८ ॥

दोहा ।

नारायण मैं सत्य कहुं, विना कपट छलछंद ।
ये लीला जो नित सुने, पावै परमानन्द ॥ १९ ॥

इति श्रीमाखनचोर लीला श्रीनारायण स्वामीजी-
कृत समाप्त ॥ १ ॥

अथ उराहनो लीला प्रारंभः ।

(समाजी वचन.)

दोहा ।

विधु वदनी शोभा घनी, मृगनैनी वरबाम ।
सहजहिं नन्द भवन गई, देखे सुंदरश्याम ॥ १ ॥

दोहा ।

निरखि रूप अति मुदितमन, घर आई ब्रजनारि।
अपर सखी बूझन लगी, याकी दशा निहारि॥ २॥

दोहा ।

अरी सखी तू प्रात सों, नाहिं भाषत मुख बैन ।
कियो न कछु शृंगार तन, दियो न काजरनैन॥ ३॥

उत्तर सखीको सखी प्रति ।

राग सिन्दूरा ।

एरी मैं तो सहज सुभाव गई नन्दजू के, तहां देख्यो सुख और ॥ अस्ताई ॥ इकले श्याम नईसी धजसो, ठाढ़े भवन की पौर ॥ रतन शृँगार बहार हँसन की, माथे केशर खौर ॥ नारायण सो छबि दृग छाई, रही न काजर ठौर ॥ ४ ॥

वार्त्तिक ।

यह सुनिके सखी आपस में कहने लगीं ॥ ५ ॥

राग परज ।

अब नन्द भवन में चलौरी बीर ॥ आस्ताई ॥ साँवरे कन्हाई बिन कल न परत, घरी पल छिन मन न धरत है धीर॥ दृग अति अकुलावे, नाहिंपलक

लगावें, पुनि उतही को धावें, परी इनपै भीर ॥ तन सुरत विसारी, लगी चटपटी भारी, नारायण हमारी, को जानत पीर ॥ ६ ॥

दोहा ।

जुरि मिलकें पुनि गईं सब, नवगोरी ब्रज बाल ॥
मिस उराहनो करि सुघर, निरखत मोहनलाल॥७॥

सखी वचन यशोदा प्रति ।

खम्माच का ज़िला ।

हमारी पुकार सुनों नन्दरानी ॥ आस्ताई ॥ तेरौ छैल गैल नित रोकै, नयो भयौ दधि दानी ॥ और कुचाल करत जो हमसों, सो हम कहत लजानी ॥ नारायण ताकूं तुम बर जा, बोलत अटपटि बानी ८

अपर सखी वचन यशोदा प्रति ।

जोगिया आसावरी ।

हमारो न्याव करो महतारी॥आस्ताई ॥ या ब्रज में प्रगटयो उतपाती, तेरौ छैल बिहारी ॥ विना बात हमसा नित अटकैं, ढीठ बड़ो है भारी ॥ अचरा झटकि पटकि शिर गागरि, पुनि ठाढो दे गारी ॥ तुम वाको घर में नहिं बरजति, कुल की रीति बिगारी ॥ नारायण कछु जान परत है, एक सलाह तिहारी ॥ ९ ॥

अपर सखी वचन यशोदा प्रति ।

कालिंगड़ा धीमा ताल ।

ब्रज में कैसे बसेंरी माई ॥ आस्ताई ॥ जहाँ नित प्रति उत्पात करत हैं, तेरो कुँवर कन्हाई ॥ भोरही मैं सोवत अँगना में, अचकही आय जगाई॥ उठरी सखी तोहि द्वारे पै, टेरत कोऊ लुगाइ ॥ मैं तौ द्वार पै देखिवे निकसी, कोहै कहां ते आई ॥ पीछे ते इन घर भीतर सों, सांकर तुरत लगाई ॥ मैं बाहर ये भवन माहिं मन, मानत धूम मचाई ॥ बासन फोरि तोरि सब छींके, दधि गोरस ढरकाई ॥ यह कौतुक सुनिके ब्रजवनिता, निरखन को सब धाई॥हँसि हँसिके मिलि बूझत मोसों, कहा लीला फैलाई ॥ भाँति भाँति की बोली बोलत, जो जाके मन भाई ॥ मैं अपने मन कहूं नारायण, यह कहा कुमति कमाई ॥ १० ॥

यशोदा वचन ।

राग ठोड़ी जौनपुरी ।

ग्वालिन झूंठ उराहनो लाई ॥ आस्ताई ॥ कब तेरे घर गयो साँवरो, कब गोरसढरकाई ॥ याही मिस मेरे मोहन को, तू अब देखन आई ॥ नारायण तेरे मन की, मैं जानि गई चतुराई ॥ ११ ॥



सखी वचन यशोदा प्रति ।

राग बिलावल ।

यशुमति तेरी भली बनि आई ॥ आस्ताई ॥ पूत सपूत प्रगट भयो जाको, नित उठ करत कमाई ॥ भूषण चीर चुराय हमारे, मानत अधिक बड़ाई॥ घर में लाय तोहि पहरावत, भलौ कुँवर सुखदाई॥ घाट बाट नित माँगत डौलै, निज कुल रीति मिटाई ॥ नारायण सोई करै कौतुक, जो तैं पट्टी पढ़ाई ॥ १२॥

यशोदा वचन सखी प्रति ।

राग ठोड़ी जौनपुरी ।

ग्वालिन रूप के मद इतरावै॥ आस्ताई॥ तू अति तरुण मेरो सुत बालक, नाहक दोष लगावै ॥ तुही नई भई जोबन वारी, नेक लाज नहिं आवै ॥ नारायण अब जा घर अपने, क्यों तू बात बनावै ॥ १३॥

सखी वचन यशोदा प्रति ।

कालिंगड़ा ।

ब्रजरानी तैंने भलौ सुत जायो ॥ आस्ताई ॥ घर बाहर नित अटकत हमसों, करत जो जिय में भायो मेरे भवन में आय अचानक, निज पट आप दुरायौ ॥ द्वार निकसि कहि याही चोरटी, मेरो वसन

चुरायौ ॥ पार परोसिन देखि हँसे सब, मो मन अति सकुचायो ॥ नारायण तुमही रहौ ब्रज में, हम बसिबो भरि पायो ॥ १४ ॥

यशोदा वचन सखी प्रति।

खम्माच का ज़िला।

मेरे सुत पीछे क्यों परीं ब्रजनारियां ॥आस्ताई॥ कोऊ ता नचावै, कोऊ चोर ल बनावै, नित झूंठही लगावै, दोष देवें मिल गारियां॥ दौरी दौरी आवा, नहिं नेक सकुचावो, तुम रूप गरवीली, बड़े गोप की कुमारियां ॥ कहां मेरो लाल, कहां तुम नारायण, अचरज आवै बातें सुनिके तिहारियां ॥ १५ ॥

सखी वचन।

दोहा।

नँद रानी तू धन्य है, धन्य तिहारो लाल।
हमहूं ब्रज में धन्य हैं, जो नित सहें कुचाल ॥१६॥

वार्तिक।

भलौ न्याव कियो।

नंदरानी को बचन लाल जी प्रति।

राग खम्माच।

मोहन तू इतनी कही मान ॥ आस्ताई ॥ बाहर मति

उरझै काहू सों, मेरे जीवन प्रान॥ ब्रज वनिता तेरे गुन मोसों, नित प्रति करत बखान॥ मेरो कह्यो तू सांच न माने, सुनि लै अपने कान॥ इन बातन सों निंदा उपजै, ठकुरायत में हान॥ नारायण सुत बड़े बाप के, तजि दै ऐसी बान॥ १७॥

लालजी वचन मैया प्रति।

झंझोटी तीनताला।

जननी तू इनकी मति माने॥ आस्ताई॥ जाविध तू होवै रिस मोप, सो यह कौतुक ठाने॥ धोखे सों मोहि निकट बोलके, उर लगाय लियो याने॥ जबहि अचक आय पीछेते, मुख चूमन कियो वाने॥ खंजन दृग चंचल चपलासी, अजहुँ कुटिल भौं ताने॥ नारायण जैसी वे आप हैं, तैसो और को जाने॥ १८॥

यशोदा वचन लालजी प्रति।

दोहा।

लाल कुचाल न तजत तू, समझायो बहुबार।
चोर कहावै आप को, ह्वै के राजकुमार॥ १९॥

लालजी वचन मैया प्रति ।

झंझोटी तीनताला ।

मैया यह झूँठही दोष लगावै॥आस्ताई॥बूझलै मेरे सखा संग के, जो तोहि सांच न आवै ॥ भवन रहूं तौ तुही कहैगी, गौ चारन नहिं जावै ॥ जो जाऊं तौ यह मग छेड़ै फेर उराहनो लावै ॥ त्रिया चरित्र रचै ढिग तेरे, तोरके हार दिखावै ॥ तू जननी मेरी अति भोरी, याके कहे पतिआवै ॥ कित गज-राज कहां मृग छौना, अनगढ़ मेल मिलावै ॥ नारा-यण मोहन मुख बातें,सुनि यशुमति मुसिक्यावै२०

यशोदाजी वचन सखी प्रति ।

राग मलहार ।

देत उराहनो लाज न आई॥आस्ताई॥मेरो लाल ब्रज भर में भोरो, नेक नहीं जानत चतुराई ॥ सुनि यशुमति के वचन हँसी सब, निज निज भवन चलीं हरखाई ॥ नारायण लखि चरित श्याम के, ब्रह्मादिक की मति बौराई ॥ २१ ॥

दोहा ।

नारायण जो प्रीति सों, यह लीला सुनि लेत ।
ताको सुन्दर साँवरौ, धाम आपनो देत ॥ २२ ॥

इति श्रीउराहनो लीला श्रीनारायण स्वामीजी कृत समाप्ता ॥ २ ॥

अथ आँखमिचौनी लीला प्रारंभः।

(लालजीको वचन.)

राग खट।

हलधर के कांधे पै कर धर यों बोले गोपाल ॥ आस्ताई ॥ बलदाऊ मेरी कही मानों, टेर लेउ सब ग्वाल ॥ गोवर्द्धन की सुभग तरहटी, सघन कदम्ब तमाल ॥ कुहकत मोर भूमि हरियाली, भरे मधुर जल ताल ॥ रुचि सों तहां चरैंगी गैय्या, देंगी दूध विशाल ॥ नारायण इत हम तुम खेलें, आँखमिचौनी ख्याल ॥ १ ॥

दाऊजी वचन।

राग भैरव।

यह बात भली कही लाल ॥ आस्ताई ॥ आवौरे मिल सखा हमारे, गायनके चरवाल ॥ निज निज धेनु लिवाय चलौ अब, जहाँ कहत गोपाल ॥ नारायण हलधर के मुख सों, सुन हरषे सब ग्वाल ॥ २ ॥

वार्त्तिक।

सखा आपसमें बोले, अरेभैया! यह सलाह कन्हैया ने अच्छी बताई, वेग चलौ, फिर वा ठौर

पै जायके गैया तौ चरवे छोड़ दई, और आप सब मिलके आँखमिचौनी खेलवे लगे ॥ ३ ॥

समाजी वचन ।

कालिंगड़ा ।

आँखमिचौनी खेलें दोऊ भाई ॥ आस्ताई ॥ भाजत में बाजत पग नूपुर, मुख पर श्रम बिन्दू छबि छाई ॥ खेलत सखा परस्पर पकरत, हलधर के जियमें कछु आई ॥ बेरिबेरि हरिही को छूवत, निज मन खीजत कुँवर कन्हाई ॥ रिस ह्वैके पुनि गये मात ढिग, अँसुवन भरि सब बात सुनाई॥ नारायण मोसों बल भैया, राखत आंट ये कौन भलाई॥४॥

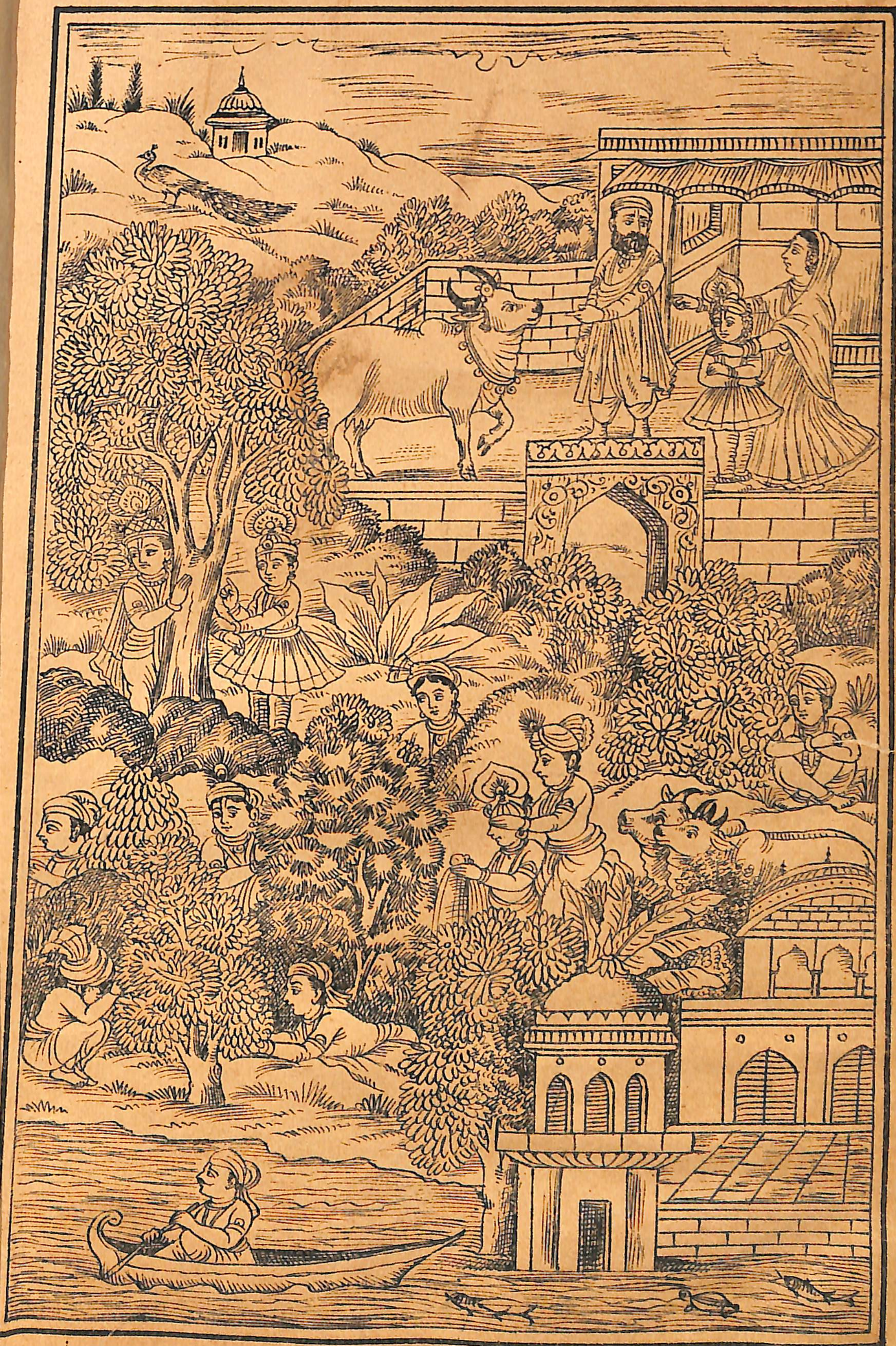
यशोदा वचन लालजी प्रति ।

राग आसावरी ।

तुम उदास जिन होवो मेरे खेलौ याही ठौर ॥ आस्ताई ॥ हलधर को घर धसन न दूंगी, ढीठन को शिर मौर ॥ तेरे काज मनोहर गैया, आज लई है और ॥ नारायण चलि तोहि दिखाऊं, बँधी भीतरी पौर ॥ ५ ॥

वार्त्तिक ।

ये वचन जननी मुख सुनके, अति उमंगसों लालजी



मैयाकी अँगुरी पकड़ जब पौरीमें जायके गैया कूं देख्यो-तब आप बोले-अरीमैया! यह गैया तौ बड़ी सुंदरहै और दूध भी घनों देयगी-तब जननी लाल मुख चूमके बोली-अरे लाला! बाबाने तेरे ही लिये मँगवाईहै-दाऊको यामें कछु साझोनहीं, तब आप बोले-याको नेक सों दूध दाऊको भी दियो करेंगे-तब नंद रानी हँसके बोली-लाला! तेरी राजी ॥ ६ ॥

दोहा।

ताही छिन श्रीनंदजू, आये भवन मँझार ॥
निजगोदी लै लाल कूं, बाढ्यों हरष अपार ॥७॥
लीला पूरण ब्रह्मकी, भक्तजननके प्रान ॥
नारायण जे दुष्टजन, करें तर्कना आन ॥ ८ ॥

इति श्रीआँखमिचौनी लीला श्रीनारायण स्वामीजी कृतसमाप्ता ॥ ३ ॥

अथ श्रीलालजी की उत्थापन लीला प्रारंभः।

यशोदा वचन।

राग रामकली।

लालन अब भोर भयो जागो बलिहारी ॥

आस्ताई ॥ घर घर उठि दधि बिलोवें ब्रज की नवनारी ॥ मैं तिहारे काज रखी लौनी धर न्यारी ॥ नारायण वनकूंचलीं धेनुहूं हमारी ॥ १ ॥

समाजी वचन ।

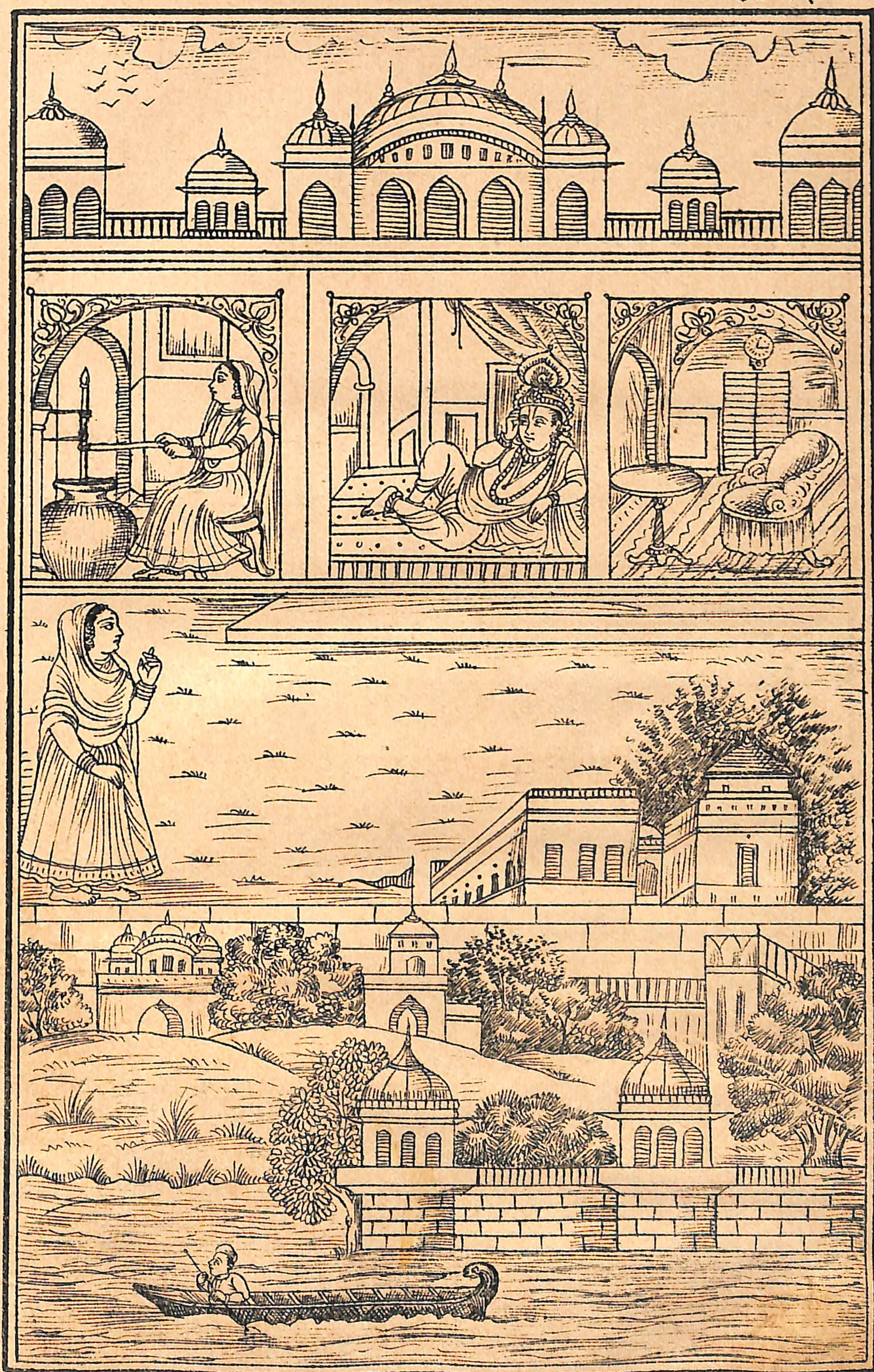
रागखट ।

एक सखी उठि बड़े भोरही नंदराय के भवन गई ॥ आस्ताई ॥ ताही समय जगे मनमोहन, आलस बस मुख क्रांति नई ॥ नैन उनींदे झूमत पलकें शिथिल वचन अति मोद मई ॥ नारायण यह छबि लखि ग्वालिन, मनों भीत को चित्र भई ॥ २ ॥

सखी वचन नवगोपवधू प्रति ।

ध्रुपद राग भैरों ।

आज सखी प्रात काल, दृग मीडत जगे लाल, रूप के विशाल, सिंधु गुणन के जहाज ॥ आस्ताई ॥ कुंडल सों उरझी माल, मुख पर अलकन को जाल, भई मैं निहाल, निरखि शोभा को समाज ॥ आलस वश झुकत ग्रीव, कबहूं अँगड़ाई लेत, उपमा सम देत मोंहिं आवत है लाज ॥ नारायण यशुमति ढिग हींतो गई बात कहन, याही म भयेरी, एक पंथ दोऊ काज ॥ ३ ॥



वार्त्तिक।

नवगोपवधू बोली हे सखी ! उनकूं देखिके मेरे नेत्र कब सफल होंयगे, थोरी देर पीछे लालजीहू बाहर पधारे ॥ ४ ॥

समाजी वचन।

कालिंगड़ा।

भवन ते निकसे नंदकुमार ॥ आस्ताई ॥ पचरंगी चीरा शिर सोहै, चितवन पै बलिहार ॥ कानन में-मुतियन को चौकड़ा, गल फूलन को हार ॥ नारायण जे आपही सुन्दर, तिनकूं कहा श्रृंगार ॥ ५ ॥

समाजी वचन।

दोहा।

गोपवधू के भवन ढिग, जब आये गोपाल।
तब बोली निज सखी सों, गोपवधूटी बाल ॥ ६ ॥

गोपवधू वचन।

राग खट।

देखि सखी नव छैल छबीलौ, प्रात समय इतसों को आवै ॥आस्ताई॥ कमल समान बड़े दृग जाके श्याम सलौना मृदु मुसिकयावै ॥ जाकी सुन्दरता जग बरनत, मुख शोभा लखि चन्द्र लजावै ॥ नारा-

यण यह किधों वही है, जो यशुमति को कुँवर कहावै ॥ ७ ॥

सखी वचन ।

राग विभास ।

यही मोहन जिन मोही ब्रजबाला ॥ आस्ताई ॥ गजगति चलत बजत पग नूपुर, उर सोहै वनमाला॥ कमल फिरावत मृदु मुसक्यावत, बोलत बचन रसाला॥श्यामवरण लखि लजत नीलमणि, पंकज मेघ तमाला ॥ नैन सैन करि हरत मैन मन, मुख द्युति चन्द्र विशाला ॥ नारायण प्रगट्यो जादूगर, नंदराय को लाला ॥ ८ ॥

सखी वचन लालजी प्रति ।

दोहा ।

सुनो लाल इक बृजवधू,धरत तिहारो ध्यान ।
ताहि तनक दीजै दरस, निज दासी कर जान॥९॥

वार्त्तिक ।

जब श्रीलालजी वा गोपवधूके ढिगजाय के बतरायवे लगे, ताही समय वाने अपनी सासकूं आवतो देख्यो; तब इत सों लाजहू प्रगट हो आई, सखी तो लाज के आधीन ह्वै गई, वाकी सास निकट आयके

इनसों कहवे लगी, क्योंरे नंदके हमारे क्यों आयो है, तबआप बोले, अरी हमारी पतंग टूटि के आय परी है ताय लैवे आये हैं, ऐसे बात बनायके निज भवन में चले आये, ता पीछे गोपवधू अति व्याकुल होयके सखी सों कहिवे लगी॥ १० ॥

ध्रुपद राग भैरों ।

आज सखी प्रात काल, मेरे गृह आये लाल, भई मैं निहाल, वाके रूपको निहाररी ॥आस्ताई॥ पूरण शशि सम कपोल, तिन पै कुंडल किलोल, मधुर मधुर सुनिके बोल, रही ना समाररी ॥ नाक में बुलाक सो है, चितवन चितही को मोहै, अद्भुत शृंगार चरण, नूपुर झनकाररी॥नारायण हों तोउठी, मिलन इतसों आईलाज, मनकी मनही में रही, करन सखी प्याररी ॥ ११ ॥

वार्तिक ।

हे सखी ! अब तू कछू ऐसो उपाय बताय जासों वा चितचोर साँवरे कूं देखूं ॥ १२ ॥

राग खम्माच का ज़िला ।

साँवरे के देखे बिन परत न चैन ॥ आस्ताई ॥ छिन छिन में अकुलात सखीरी, रूप के प्यासे

नैन ॥ वह शोभा वह मंद हँसनवर, वह तिरछी दृग सैन ॥ नारायण करिगयो बावरी, मधुर सुनायके बैन ॥ १३ ॥

वार्तिक।

तब वा सखीने एक उपाय बतायो कि या मिस यशुमति गृह जायके प्राणप्यारे को निरखि आ १४

समाजी वचन ।

दोहा।

मिस बनायके ब्रज वधू, गई यशोमति तीर ।
निरखिलालको सुखभयो, मिटी विरहकी पीर १५

गोपवधू वचन यशोदा प्रति ।

कालिंगड़ा।

रानी मैं कछू बूझिवे आई ॥ आस्ताई ॥ प्रात समय काहू के मुखते अचरजसी चरचा सुनिपाई॥ तोमैं कहूं जो तू सुनिके पुनि, निजमन बिलग न मानै माई ॥ द्वैबापनको सुत भयो कैसे, तेरो छबि निधि कुँवर कन्हाई ॥ हँसि बोली यशुमति सुनि बहना, तुमही जानत यह चतुराई ॥ नारायण याही मिस ग्वालिन, निरखतनंदनँदनसुखदाई १६

दोहा।

ये लीला गोपाल की, जो गावे दिन रैन ।

अन्त समय सदगति मिलै, जीवत पावे चैन ॥ १७ ॥
इति श्रीलालजीकी उत्थापन लीला श्रीनारायण स्वामीजी कृत संपूर्णा ॥ ४ ॥

अथ पनघट लीला प्रारंभः।

समाजी वचन।

दोहा।

पनघट की लीला नई, कहूं प्रेम सों गाय।
नारायण जे रसिकजन, श्रवण करें चितलाय ॥ १ ॥

दोहा।

निज निज घट लै ब्रजवधू, गई लाड़िली पास।
यमुना जल भरिवे चलो, लली रूपकी रास ॥ २ ॥

वार्तिक।

तब श्रीजीने कही हे सखी ! हमने अभी काहूके मुखते सुनी है कि, वहां तौ लालजी महाराज ठाढ़े हैं ॥ ३ ॥

पुनि श्रीजी वचन सखीप्रति।

राग देश सोरठ।

कैसे जाऊंरी बीर, घट भरिवे नीर, ठाढ़ो यमुना तीर, सामरौ अहीर, मारै दृगन तीर, हरै सुधि शरीर ॥ आस्ताई ॥ नित यही चित में चिंता समाज

ब्रजराज सों कैसे बचैगी लाज, जिया कांपै आज, नाहिं धरत धीर ॥ वाको रूप है कै कोऊ जादू यंत्र कैधों नारायण वशीकरण मंत्र, कैधों तंत्र कै पलही में, करै फ़कीर ॥ ४ ॥

सखी वचन श्रीजी प्रति।

वार्तिक।

सखी बोली, हे प्यारी! आप तो पहलेही सों इतनी डरपो हो पधारो तो सही ॥ ५ ॥

समाजी वचन।

राग खट।

प्रात समय ब्रजनारि सकल मिल, घट यमुना जल भरन चलीं ॥ आस्ताई ॥ ओरपास तारागण सजनी, बीच चंद मुख भानु लली ॥ पग नूपुर कटि किंकिन बाजैं, पूरि रही धुनि कुंज गली ॥ इत उत तकत चलत नारायण, आय न जावे कहुं श्याम छली॥६॥

सखी वचन सखी प्रति।

राग भैरों एकताला।

देख सखी नंदलाल सन्मुख ते आवै॥आस्ताई ॥ संग सखा भीर लिये बाँसुरी बजावै॥ आज याहि

समझौ मिल, भलें लाज जावै॥ नारायण नितप्रति कौन झगरो, नहिं भावै॥ ७॥

लालजी वचन सखी प्रति।

राग मल्हार।

ठाड़ी रहौ ब्रजनारि सुन्दर बर॥ आस्ताई॥ रूप की घटा छटा नई छबि की, जाहि देखि मोहैं नारी नर॥ अति चंचल दृग मीन लजत लखि, कानन में सोहै मुतियन लर॥ नारायण हमसों बिन बूझें, कहां चलीं गागरिया शीस धर॥ ८॥

सखी वचन लालजी प्रति।

दादरा राग आसावरी।

गैल जिन रोकौ जोबन मदमाते॥ आस्ताई॥
इन बातन शोभा नहिं पावौ, लाजकी गारी गाते॥
यहां हमें गुरुजन कौ डर है, देखत आवत जाते॥
नारायण कहूं अन्त जो होते, तौ याको फल पाते९॥

लालजी वचन सखी प्रति।

कान्हरा बागेसरी।

गोरी देखिवे में भोरी अलछल में प्रवीन॥आस्ताई॥ रतिछबि निन्दित वदन अति सकुचन, भूषण वसन तन वय की नवीन॥ कुन्दकली दशन विद्रुम से,

अधर लाल दृगन की शोभा लखि लाजें मृग मीन ।। नेक हँसि हेरि मुख फेरि नारायण, हमसों चतुर कियो अपने अधीन ।। १० ।।

सखी वचन लालजी प्रति ।

राग ईमन धीमा ताल ।

मेरी डगर न रोको नन्दलाल ।। आस्ताई ।। तुम अपने जोबन के मद में, करत फिरत नितप्रति कुचाल ।। महा ढीठ बरजो नाहिं मानत, नये नये तोहि उपजें ख्याल ।। नारायण तुम निपट अनीती, प्रगट भये ब्रज आज काल ।। ११ ।।

लालजी वचन सखी प्रति ।

माँडकी सूरत ।

क्यों जल भरिबे आई इन घाटन पनिहारी ।। आस्ताई ।। भोरो भोरो वदन मदन मन मोहै, बातें करत प्यारी प्यारी ।। अंग अंग मणि भूषण सोहैं, रूप की खिली फुलवारी ।। मधुर मधुर अधरन मुसिकावत, मन हरिबे की बिचारी ।। जित चितवत तित करत है घायल, तो सम कौन शिकारी ।। नारायण जिन देर लगावो, देओ जगात हमारी ।। १२ ।।

सखी वचन लालजी प्रति ।

झंझोटीका ज़िला ।

जिन मग रोको नन्दकिशोर ॥ आस्ताई ॥ तोहि उरझन की बानि परी है साँझ तकत नहिं भोर॥देर लगत मोहि सास रिसावै, तुमैं छैल नित रारसुहावै, इन कुचाल कछु हाथ न आवै, गागरिया दई फोर ॥ तुम अति चंचल छैल विहारी, कैसे कूख रखे महँतारी, यह अचरज मोको है भारी, घर घर तेरो शोर ॥ नारायण अब क्यों इतरावो, भई सो भईन बात बढ़ावो, ताही कूं तुम आँखि दिखावो, जो होय तेरी बन्दोर ॥ १३ ॥

समाजी वचन ।

दोहा ।

झटकि लाल ब्रजबालकर, तोरि मोतियन हार ।
बोले सुनि चंचल चपल, कहा बढ़ावत रार ॥१४॥

सखी वचन ।

राग भूपाली ।

नन्दलाल कुचाल न कर इतनी ॥ आस्ताई ॥ देखत हैं मग नारि नगरकी, और सखी संग की

जितनी॥जासो कोऊ बुरो नहिं माने, बात कहो मुख सों तितनी ॥ नारायण जापै इतरावो, सो ठकुराई है कितनी ॥ १५ ॥

वार्त्तिक ।

फिर सखी आपसमें कहिबे लगीं चलौरी बीर याकी मैया सों चलिके कहो, यह यों नहीं मानेगो, तब आप बोले तुम भलेही जाय कहो, मेरो कोई कहा करेगो, ऐसे कहिके चले आये, अरु नागरी भेष धरिके मारगमें ठाढ़े ह्वै रहे, जब थोरी देर पीछे सखी हू आय पहुँचीं, अरु इनको नई रूप मनोहर निरखिके बूझिवे लगीं, अरी साँवरी सुकुमारी तू यहां कैसे ठाढ़ीहै,तब आप बोले, अरी बीर आज मैं भोरही यमुना जल भरिवे गई हती, तहां नन्दके ढोटा ने मोसों कैसी कैसी कुचाल करी हैं ॥ १६ ॥

नवनागरी वचन सबसों ।

राग भूपाली ।

लँगर मेरी गागरि फोरि गयो ॥ सखी जाने कहां सों अचक आय लंगर । आस्ताई ॥ नई चँदुरिया चीर चीरकर,निपट निडर पुनिआँखिदिखावै,

देखिबीर अति कोमल बैयां, दोऊ कर पकरि मरोरि गयो ॥ मोसों कहै सुनि एरी सुंदरी, तो समान ब्रज सुघर न कोऊ, नखसिखलों छबि परख निरख मुख, सघन कुंज की ओर गयो ॥ कहां-लग कहों कुचाल ढीठ की, नाम लेत मेरो जिय कांपै, नारायण मैं घनो बरजि रही मुतियन की लर तोर गयो ॥ १७ ॥

कालिंगड़ा।

आज श्याम मेरी गागर फोरी ॥ आस्ताई ॥ गागरि फोरी भला सो तो फोरी, ताहूपै लंगर बहियां मरोरी ॥ लोक लाज कुल रीति मर्यादा, एक साथ उन तृण सम तोरी ॥ आप समान सखा सँग नटखट, कै रोकत मग कै करै चोरी ॥ मैं वाकी कछु मोल लई हूं, मन चाहै सो करै बरजोरी ॥ नारायण सब बदलो लेउंगी, औरन की सम जाने न भोरी ॥ १८ ॥

सखी वचन नवनागरी प्रति।

राग ईमन कल्याण।

यमुनातट काहेको अकेली गई ॥ आस्ताई ॥ रीति भांति नहीं जाने यह की, तू ब्रज आई नई ॥ जो

तेरी उन बैयां मरोरी, गागर फोर दई ॥ याही में भाग समझ नारायण, और न अधिक भई ॥ १९॥

नव नागरि वचन सखी प्रति।

ठुमरी झंझोटी का ज़िला ।

एरी मोहि बांसुरी में नाम लै लै टेरैरी ॥ आस्ताई ॥ एसौरी निलज भयो, जोबन के मद कर सबन के आगे हंसि हेरैरी ॥ निपट निडर मेरो अचरा पकरकरि, सिरसों गगरिया गेरैरी ॥ नगर नारि निरखत नारायण, डगर बगर नित घेरैरी ॥ २० ॥

वार्तिक ।

अरी बीर मैं वाकी कौन कौन सी कुचाल कहूं ॥२१॥

राग ईमन ।

कलको छोहरा ढीठ लंगर मोहि गारियां दैदै जात॥ आस्ताई ॥ संग की सखी सुनत सब ठाढ़ी, नेक नहीं सकुचात ॥ ज्यों ज्यों बरजतहूं मैं वाको, त्यों त्यों अति इतरात ॥ नारायण ब्रज में रहूं कैसे, जहां नित प्रति उतपात ॥ २२ ॥

वार्तिक ।

हेसखी ! अब ब्रज में कैसे बसूं,सखी ने कही अरी

डरै क्यों, चलि यशोदापै कहि आवें, फिरवा ढीठ सों निबट लैंगी ॥ २३ ॥

दोहा।

नारायण जोगी जिसे, धरत ध्यान दिन रैन।
ताहि ब्रजबधू संगलै; चलीं उराम्हों दैन ॥ २४ ॥

नवनागिरि वचन यशोदा प्रति।

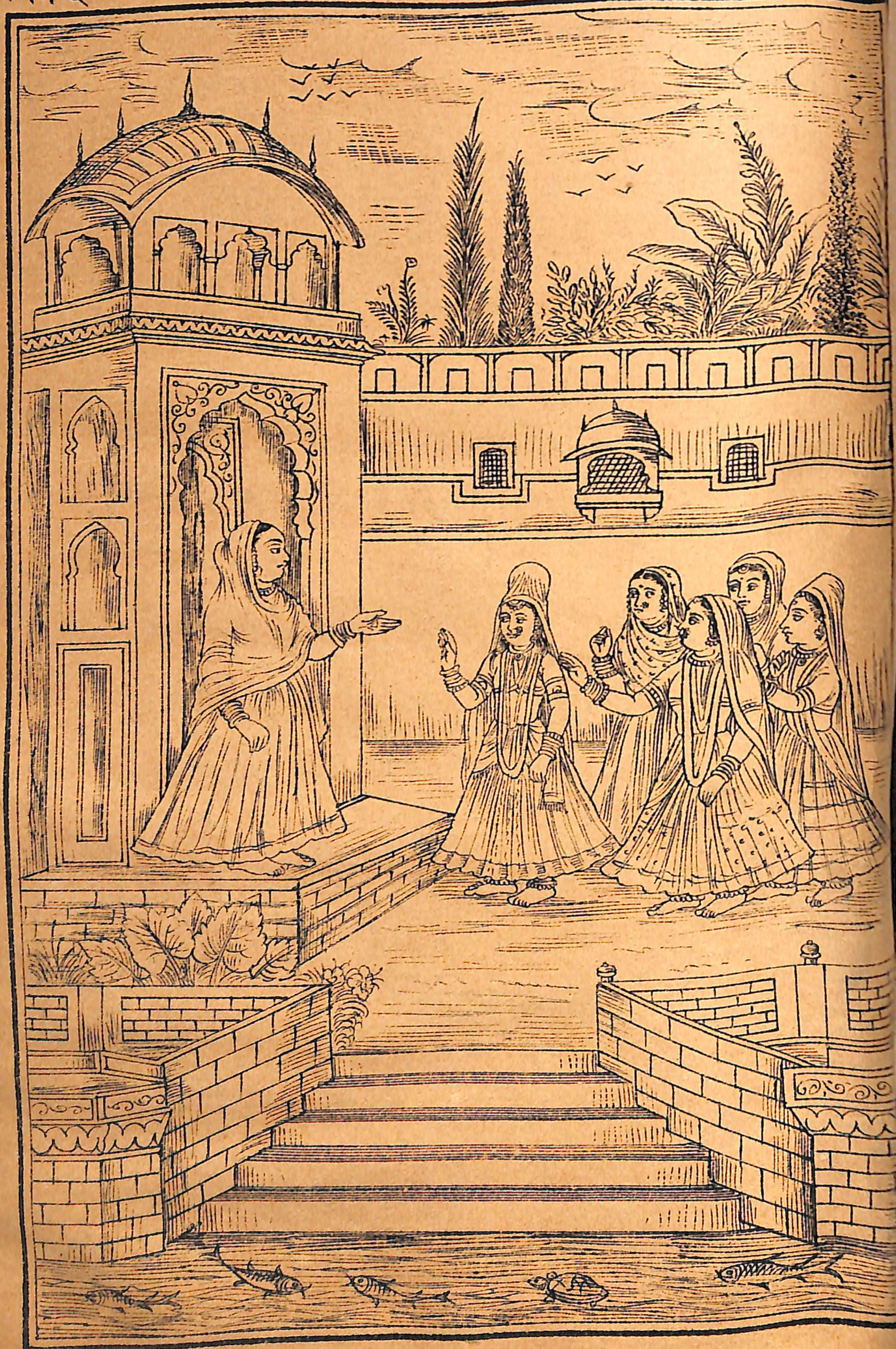
रेखता।

सुनिले यशोदा रानी, तू लाल की बड़ाई ॥ सब लोक लाज वाने, यमुना में धोय बहाई ॥ भोरैंही मैं गई जो, जल भरिवे काज भैना॥ पीछे सों आय अचानक, उन मूंदे मेरे नैना ॥ डरपी मैं हाय को है, तब बोले टेढ़े बैना ॥ हों तौ रही अकेली, वा संग ग्वाल सैना ॥ तब सबने हो हो करिके, तारी मेरी बजाई ॥ सु० ॥ १ ॥ हँसि हँसिके छैल मोसों, करिवे लगो ठठोली ॥ यह छबि तिहारे मुख की, अब कासों जावे तोली ॥ निरखै कबू बदन कों कबहूं वह छुवै चोली ॥ मैं तो सकुचकी मारी, वासों कछू न बोली ॥ पुनि बहियां मेरी झटकी, गागरि धरनि गिराई ॥ सुनिले० ॥ २ ॥ अँगिया के बंद तोरे, चूँदरि

झड़ाक फारी ॥ दुलरी के निरखिवे कों, गलबैह्यां मेरे डारी ॥ यह सब कुचाल देखें, मग ठाढ़े पुरुष नारी ॥ ताहू पै नाम मेरो, लैकर सुनावै गारी ॥ गुरुजन में मेरी वाने, या विधि करी हँसाई ॥ सुनिले० ॥ ३ ॥ ज्यों ज्यों कहूं मैं हट रे, त्यों त्योंही दूनो अटकै ॥ मुसुक्यावै दृग मिलावै, भ्रकुटी चलावै मटकै ॥ कर करके सैनाबैनी, तन परसे चीर झटकै ॥ अब और कहा कहूं मैं, गलहार हैके लटकै ॥ एक साथ वाने ऐसी पकरी निलज्जताई ॥ सुनिले० ॥ ४ ॥ कबहूं कहे बतारी, तू क्यों अकेली आई ॥ कै घरमें तेरे पति की, तोसों भई लराई ॥ तू चली भवन हमारे, करि मोसों मित्रताई ॥ बिधि-नाने तेरी मेरी, जोरी भली बनाई ॥ नारायण वाकी बातें, सुनिके मैं अति लजाई ॥ सुनिले० ॥ ५ ॥ २५ ॥

वार्तिक ।

तब नंदरानीजी ने कही अरी सखी मेरो लाल तौ जाने कौनसे वनमें गैया चरावत होयगो, तू क्यों वाको वृथा दोष लगावै । तब सांवरी बोली अरी तू वाके गुण कहा जाने कहूं यहांही ऊधम करत डो-लत होयगो, जो तू न मानें तौ हम दिखायभी देंगी। इतनी कहके पुनि भवनते बाहर आयके आपसमें



कहिवे लगीं, क्यों बीर ! अब यशोदा कूं कैसे सांच आवै, जब सांवरी बोली, मोकूं लालजी बनायके दूरिसों यशोदा कूं दिखाय दीजो कि देखले, अब तिहारो श्यामसुंदर कौनसे वन में गऊ चराय रह्यो है, तब सबने कही हंबै सखी यही ठीक है, फिर सांवरीने ओट करिके जब अपनो निज स्वरूप प्रगट कियो, तब एक संग सब सखी अचरज होयके निहारवे लगीं, न सांवरी कहत बने न सांवरो कहत बने, फिर हँसि हँसिके कहिबे लगीं, धन्य हौ लालजी महाराज अपनी मैया हू सों न चूके, तब आप बोले, अरी सखी ! कहूं चतुरहू चूके हैं? ॥ २६ ॥

दोहा।

ये लीला यदुनाथ की, जो सुनिहैं चितलाय।
नारायण ताके सदा, श्रीपति रहे सहाय ॥ २७॥

इति श्रीपनघटलीला श्रीनारायण स्वामीजी
कृत सम्पूर्णा ॥ ८ ॥

अथ नवलसखीकी दानलीला प्रारंभ ।

समाजी वचन।

दोहा।

धनि ब्रजवासी नारि नर, धनि वृंदावन धाम ॥

नारायण सुरपति जिन्हें, निशि दिन करतप्रणाम १

दोहा ।

प्रात समय ब्रज नागरी, सजि अपनो शृंगार ॥
गोरस बेचन को चलीं, गजगामिनि सुकुमार ॥ २ ॥

दोहा ।

मग में ठाढ़ो साँवरो, रोकि सबन की गैल ॥
रूपसिंधु अरविन्द दृग, रसिक शिरोमणि छैल ३ ॥

दोहा ।

जब पहुँची ढिग आयके, मृगनैनी वरबाम ॥
तिनहिं देखि मुसक्यायके, बोले सुन्दर श्याम ॥ ४ ॥

दोहा ।

कहां जाउ ठाढ़ी रहौ, तुम्हें रूप अभिमान ॥
अब आगे पग जिन धरौ, बिना दिये दधि दान ५ ॥

दोहा ।

सुनत वचन नँदलालके, हँसीं सकल ब्रजबाल ।
देखौरी अब साँवरो, नई चलत है चाल ॥ ६ ॥

दोहा ।

एक सखी की भुज पकरि, हँसि बोले ब्रजराज ।
प्यारी तू आई नई, दही बेंचिवे आज ॥ ७ ॥

लालजी वचन नवलसखी प्रति।

ठुमरी खम्माच का ज़िला।

आज तू नवेली दधि बेंचवे कूं आईरी॥आस्ताई॥ जोबन की उमँग सों झूमत चलत, गजमत्तहू की गति तैं लजाईरी॥ नैनन के बान भौंह तानके कमान कहौं, कौनपै यह करी है चढ़ाईरी॥ रूप की निकाई सुघराई नारायण, कहाँलग करूं मैं बड़ाईरी॥ ८॥

बड़ी सखी वचन लालजी प्रति।

कालिंगड़ा।

लाल तुम काहेको इतरावो॥आस्ताई॥मोरपंख उरसे पगिया में, यापै बड़े कहावो॥ जब तें प्रगट भये तुम ब्रजमें, घर घर धूम मचावो॥ माखन छाँछ चुराय हमारी, मिल गोपन सँग पावो॥ फटी पुरानी कामरि ओढौ, वन वन धेनु चरावो॥ नारायण फिर कौन भरोसे, एते गाल बजावो॥ ९॥

लालजी वचन नई सखी प्रति।

दादरा आड़ा कालिंगड़ा।

हमारो दान देउ ब्रजनारी ॥ आस्ताई ॥ मद माति गजगामिनि डोलै, तू दधि बेचनहारी॥ रूप तोहिं बिधनाने दीनों, ज्यों चंदा उजियारी॥मटुकी

सीस कटीले नैना, मुतियन मांग सँवारी ॥ हार हमेल गरे में राजैं, अलके घूंघर वारी ॥ या ब्रजमें जेती सुंदरि हैं, सब हम देखी भारी ॥ नारायण तेरी या छबि पै, कान्हजाय बलिहारी ॥ १० ॥

बड़ी सखी वचन ।

कालिंगड़ा ।

मेरी बात सुनो यदुराई ॥ आस्ताई ॥ याकी दधि अबहीं मति लूटौ, तुमको नंद दुहाई ॥ याकी सास भोरही याको, भवन हमारे लाई ॥ गोरस बेंचन याहि सिखावौ, यों कहि संग पठाई ॥ नई वधू पुनि निपट ही भोरी, नहिं जानत चतुराई ॥ तासों याहि आज मति रोकौ, अबहीं गौने आई ॥ लाज करत मुख घूंघट ओढ़ें, तुम्हें देखि सकुचाई ॥ नारायण हठ तजो सांवरे, निरखत लोग लुगाई ॥ ११ ॥

लालजीको वचन सखी प्रति ।

झंझोटी का ज़िला ।

सखी तुम नेक तौ रूप दिखावौ ॥ आस्ताई ॥ घूंघट पट मुख ओट करौ क्यों, याहि तनक सरकावौ ॥ ब्रजमें लाज करै सो बौरी, हँसि हँसिके बतरावो ॥ नारायण हम दोऊ बरोबर, क्यों इतनी सकुचावो ॥ १२ ॥



राग झंझोटी।

सखी तुम मेरीओर क्यों न हेरो ॥ आस्ताई ॥ बरसाने में पीहर तेरो, कै कोऊ गांव गमेरो ॥ तू मोसों इतनी क्यों सकुचत, मैं हूं देवर तेरो ॥ घूंघट खोलि एरी नवनागरि, दान दीजिये मेरो ॥ लाज करो गोरस क्यों बेचौ, घर घर सांझ सबेरो ॥ नारायण नित कुंजगलिन में, रहै कान्ह को डेरो॥१३॥

सखी वचन लालजी प्रति।

राग झंझोटी।

याको घूँघट पट न उघारो॥आस्ताई॥परत्रिय देखि अनीति करौ तुम, नई नई रीति निकारो ॥ बड़े महरि की पुत्रबधू है, नेक तौ बात बिचारो ॥ भले बुरे की लाज न तुमको, मन भावति करिपारो॥ दधि गोरस पै दान लगावत, मानों राज तिहारो ॥ नारायण है कौन हमारे, मग को रोकनवारो ॥१४॥

वार्त्तिक।

लालजी बोले अरी सखी ! तू इतनो क्यों हाथ नचाय रही है, घूंघट तो हम वाको उघारें कछु तिहारो तौ नाहीं उघारें ॥ १५ ॥

दूतीकी चाल।

तू इतनो क्यों हाथ नचावत, तेरोकछू कोई घूंघट

खोलै ॥ जो ऐसी कुल लाजवती तू, तौ क्यों भोरही घर घर डोलै ॥ जोबन मांहि फिरै मदमाती, आप समान न औरको तोलै, नारायण दधि बेंचनहार तू, नेक न बात बिचारिके बोलै ॥ १६ ॥

सखी वचन ।

बरवा दूती की चाल ।

आप भले गुणवान बनों तुम, औरन में अति खोट बतावो ॥ माखन चोर कहावत हौ नित, तौऊ नहीं मनमाहिं लजावो ॥ रतन जड़े आभूषण पहरें, छाँछ लिये कर को फैलावो ॥ नारायण सब लोग हँसेंगे, प्रथम उतारि इन्हें धरि आवो ॥ १७ ॥

लालजी वचन सखी प्रति ।

दोहा ।

दधि जोबन नवरूप को, जब लग देउ न दान ॥
तब लग जान न पाउगी, कोटिक करो सयान १८

सखी वचन लालजी प्रति ।

राग भैरवी ।

मारग दीजै मोहन प्यारे ॥ आस्ताई ॥ इन बातन शोभा नहिं पावो, तुम हौ राजदुलारे ॥ बहुत हँसी जिन करौ सांवरे, सुनिहे कंत हमारे ॥ तुमरो कोई कछू न करैगो, हमैं मूंदेंगे तारे ॥ देखे सुने

नहीं हम कबहूं, तुम सम झगरन हारे ॥ नारायण क्यों रारि बढ़ावो, रे द्वै बापनवारे ॥ १९ ॥

लालजी वचन सखी प्रति।

कालिंगड़ा।

ग्वालिन दान देत इठलावै ॥ आस्ताई ॥ नित प्रति ही तू या मारग ह्वै, क्यों दधि बेंचन जावै ॥ हमें कहत तू द्वै बापन को, अपने क्यों न गिनावै ॥ नारायण देओ कोटिक ताने, कर नहिं छूटन पावै ॥ २० ॥

सखी वचन लालजी प्रति।

राग मल्हार।

छैल गैल मति रोकै तू हमारी रे ॥ आस्ताई ॥ चाल कुचाल चलौ जिन चंचल, चरचा करें सब पुर नर नारीरे ॥ हम सुकुमार ठाढ़ी काँपत हैं, शिर पर दधि की मटुकिया भारीरे ॥ नारायण ब्रज कौन बसैगो, ऐसी अनीति जो करनी बिचारीरे ॥२१॥

लालजी वचन सखी प्रति।

मल्हार तीन ताला।

जोबन की मदमाती डोलै री गुजरिया ॥ आस्ताई॥ अंग अंग जोबन की उठत तरंग नई, नैना कजरारे भौहें तिरछी नजरिया ॥ हाथन में चूरी नकबेसर करनफूल, मुंदरी ललित छबि देत

अँगुरिया ॥ अब लों तोसी नहिं देखी नारायण, दधि की बेंचनहारी नंदकी नगरिया ॥ २२ ॥

सखी वचन लालजी प्रति ।

आड़ा कालिंगड़ा ।

छाँड़ौ मेरी गैल न तौ गारी मैं सुनाऊंगी ॥ आस्ताई॥औरों के भूलेखे कहूं मोसों जिन अटको, अभी यशुमति पै पकरि लै जाऊंगी ॥ पहलेही सों अपनी बड़ाई कहा करूं मैं, देखियो तौ कैसे तुम्हें नाच नचाऊंगी ॥ जो मैं तोहिं सूधो न बनाऊं नारायण, तौ मैं निज बापकी न आज सों कहाऊंगी २३॥

लालजी वचन सखी प्रति ।

बरवै पीलूका ज़िला ।

पहले मेरो दान चुकारी, पीछे बतराइयो प्यारी॥ आस्ताई ॥ तो समान तुहि देत दिखाई, नवजोबन नव सुंदरताई, और कहां लों करों बड़ाई मोहन को मन मोहनहारी ॥ अति बाँके हैं नैन तिहारे, सान धरे पैने अनियारे, जिन हमसे घायल करि डारे, इन समान नहिं बाण कटारी ॥ नारायण जिन भीर लगावो, देउ दान अपने घर जावो, क्यों मटुकी चौपट गिरवावो, देख हँसेंगे पुर नर नारी ॥ २४ ॥

सखी वचन सखी प्रति।

कान्हड़ा बागेसरी।

जानेदैरी जानेदै तु यासों मति बोलै॥आस्ताई॥ यह लंगर निबट्यो भयो ब्रजमें, डगर चलत छबि तोलै॥ जाहि न लाज सकुच गुरुजन की, हँसि हँसि घूंघट खोलै॥ नारायण यह दृगन को रोगी, पर त्रिय झाँकत डोलै॥ २५॥

अपर सखी वचन सखी प्रति।

दरबारी कान्हड़ा।

सब मिलि चलो नन्दगृह माई॥ आस्ताई॥ इनहीं के सुत भयो अनोखो, नई नई रीतिचलाई॥ मांगत दान न कान काहू की, ऐसी कहा लरि-काई॥ नारायण या ग्राम वास करि, अब हम बहुत अघाई॥ २६॥

लालजी वचन सबसों।

दोहा।

अहो नवेली गुण भरी, धरी मटुकिया शीस।
दधि जोबन को दान हम, लेंगे बिस्वेबीस॥२७॥

बडी सखी वचन नवलसखी प्रति।

दोहा।

अरी सुहागनि सुंदरी, नवदुलहिन सुकमार।

हठ नहिं छाँड़त साँवरो, घूँघट नेक उघार॥२८॥

समाजी वचन ।

दोहा ।

घूंघट पट कछु खोलिके, मुसक्याई ब्रजबाल ।
देखि मनोहर रूप को, मगन भये नँदलाल ॥२९॥

सखी वचन लालजी प्रति ।

कालिंगड़ा ।

अपनो दान लेउ नँदलाल ॥ आस्ताई ॥ रस के भरे वचन अति अटपट, कहन लगी ब्रजबाल ॥ दोऊ ओर दृग सों दृग लागे, हियमें प्रेमविशाल ॥ नारायण या विधि सो हँसि, हँसिकर चुकवत गोपाल ॥ ३० ॥

वार्त्तिक ।

सखी बोली अजी लालजी महाराज ! आप तौ दान मांगते रहे, फिर क्यों न लियो: तब लालजी बोले अरीसखी ! दधि मांगिवे को तौ हमारो मिस रह्यो यह रूप माधुरी निरखिके सबदान भरिपायो॥

दोहा ।

ये लीला जो नित सुने, गावें दै दै ताल ।

नारायण तापै कृपा, करें लाड़िलीलाल ॥ ३२ ॥

इति श्रीनवल सखी की दानलीला श्रीनारायण स्वामीजी कृत सम्पूर्णा ॥ ६ ॥

अथ श्रीछद्मदान लीला प्रारंभः ।

समाजी वचन ।

दोहा ।

दधिमटुकी शिर पै धरी, चलीं बेचिवे बाल ॥
नारायण ठाढ़े गली, छैलछली नँदलाल ॥ १ ॥

लालजी वचन ।

खम्माच ।

ठाढ़ी रहौ ठाढ़ी रहौ रूप निधान ॥ आस्ताई ॥
बरजोरी कित जावो दौरी, बिना दिये दधि दान ॥
काहू भाँति उपमा मैं तेरी, कर नाहिं सकत बखान॥
घूंघटमें मुख दमकत ऐसे, ज्यों बादर में भान ॥
हम निजकर मांगत रिसात तुम, भली नहीं यह बा-
न ॥ नारायण तुम आजही आई, नई भई पहँचान ॥

सखी वचन लालजी प्रति ।

ईमन कल्याण ।

मनमोहन मोसों मति अटको ॥ आस्ताई ॥

झटकौ न चीर, मटकौ न छैल, दधि की न गैल मटुकी पटको ॥ जैसे कछु तुम हौ सब जानूं, गुण तुम्हार अब कहा बखानूं, तनक तनक रस काज राजरस, भवन भवन निशि दिन भटको ।। तुम कब के ब्रज में भये दानी, रोकत हो मग नारि बिरानी दधि गोरस की लूट मचाई, तुम्हें न काहू को खटको ॥ नारायण अबहूं कहि मानों, औरन की सम मोहि न जानों, निकसि जायगी सब लँगराई, चलो हटो घर को सटको ॥ ३ ॥

समाजी वचन ।

दोहा ।

झगर झगर बतरात मग, निपट अनोखो छैल ॥
मटुकी फोरी लकुटसों, बिखरगयो दधि गैल ।।४।।

सखी वचन लालजी प्रति ।

मल्हार ।

क्योंरे छैल मेरी मटुकिया पटकी ।। आस्ताई॥ करिके ढिठाई, मग दधि बिखराई, सब चूरी करकाई, सुकुमार बैयां झटकी ॥ अबहीं यशोदा ढिग पकरि लै जाऊं, तोहिं एक न चलैगी तेरी बात, नटखट की ।। बदलो लेउँगी न डरूंगी, नारायण कौनसी गरज मेरी, तोसों अब अटकी।।५

अपर सखी वचन।

दोहा।

तू यासों जीतै नहीं, लोग सुने ह्वै भीर।
जो कछु भई सो भई अब, चलि अपने घर बीर६॥

सखी वचन सखी प्रति।

कालिंगड़ा।

मैं कैसे घर जाऊं मोसों ननँद लरैगी॥ आस्ताई॥ आगेहीं चवाव मेरो करति है निशि दिन, मटुकी के बिन देखें अधिक जरैगी॥ कुटिल कुचाल वाके मन की न थाह परै, नेकही में झूंठ मूठ साख भरैगी॥ याही सों मैं अति घबराऊं नारायण, जानें वो कहा मोपै दूषण धरैगी॥७॥

समाजी वचन।

दोहा।

श्रीदामा को भेष धरि, प्यारी परम सुजान।
प्रीतमके ढिग आयके, या विधि करत बखान॥८॥

कालिंगड़ा।

लाल तोहिं मैया बेगि बुलावै॥ आस्ताई॥ बछरा छूटि गयो है तेरो, पकरन में नाहिं आवै॥मोहिं क-

ह्यो तू जा लिवाय ला, जहां तोहिं खेलत पावै।।नारा-
यण अब चल तू झटपट, नातर गाय चुखावै ।।९।।

वार्तिक ।

लालजी बोले चल सखा, तब सखी बोली, अबतो सखा की हिमायत सों छूटि चले हौ, जब अकेले पाओगे तब समझूंगी, फिर मारगमें प्यारी जी ने बूझी, लालजी तुमने हमको पहँचान्यों, लालजी बोले हे श्रीदामा आज तू कछू भांग पी आयो है, जो ऐसे बूझै, तब श्रीजी हँसिके बोली ।। १० ।।

दोहा ।

हमहूं छल कैसो कियो, लखि न सके गोपाल ।
निरखि लली की नई छबि, पुनि२ हर्षत लाल।।११।।

वार्तिक ।

लालजी बोले बलिहार या भेष पै ।। १२ ।।

दोहा ।

नारायण यह गुप्त रस, श्रवण करै जो कोय ।
याजगमें सुखसोंरहै, अंत समय गति होय।।१३।।

इति श्रीछद्मदान लीला श्रीनारायण स्वामी
जी कृत सम्पूर्णा ।। ७ ।।



अथ देवीपूजनलीला प्रारंभः।

समाजी वचन।

दोहा।

रतनजटित वृन्दाविपिन, सब सुखमांकी खान।
गौर श्याम क्रीड़त जहाँ, मंगल मोद निधान॥१॥

दोहा।

अरुण उदय नवनागरी, कर मज्जन शृंगार।
देवी पूजत प्रेम सों, प्रीतम हित उरधार॥२॥

दोहा।

उतसों नागरि भेष धरि, नंदनँदन बृजराज।
गौरी पूजन मिस चले, प्रिय के छलिबे काज॥३॥

कालिंगड़ा।

नागरि भेष धर्‍यो गिरिधारी॥ आस्ताई॥ तहीं आय पूजत देवीको, जहाँ पूजत वृषभान दुलारी॥ प्रथम ताहि स्नान करावत, अति हितसों लै कंचन झारी॥ पुनि आभूषण पट पहराये, भाल तिलक गल माला डारी॥ धूप दीप नैवेद्य पान धरि, प्रेम सहित आरती उतारी॥ हाथ जोरि कछु बिनती कीनि, हो प्रसन्न गिरिराज कुमारी॥ बूझति कुमरि कहाँ रहौ सजनी, तुम मोहि लगत प्राणते प्यारी॥

नारायण बलिहार चलौ अब, मिलि दोऊ निरखें फुलवारी ॥ ४ ॥

सखी वचन सखी प्रति ।

जौनपुरी टोड़ी ।

आज कौन राधे संग डोलै ॥ आस्ताई ॥ नवयौवन गजगामिनि भामिनि, हरखि निरखि निज छबि को तोलै ॥ श्याम वरण मुखचंद्र प्रकाशित, कबहुँक घूँघट कबहुँक खोलै ॥ नारायण यासों चलि बूझे, जो हम सों यह तनकहुँ बोलै ॥५॥

सखी वचन प्रियाजी प्रति ।

दादरा झंझोटी का ज़िला ।

कहौ प्यारी यह कहां सों आई ॥ आस्ताई ॥ कहा नाम को गाम है याकौ, कौन की है यह जाई ॥ यह हम सों इतनों क्यों सकुचति, कै कछु तुमने सिखाई ॥ नारायण देखी न सुनी हम, नारि ते नारि लजाई ॥ ६ ॥

श्रीजी और सखी वचन परस्पर ।

काफ़ी ।

री मेरी या सजनी सों आजहि भई है चिन्हार॥ आस्ताई॥ देवी पूजिके आई मो संग निरखन को

चित्र १.　　　　पृष्ठ ५६।५७.



फुलवार ॥ मेरे हित इन फूल बीनके ललित बनाये हार ॥ बंदनी करनफूल अरु गजरे, भूषणविविध प्रकार ॥ यह भूषण प्रीतम की रचना, यह वाकी अनुहार ॥ नारायण चाहै मति मानों, है यह नंदकुमार ॥ ७ ॥

श्रीजी वचन।

झंझोटीका ज़िला।

भलोभेष नागरी को बनि आये प्यारे॥आस्ताई॥ पगमें पायल बाजें हाथ गजरारे॥ झूमका किलोल करैं, कानों में नियारे ॥ मोतियों की मांग पर, जाऊं बलिहारे॥ चंद के निकटसोहैं, नेक २ तारे ॥ नैन सैन मीठे बैन, रूप के उजारे ॥ नारायणअंग निरखि, कोटि मदन हारे ॥ ८ ॥

दोहा।

लीला श्यामा श्याम की, दुख भंजन सुखरूप ॥
नारायण जे नित सुने, ते न परे भव कूप ॥ ९ ॥

इति श्रीदेवी:पूजनलीला श्रीनारायणस्वामी कृत सम्पूर्णा ॥९॥

अथ नवदुलहिन लीला प्रारंभः।

समाजी वचन।

दोहा।

भानु नगर में एक ने, सुत को कियो विवाह ॥

नवदुलहिनि आई भवन, भयो परम उत्साह॥१॥

जैजैवंती।

एक के घर नवदुलहिनि आई॥ आस्ताई॥ सो ब्रजनारि लाज वश सोचत, कीरति कुमरि न न्योति पठाई॥ वे अपने मन कहा कहेंगी, इनके भले विवाह सगाइ॥ पांच बतासन के लालच सों, गीतन में काहू न बुलाई॥ एक सखी बैठारि बहू ढिग; भरि थारी पकवान मिठाई॥ नारायण लै चली बाइनों, जहाँ हुती राधे सुखदाई॥ २॥

दुतीकी चाल पै।

जब पहुँची प्यारी के महलन, इन को देखिकुंवरि हरखाई॥ करि आदर बैठारि सबन कूं, कछु विवाह की बात चलाई॥ क्षमा करो यह चूक हमारी, मैं तिहारे नाहिं पहुँचन पाई॥ नारायण गई भूलि काम में, तुमकूं देखि बहुत सकुचाई॥३॥

दुतीकी चाल पै।

राजकुमारि की देखि सुघरता, हरषत सब मिलि करत बड़ाई॥ क्यों न कहौ तुम बचन अमी सम प्रगट भानुकुल की प्रभुताई॥ बोली कुँवरि बहू सँग लाती, तब होती मेरे मन भाई॥ नारायण

हमहूं सब देखत, वाके मुख की सुंदरताई ॥ ४ ॥

समाजी वचन।

दोहा।

आदि अंत लौं जो कछू, बातें भईं रसाल।
भवन द्वार सुनते रहे, रसिया मोहनलाल ॥ ५ ॥

दोहा।

प्यारी के मन की लखी, चलीं सखी बहु लैन।
पग पग में हरषत हियो, घड़ी चार गइरैन ॥ ६ ॥

दोहा।

इत दुलहिनि सुकुमार के, दृगन भरी अलसान।
तनसों बसन उतारि के, सोय रही पट तान ॥ ७ ॥

दोहा।

होनहार जैसी कछू, तैसो लागत योग।
ढिगहू की औंघन लगी, भलो बन्यो संयोग ॥ ८ ॥

दोहा।

रसिक लाल तासों प्रथम, ताके भवन पधार।
दुलहिनि के पट पहरिके, बैठे घूँघट मार ॥ ९ ॥

भजन दरबारी कान्हरा।

दुलहिनि को हरि रूप बनायो ॥ आस्ताई ॥ लहँ
गा पहरि ओढ़ि चूँदरिया, घूंघट पट मुख पै लटका

यो ॥ ज्यों के त्यों बैठे बनठनके, नख सिख लों निज बदन दुरायो ॥ सखी आय देखी जब दुलहिनि, ढिग सजनी को ओंघत पायो ॥ कर झकझोरि जगाय ताहि पुनि, हरखत सकल वृत्तान्त सुनायो ॥ नाराय ण बहु के लैवे कूं, भानुकुमरि ने मोहि पठायो ॥ १० ॥

समाजी वचन ।

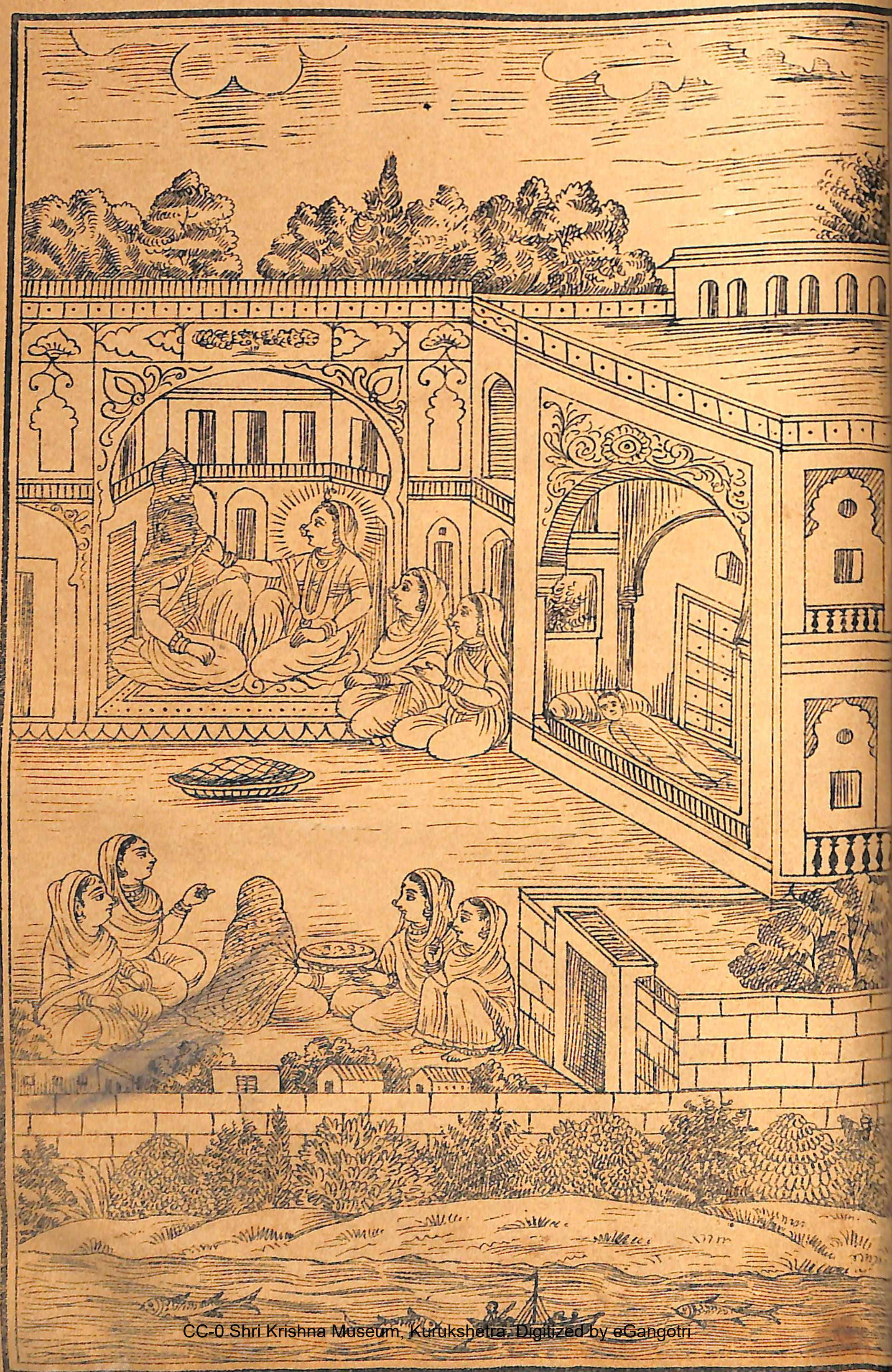
दूतीकी चाल पै ।

संग लिवाय चलीं दुलहिनि को, लै तारो निज भवन लगायो ॥ लखे न कौतुक नंदलाल के, निज बहुको घर में मुँदवायो ॥ आवत देखि बहूको प्यारी, निज मन में अति हर्ष बढ़ायो ॥ नारायण उठिके करि आदर, हाथ पकरि पुनि ढिग बैठायो ॥ ११ ॥

प्रियाजी वचन ।

दूतीकी चाल पै ।

भूषण वसन अमोल मँगाये, रतनन को इक थार भरायो ॥ लै दुलहिनि तू वदन दिखाई, या कारण हम तोहि बुलायो ॥ वस्तु अनेक दई है तोऊ, घूँघट पट नहिं नेक उठायो ॥ नारायण स



हँसत परस्पर, आज बहू ने हमें हरायो ॥ १२ ॥

दूतीकी चालपै।

तब बोली दुलहिनि की सासू, याने तौ इक स्वांग फैलायो ॥ हमकूं बिदा करो श्रीराधे, आप दोऊ कीजै मन भायो ॥ निपट हठीली द्वै बापन की, मानत नहीं बहुत समझायो ॥ नारायण निज भवन गईं सब, फिर याकूं प्यारी ने बुलायो ॥ १३ ॥

दूतीकी चालपै।

ललिता कहै सुनो प्यारीजू, दूसर पहर बजन पै आयो ॥ भली बहू याकी सेवामें, खान पान तुमने बिसरायो ॥ मैं देखूंगी हठ अब याको, याने तौ बहु खेल खिलायो ॥ नारायण यों कहि पट झटक्यो निकसि परयो यशुमति को जायो ॥ १४ ॥

वार्तिक ।

सब हँसि हँसिके कहनलगीं, बलिहार या साँवरी बहू पै धिर पिछिलौ प्रसंग उनके घर जायवेहूको होयवे लग्यो, ता पीछे सखिनने ब्यारूके थार सजायके आगे लाय धरे ॥ १५ ॥

सोरठ।

ब्यारू करतदोऊ सुकमार॥आस्ताई॥मठरीठौर

जलेबी लाडू, सेव समोसेदार ॥ पूरी लुचई पुआ कचौरी, भाजी विविध प्रकार ॥ अदरख चटनी बरे मुरब्बा, पापर सोंठ अचार ॥ खजला दूध मलाई खुरचन, खिरसा मोहन थार ॥ सीतल जल पुनि पीवत रुचिसों, नारायण बलिहार ॥ १६ ॥

सखी वचन ।

जैजैवंती ।

आज इन होउन पै बलिहारी॥आस्ताई॥नंदलाल रतिपति विशाल छबि, चन्द्रवदन वृषभान दुलारी ॥ बैठे कुंजभवन बतरावत, उपजावत सुख प्रीतम प्यारी ॥ नारायण उपमाँ कहा दीजै, मैं अपने मन बहुत विचारी ॥ १७॥

दोहा ।

तजि कुतर्क जो नित सुनै, यह लीला रस पुंज ।
नारायण ताकूं युगल, वास देत निज कुंज ॥ १८॥

इति श्रीनवदुलहिन लीला श्रीनारायण स्वामीजी कृत सम्पूर्णा ॥ ९ ॥

अथ मानलीला (दोहावली) प्रारंभः ।

सोरठा ।

विनय करूं करजोरि, रसिक जनन के चरण में

नारायण चितडोरि, लगी रहै नित युगल पद ॥ १ ॥

दोहा।

अगणत गण रूपक यमक, इनको मोहि नज्ञान।
गुण तुम्हरी सर्कार के, तासों लीजो मान ॥ २ ॥
एकरैन निज पिया सों, प्रिया मुदित मन होय।
तोते की सुनिके कथा, रही कुँवरि पुनि सोय ॥ ३ ॥
बड़े भोर उठि सेज सों, श्रीब्रजराज कुमार।
स्नान भवनमें न्हाय के, कियो नयो शृंगार ॥ ४ ॥
सुपने में देख्यो लली, लाल और के साथ।
उठि बैठी तब मानकरि, धरिकपोल तर हाथ ॥५॥
भुहें चढ़ी फरके अधर, रोम ठढ़े सब अंग।
मान भूपलै कटक को, चढ़िआयो इक संग ॥ ६ ॥
हँसत न मुखचितवत न दृग, सुनत नहीं कछुकान।
द्वार द्वार पै चौकियां, बैठारी नृपमान ॥ ७ ॥
मनकी गति मनि लखि सखी, ठढ़ी छड़ी लै द्वार।
धोखेंमें आवै न धसि, कपटी नन्दकुमार ॥ ८ ॥
इतसों प्रिय के ढिग चले, प्रीतम परम प्रवीन।
सुरत युद्ध की लालसा, तामें अति लयलीन ॥ ९ ॥
धनुषबाण बरुनी भुहें, मृदु मुसक्यान कटार।
तिरछीचितवनसेल सम, हँसि हेरनतलवार॥ १० ॥
समर साज सबही सजे, अरु शृंगार अनेक।
यह न लखी गढ़ मानने, लियोप्रथमही छेक॥ ११ ॥

शृंगार लालजी ।

दोहा ।

चरण चारु नूपुर सजत, बजत करत जनु गान ।
मन मृग भूलत चौकड़ी, सुनि बरचे की तान ॥१२॥
रतन जड़े तिनपै कड़े, मनो गढ़े रतिनाथ ।
बड़े कड़े मन के निरखि, लै मन हाथों हाथ ॥ १३ ॥
भई न पटतर लाल की, रवि शशि हिये लजाय ।
सकुच सहित बनके कड़े, पड़ेचरण में आय ॥१४॥
कटि नटवर की निरखि दृग, चौंधत मुदित निमेष ।
क्षुद्र भाग कब सकत हैं, क्षुद्र घंटिका देख ॥ १५ ॥
कर कंकण मणि जटित को, हटत आंख कब देख ।
मुँदरी कह मुँदरी पलक, दृष्टि लगावत पेख ॥ १६॥
श्याम वरण चित हरण के, हाथन पै हथफूल ।
जिन्हें तके मन भूलि के, फेर न भूलै भूल ॥ १७ ॥
पहुँची तक पहुँची नहीं, जिनकी सुरत विशाल ।
बंद बंद सों बाजुवन, बाँधि लई तत्काल ॥ १८ ॥
हिये हार गये हार तक, निरखनहार विहार ।
उपमा कहत बनी नहीं, रहे निहार निहार ॥ १९ ॥
नाक बुलाक सुहावनो, कुंडल लोल कपोल ।
नख शिख लों शृंगारवर, जाको तोल न मोल ॥२०॥
मुकुटमणी के शीस पै, मुकुटमणी छबि देत

कलँगी कल कब लैन दे, बरबस मन हरि लेत॥२१॥
बँधे पेच के पेच बर, पेच पेच में पेच।
फिर निकसे कब पड़ै मन, ऐसे पेच कुपेच॥२२॥
केश बेश शोभा बनी, को करि सके बखान।
घुँघरारे कारे सघन, चिकने कान प्रमान॥२३॥
कोमल अमल पुशाक बर, चुस्त चुनी सजि अंग।
जाकी छबि निरखत गयो, निज छबि भूल अनंग२४
बागा जिन समझौ इसे, बाग लाल अनुकूल।
बड़े भाग या बाग के, जामें लालाफूल॥२५॥
बिँधा न जो या रूप को, लखि कछु रहा सुचेत।
नैन चोट सों ओट ली, वचन वचन कब देत॥२६॥
झूमत चलत मतंग गति, कबहुँ ठिठक ठहरात।
मनों मदन मद पान करि, भरि उमंगमें जात॥२७॥
अधर मधुर हँसि हरत मन, कर बर कमल फिरात।
भवन गवन चाहेंकियो, रोक दिये कित जात॥२८॥

सखी वचन लालजी प्रति।

भले कान्ह अभिमान मन, ठान न मो सम आन।
मानसमाननमानजिहिं, मिल्योआजसन्मान २९॥
ठढ़े रहौ न कहौ अहो, कहां चले रस खान।
जाके मान गुमान तुम, कियो मान सच मान॥३०॥

कवि वचन।

सुनत सुन्न चितवत चकित, सोचत चित चितचोर।
सुपन तकौ कै जाग तौ, भलो भयो भ्रम भोर॥ ३१॥
घबराये सुधि बुधि उड़ी, थरहर काँपत अंग।
पानी मद को चढ़्यौ जो, उतरि गयो इकसंग॥ ३२॥
अहो दई कैसी भई, कही कहा इन बात।
प्यारी प्यार बिसारी के, मान कियो क्यों प्रात ३३॥

लालजी वचन सखी प्रति।

सखी तोहि सों सांच कहि, सांची है कै झूंठ।
कहूं रूठ को नाम सुनि, सांच न जावें रूठ॥ ३४॥
रैन तोहि सपनो भयो, कै तू आई देख।
अथवा अपनी ओर ते, पढ़त मीन अरु मेख॥ ३५॥

सखी वचन लालजी प्रति।

सुनत हँसी हरि को हँसी, हँसी! न और प्रकार।
अभी परैगी एलला, झूंठ सांच की सार॥ ३६॥

कवि वचन।

तब मानी मन लाल शुक, सांच कहत ब्रजनार।
बिरह जाल मोपै दियो, मान शिकारी डार॥ ३७॥

लालजी वचन।

पुनि बोले भोलेवदन, सो उपाय तू ठान।
जाविधि पावै मान अब, भरी सभाअपमान॥ ३८॥

सखी वचन ।

बहुतेरे तेरे पढ़े, जोड़ तोड़ छल छन्द ।
एक न मेरे ढिग चले, चतुराई ब्रजचन्द ॥ ३९ ॥

लालजी वचन ।

जो आज्ञा पाऊं सखी, आऊं तनक निहार ।
प्रिय मुख पंकज पै परो, कैसे मान तुम्हार ॥४० ॥

सखी वचन ।

प्रीतम सो दिन अब गये, करत रहे उपहास ।
बिन बूझे जाते चले, दौर दौर के पास ॥ ४१ ॥

लालजी वचन ।

जब तो त भोरी हुती, अब तौ चतुर दिखात ।
पकरि छड़ी छाँटे ठढी, बात बात में बात ॥ ४२ ॥

सखी वचन ।

कहा कहानी लै ठड़ें, बात होय कछु बात ।
चलो हटो सरको परें, मोहि न भीर सुहात ॥ ४३ ॥

लालजी वचन ।

विनय करत वानी घिसी, ठढ़े बीतियो याम ।
जिन में ऐसी निठुरता, तिन सों राखे राम ॥ ४४ ॥

सखी वचन ।

छल बल करि केती कहो, रहो न घोंगी जान ।
चहे सुनो या कानते, चहे सुनो वा कान ॥ ४५ ॥

लालजी वचन ।

पुनि अधीन ह्वै कहैं कर, जोर जोर बिन जोर ।
सखी सखी ह्वै जिन बने, कृपन समान कठोर ॥ ४६ ॥

सखी वचन ।

सुनत हेरि हँसि फेरि मुख, बोली बोली मार ।
विनय गिने को आप की, पै कहुँगी कहिडार ॥ ४७ ॥

कवि वचन ।

कही गई सुनि उन निकट, बिकट कियो जिन मान ।
छकी छबीली छबि निरखी, विनत जोरि द्वै पान ४८

सखी वचन श्रीजी प्रति ।

विनय करूं न करूं कहो, कहा करूं मतिधीर ।
बोलेते तव मान में, भिंग परेगी बीर ॥ ४९ ॥
चन्द्रमुखी चपला चमक, चतुराई की खान ।
कारण कवन कियो कहो, कुँवरि किशोरी मान ५०
जो ऐसेही मान को, चोरी लेओ बुलाय ।
द्वारपाल फिर द्वार पै, क्यों राखे बैठाय ॥ ५१ ॥

कवि वचन ।

उक्त वचन के बान इन, जब मारे द्वै चार ।
द्वारपाल भजिवे लगे, सूने तजिके द्वार ॥ ५२ ॥

श्रीजी वचन ।

भौंह सौंह करि सैन सों, बूझन लगी सुजान ।

एक रागनिबट्यो नहीं, तू कहा गावत तान ॥ ५३॥

सखी वचन।

पिय चकोर बिन आप के, अति व्याकुल है आज। ज्यों झख जल ते विलग गति, दरश देउ निशिराज ॥ ५४ ॥

प्रीतम हाल हवाल लखि, अरी निठुर ब्रजबाल।
लाल कहां अब लाल हैं, या छिन तुमहो लाल५५॥

कवि वचन।

सुनत उठी तन फुरफुरी, फिर बैठी अनखात।
फिर फिरके फरके अधर, बोली वचन रिसात५६॥

श्रीजी वचन सखी प्रति।

चुपरी चुपरी जिन कहैं, चुपरी चुपरी बात।
मिलन सीखिवे दे उन्हें, उपरी उपरी गात ॥५७॥
यहां कहा कछु बटत है, अड़े खड़े बन छैल।
फैल फैल सोये यहां, वहीं मचावें फैल ॥ ५८॥
लाखन लखि लिख रखे मन, कपट किये जो श्याम।
दया मया पति हया नहिं, जिन के सो किह काम ॥ ५९ ॥

कवि वचन।

पय सुभाव सागर प्रिया, नीर मनो है मान। वचन उपायन सों भयो, विलग न मन खिसियान ॥ ६० ॥

फिरि बगदी पिछिले पगन, मुखते कढ़त न बैन।
जिमि हारे रन सूरिमा, आवत नीचे नैन ॥ ६१ ॥
देखत ही मुख सखी को, निज मुख भयो उदास।
सुख निवास विश्वासते, भये निराश तजि आस ॥ ६२ ॥

लालजी वचन।

क्यों मुरकी दुरकी इतै, कहा उपजियो ज्ञान।
मुरकी मुरकी कानके, प्यारी मुरकी जान॥६३॥

सखी वचन।

लालन कहनी सो कही, वाने सुनी न कान।
ऐसे गुरुते कब पढ़ी, झटपट छूटै मान ॥ ६४ ॥
साम दाम कहि कोटि विधि, समझाई तब हेत।
सो काहू विधि प्राणपति, बात लगन नहिं देत॥६५॥
हेम वरण श्री लाड़िली, रोस कोटमें आज।
बैठी मान मचान पै, सुनो लाल ब्रजराज ॥ ६६ ॥
चाह सुनावो चारि षट, कै दश आठ पुरान।
जाके मन में मानहै, सो कब मानत ज्ञान ॥ ६७ ॥

व्याकुलता लालजी।

करत विचार विचार निधि, बहु विधि उर धरि धीर।
प्रिया कली ढिग में अली, किमि है पुजो समीर ६८

लालजी वचन ।

गहि ठोड़ी ब्रजनारि की, बार बार लै वार ।
गुण न भूलि हौं हरि असन, चार चार पै चार ॥६९॥

सखी वचन ।

साँवलियो द्वारो हटो, लाल बेर किहि काम ।
बूझो किस मिस मिलेंगी, मैं जामिनि हूं श्याम ७०॥
धीर धरो जग धीर बड़, होत न धीर अधीर ।
भीर परी जो भीर ह्वै, ठढ़े द्वार करि भीर ॥ ७१ ॥

लालजी वचन ।

धरा धरूं तो धर सकूं, धीर न धार्यो जाय ।
जिन रस चाख्यो प्रेमको, तिन्हें न और सुहाय ७२॥
जान जान जिन मिस करो, होवै जान सुजान ।
जान न देवौ जानद्यो, नातर देवो जान ॥ ७३ ॥

कवि वचन ।

सखी लखी गति लालकी, निज मन रचत इलाज ।
दरश स्वाति बिन कल न लै, पिया पपीहा आज७४
मृग छौना किमि संग लै, भीतर करूं पयान ।
सनमुख मान चला रह्यो, बंक विलोकन बान।।७५।।
या विधि सों सोचत सखी, पुनि मन कियो विचार ।
फिर छबि रहै कै ना रहै, जैसी बनी अवार ॥ ७६ ॥
अब दिखाउं पिय भ्रमर कूं, यह शोभा को साज ।

कली खिलै हो फूल यह, फूल कली भइ आज।।७७।।
चंद्र वदन सुख सदन को, संग लै चली ताँह ।
मुरझ रही रवि मान सों, प्रिय कमोदिनी जाँह।।७८।।

व्यवस्था लालजी ।

लगी मिलन की चटपटी, भूली सुरति वियोग ।
कब दृग पक्षी चुगेंगे, दरशन रूपी चोग ।। ७९ ।।
देखि दूरिते भूरि छबि, दूरि दिये दुख टाल ।
दुरैं दूरिते कहँ जिन, दूरि रहो गोपाल ।। ८० ।।

मानकी शोभा ।

कर कपोल के तरे धरि, बैठी अति छबि पाय ।
मानो तन धरि शान्तिरस, पौढ़्यो कमल बिछाय ८१
कोउ अंग फरकत नहीं, यों बैठी चुप चाप ।
मनो भीति के चित्र की, छबी बनी है आप ।। ८२ ।।
मुख उदास कछु दृग मुँदे, मनों उतारत स्वांग ।
ज्यों योगी जन बैठिके करत योग अष्टांग ।।८३।।
बैठी नागरि मौन गहि, बिथुरी अलकन जोय ।
मानो कमलनि जानि निशि, मुख मूंदेरहेसोय ८४
लटकन के मोती लटक, अधरन पै की भीर ।
मानो लालसों यों कहै, छीनि लई जागीर ।। ८५
लट है नैन कपोल पै, शोभा देत अपार ।



बैठि नागिनी कमल पै, दरपन रही निहार ॥ ८६ ॥
माथे मोतिन बंदनी, यह शोभा नइ भाँति ।
रूप मानसर के निकट, बैठी हंसन पांति ॥ ८७ ॥
ठढ़े ठढ़े निरखत पिया, शोभा शोभा खान ।
मुख बनाव बैठन अदा, धरन कपोलन पान ॥ ८८ ॥
पथिक पीय मन मांगि मग, बैनी परसन जात ॥
सीसफूल ठग बीचमें, करत रोक उत्पात ॥ ८९ ॥
गौर बरण भौं बंक बर, लोचन अरुण सुहात ।
मतवारे दो खड्ग लै, ठढ़े उजेरी रात ॥ ९० ॥
नैन देखि सुख लूटते; तरसन लागे कान ।
आज ही प्यासे हम रहे, सुधा बचन बिन पान॥९१॥

कवि वचन ।

श्री छबि सिंधु अथाह की, को कैसे ले थाह ।
अंगतरंग भुहें भँवर, अलक उरग दृग ग्राह ॥ ९२ ॥

विनय लालजी की ।

निरख निरख शोभा हरष, पिय हित होत अपार।
डरत डरत बिनती करत, जै श्री राजकुमार ॥ ९३ ॥
पंकज बिषधर मीनमृग, सर खंजन बादाम ।
प्यारी तेरे दृगनके, यह बिन दाम गुलाम ॥ ९४ ॥
समझ सुघरता शील सम, सार असार बिचार ।
सुमुखि सुलोचनि सकल गुण, तुमें दिये करतार९५

सखी वचन श्रीजी प्रति ।

मिलन बचन स्नेह युत, बोली सखी बिचार ।
प्यारी पिय ठाढ़ो निकट, उठि निहार बलिहार ९६
जा मृग को घायल कियो, तिरछी चितवन बान ।
परख लेउ जिन फिर कहौ, तू लाई है आन ॥ ९७ ॥

श्रीजी वचन सखी प्रति ।

नैन तरेरे बंक भौं, श्रवण सुनत पिय नाम ।
रिस बश ह्वै कहि यहां कहां, श्याम श्याम मनकाम ॥ ९८ ॥
लजत निलज्जन लजत हैं, लाजवान के नैन ॥
द्वार द्वार झुकि झाकिके, आये दरशन दैन ॥९९॥

सखी वचन श्रीजी प्रति ।

कहां गये किन के रहे, लखी कौन सी बात ॥
कै योंही घर बैठिके, पर के काग उड़ात ॥१००॥

श्रीजी वचन सखी प्रति ।

इनहीं सों बूझें नहीं, जो ठाढ़े करि भीर ॥
कर कंगन को आरसी, कहा करैगी बीर ॥ १०१ ॥
सजनी सजनी के रहे, रजनी भरि घनश्याम ॥
भवन भवन भयरात निशि, भोर आय मम धाम ॥ १०२ ॥

लालजी वचन श्रीजी प्रति।

सुनि प्रिय के भोरे बचन, रचन श्रवण चित चोर॥
बोले कछु मुसिक्यायके, नागर नवल किशोर १०३

प्यारी प्यारी आपतें, को जासों है हेत॥
मैं येहू जानूं नहीं, कारी है के श्वेत॥ १०४॥

श्रीजी वचन लालजी प्रति।

मुकर मुकर जिन बात कहौ, मकर हँसत हैं कान॥
मुकरौ मुकर निहारि कै, मुख मुकरे की शान १०५

लालजी वचन श्रीजी प्रति।

सोच विमोचन सोचिके, निर्दोषे दे दोस॥
बिन आज्ञा या द्वार की, चौखट सौ सौ कोस १०६॥

श्रीजी वचन लालजी प्रति।

वृथा बात गढि गढि कहौ, समझि लियो कछु खेल॥
एक न मानू चहें तुम, केते पापर बेल॥ १०७॥

लालजी वचन श्रीजी प्रति।

अभय कियो अपनाय के, विदित सकल संसार॥
आज कहा मन में भई, देत द्वार तें टार॥ १०८॥

श्रीजी वचन लालजी प्रति।

ढाल ढाल मुख सों कहौ, चटपट चटपट बात॥
यह अचरज विद्या घनी, पढे एकही रात॥ १०९॥

कवि वचन ।

आज बनी शोभा युगल, को वर्णत मतिधीर ॥
भोरापन अरु दीनता, मानों धरे शरीर ॥ ११० ॥

लालजी वचन श्रीजी प्रति ।

रैन सुवे की कथा किन, श्रवण करी दुसराय ॥
तब सुधि आई मानिनी, तुरत गई मुसिक्याय ११ १

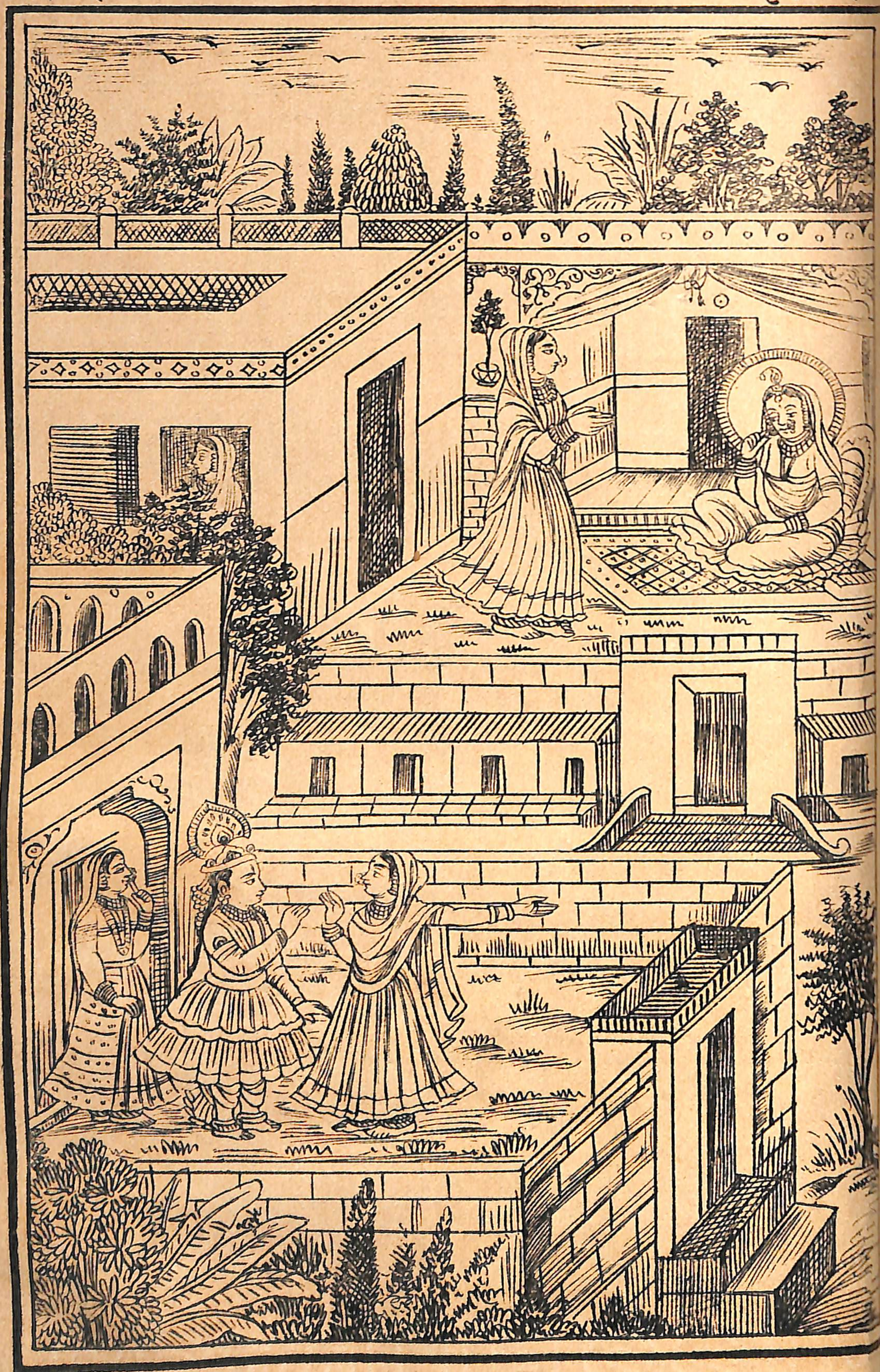
हरष मान मोचन ।

हँसत हँसत सखि कंचुकिन, टूटि टूटि गये बंद ॥
मंदिर के अंदर नयो, पूरि रह्यो आनन्द ॥ ११२ ॥

कवि वचन ।

उत चितवन मुसिक्यान इत, दंपति अति छबि देत।
मानो बांटत बायनों, सजनी हँस हँस लेत ॥ ११३ ॥
रसिक जनन की कृपाते, कियो कछु कग्गुणगान॥
नतु नारायण बापुरो, याको सकै बखान ॥ ११४ ॥
ब्रजवासी धनि धनि विपनि, संत स्वामि गुरुदेव ॥
जासु कृपाते मिल्यो कछु, गुप्त रहसको भेव ॥ ११५ ॥
विघन हरन मंगल करन, चरन जुगल सरकार ॥
नारायण निज जनन के, जीवन प्राण अधार ॥ ११६

इति श्रीदोहावली मानलीला श्रीनारायण
स्वामीजी कृत सम्पूर्णा ॥ १० ॥



अथ खंडिता मानलीला प्रारंभः।

समाजी वचन।

दोहा।

एक सखी अति प्रेम वश, भवन बुलाये लाल।
बातन में उरझायके, निरखत रूप बिशाल॥ १॥

दोहा।

अपर सखी छिपके तहां, कौतुक सकल निहार।
जाय कह्यो पुनि प्रिया सों, कछुक सहित बिस्तार २

दोहा।

यह सुनिके प्रिय रिस भई, पुनि इक सखी बुलाय।
कही तासु जा देख तू, लाल कहां बिरमाय॥ ३॥

वार्तिक।

जब या सखीने वा सखी के द्वार पै जायके बूझी। क्योंरी! तेरे घरमें लालजी पधारे हैं, तब वह सखी बोली अरी बीर! क्यों हांसी करै, तेरे घर जो लाल जी पधारतहैं या सों जो तू कहै सो सब सांच॥४॥

फिर सखी वचन वा सखी प्रति।

कालिंगड़ा।

तेरे भवन यह कौन बिराजैं॥ आस्ताई॥ वचन मनोहर भाषत तोसों, कबहुँ मधुर धुनि नूपुर बाजैं॥

मोर मुकुट की झलक परत है, जाहि निरखि रवि शशि मन लाजैं ॥ नारायण तू सांचकहि री, यह तिहारे आये किहि काजैं ॥ ५ ॥

वार्तिक ।

यह वचन सखी को सुनिके श्री लाल जी बाहर निकसि आये, अरु सकुचके बोले, अरी ! कहुँ प्यारी जी सों मति कहियो, तब सखी बोली, मैं कहा कहूंगी, दूती ने पहलेही समाचार पहुँचायके मान कराय दियो है ॥ ६ ॥

सखी वचन लालजी सों ।

झंझोटीका ज़िला ।

कितनो समझाय रही, परघर जिन जावौ रात उघरैगी बात प्रात छिपा ना रहैगी ॥ आस्ताई ॥ दूतीजन चहुं ओर डोलत हैं याहि काज, झूठ सांच जाय कोउ प्यारी सों कहैगी॥राजन के होयँ कान जैसे कहौ लेत मान, ताहूपै यह प्रगट चूक कैसे वो सहैगी ॥नारायण जैसो तुम उनको जियै चाहौ गे तैसोही तुम्हें भानुनन्दनी चहैगी ॥ ७ ॥

वार्तिक ।

फिर सखी ने कही आप मेरे संग पधारो जो कछु

मोसों बनेगी मैं सब प्रकार उनसों बिनतीकरूंगी॥८

सखीवचन श्रीजी प्रति।

जि़ला।

प्यारी तेरे आगे ठाढ़े नंदकिशोर ॥ आस्ताई॥ लाज भरे दृग करत न सन्मुख, निरखत धरती ओर ॥ बिन समझें इनसों बनिआये, औगुन लाख करोर ॥ नारायण अब क्षमा कीजिये, यह मागूं कर जोर ॥ ९

श्रीजी वचन लालजी प्रति।

जैजैवंती।

कौन काज यहां आवत हौ जू॥ आस्ताई॥देखि लिये सौतिन घर बैठे, अब क्यों बात बनावत हौ जू ॥ जासों करत नई रस बतियां, हँसि हँसि कंठ लगावत हौ जू ॥ नारायण वाही के जावो, मोसों कहा सकुचावत हौ जू ॥ १० ॥

लालजी वचन श्रीजी प्रति।

जि़ला।

प्यारी सुघर सुकुमारी नेक समझके कीजै मान॥आस्ताई॥ मैं तो गयो न काहू के भले ठीक करौ छबिखान ॥ दूती को कहा मिलैगो उनरस में

दीयो विषसान ॥ प्रगटी निपट घर फोरी जाने एक सो द्वै किये प्रान ॥ सांची कही काहू ने बड़े लोगन के ह्वै कान ॥ तुमतो प्रिये अति भोरी नहिं सांच झूंठ को ज्ञान ॥ मेरो तौ मन मधुकर है तुमरो मुख कमल समान ॥ नारायण नितप्रति मोकूं एक आपही को रहै ध्यान ॥ ११ ॥

वार्तिक ।

जब श्रीलाल जीने देख्यो, कि या भांति सों मान नहिं छूटै, तब बाहर आयके सखी भेष धारण करि फिर श्री प्रिया जी के निकट जायके समझायवेलगे, हेप्यारी आपकूं ऐसो मान करिवो योग्य नहीं, क्योंकि आप प्रीति की रीति को जानों हौ, और आज मैं तिहारे प्रीतम सों तिहारे मनायवे को बीरा उठायके आई हूं, अब मेरे आयवे की लाज राखो ॥ १२ ॥

साँवरी को वचन ।

रेखता ।

भूपाली के स्वर ।

इतनो न मान कीजै, वृषभान की दुलारी ॥ तेरे मनायवे में मोहि श्रम भयो है भारी ॥ इतनो० ॥ प्रीतम को आज तो बिन, पल छिन न चैन आवै, नहीं

जी लगत भवनमें, नहिं बन की छबि सुहावै॥हँसि बोलिवौ कहां को, नहिं खान पान भावै॥ हाथन में चित्र तेरौ, पुनि पुनि हिये लगावै॥ अति विकल ह्वै रह्यो है, वह साँवरो बिहारी ॥ इतनो० ॥ प्यारे के आगे अपने, मैं गुणकी कर बड़ाई॥ तेरे मनायवे कौ, बीरा उठा के आई॥ बल बुद्धि मो में जितनी, तितनी मैं सब लगाई। पै नेक हू न मेरी, चतुराई काम आई॥ सब विधि सों राजनीति, मैं कहि कहिके तोसों हारी ॥ इतनो० ॥ तेरी तो नित बड़ाई, सब सखी जन बखानें॥ प्यारी हिये की कोमल सुपनेहू रिस न जाने॥ यह आज कहा भयो है,बैठी हौ भ्रुकुटी ताने॥ उन सखीजन को कहिवौ, अब कौन सांच मानें॥ सब झूठही बड़ाई, भामिनि करें तिहारी॥ इतनो० ॥ लालनके साथ मिलके बन शोभा निरखौ प्यारी॥ कहूं सघन ललित छाया, कहुं फूली फूलवारी॥ जलसों भरे सरोवर, झुकि रहि द्रुमन की डारी ॥ बोलत अनेक पक्षी, बरनत हैं छबि तिहारी॥ बलि बेगिही पधारौ, यह लालसा हमारी॥ इतनों० ॥ एरी सुघर सयानी, मो बिन्ती मानि लीजै॥ ताजिके यह मान मुद्रा प्यारे सों हेत कीजै॥ नितही अधर सुधारस, हँसि हँसिके दोऊ पीजै॥ फिरकर न उनसों रूठौ, बर-

दान यही दीजै ॥ नारायणयाही कारण, निजगोदमें पसारी ॥ इतनो० ॥ १३ ॥

वार्तिक ।

यह नई रूप मनोहर देखिके श्रीजी ने इनको हाथ पकरिके कह्यो, अरी तू नेक बैठि तौ जा, यहपंचायत पीछे करि लीजो, तब सखी पास तें बोली बलिहार, हमारो कहबौ तौ न मान्यो, अबअपनी राजी सों हाथ पकरि के पास बैठायवै लगीं, इतसों लालजी बोले, बांह गहेकी लाज। यह बचन सुनिके श्रीजी सकुच सहित मुसिक्याय गईं, लालजी गलबैयां दैके हँसिवै लगे, ता पीछे सखियनने व्यारू भोग करायके आरती करी ॥ १४ ॥

दोहा ।

श्री राधा गोविंदकी, लीला परम उदार ॥
नारायण गाये सुनें, देत पदारथ चार ॥ १५ ॥

इति श्रीखंडिता मानलीला श्रीनारायण स्वामीमी कृत सम्पूर्णा ॥ ११ ॥

अथ श्रीसंभ्रम मानलीला प्रारंभः ।

समाजी वचन ।

दोहा ।

बड़े भोर सुखसेजतें, जगे पिया छबि ऐन ।

प्यारी के श्रृंगार हित, चले सुमन बन लैन ॥ १ ॥

दोहा।

सोवत में पुनि लाडिली, सपनों देख्यो एक।
निज प्रीतम मिलि और सों, क्रीड़ा करत अनेक २॥

दोहा।

ता पीछे जागी लली, निकट न देखे श्याम।
तब मन में निश्चय भयो, गये काहु के धाम ॥ ३ ॥

दोहा।

एक सखी सों कही तब, ठाढ़ी रहि तू द्वार।
मंदिर में आवै नहीं, कपटी नंदकुमार ॥ ४ ॥

श्रीजी वचन दूसरी सखी प्रति।

दादरा बरबै पीलूका ज़िला।

सखी नंदलाला आवन नहीं पावै ॥ आस्ताई ॥
भीतर चरन धरन जिन दीजो, चाहें जिते ललचावैं॥
ऐसेनको विश्वास कहारी, कपट की बात बनावैं॥
नारायण एक मेरे भवन बिन, अंत चाहैं जहां जावै ॥ ५ ॥

दोहा।

सुमन बीनि जब साँवरो, आयो मन्दिर द्वार।
सखी न भीतर जान दे, बरजत बारम्बार ॥ ६ ॥

लालजी वचन ।

दादरा ।

हमें तू जिन रोकै नवल ब्रजगोरी ॥ आस्ताई ॥ मो मन में यह सांच न आवत, रूठी हों भान-किशोरी ॥ बीचहिते क्यों बात बनावत, रिससों भौंह मरोरी ॥ नारायण विधिको कहा सूझी, तोसी रची घर फोरी ॥ ७ ॥

सखी वचन लालजी प्रति ।

कालिंगड़ा ।

द्वारपै क्यों ठाढ़े ब्रजराज ॥ आस्ताई ॥ जहां सों आये वहीं जावो तुम, यहाँ नहीं कछु काज ॥ लाख भाँति सों बिनय करो तुम, एक न मानूं आज ॥ नारायण बलिहार तिहारी, नेकन आवत लाज ॥ ८ ॥

लालजी वचन सखी प्रति ।

कालिंगड़ा ।

लाज सों मेरो काज कहारी ॥ आस्ताई ॥ बिन प्यारी मोहि कलन परत है, इक इक पल बीतत है भारी ॥ ऐसी कहा चूक भई मोपै, तुम सजनी सब देखनहारी ॥ नारायण मोहि बेगि बतावो, क्यों रूठी वृषभान दुलारी ॥ ९ ॥

सखी वचन लालजी प्रति ।

कालिंगड़ा ।

मैंकहा जानूं कुंजबिहारी ॥ आस्ताई ॥ किहि कारण रूठी हैं तुम सों, चंद्रमुखी वृषभानकुमारी॥ जबते उठी प्रिया सोवततें, तब ही सों मन में रिस भारी ॥ ना जानूं कछु सपनें में उन, देखी हो करतूति तिहारी ॥ ठाढ़े रहौ भीतर मति जावौ, प्रीतम मानों कही हमारी ॥ नारायण जो भुज गहि रोकूं, फिर कहा बातरहै गिरिधारी॥१०॥

लालजी वचन सखी प्रति ।

झंझोटी ।

मोहिमति रोकैरी तू एरीब्रजनागरी॥आस्ताई॥ रूप की निधान है तू, गुणनकी खान है तू, तेरी सम कौन आज, तेरो बड़ो भागरी ॥ कहै तौ मैं नृत्य करूं,बांसुरी में राग भरूं, कान्हरो किदारो भैरों, सोरठ बिहागरी ॥ तू तो सदा उपकारी, हितहूकी करनहारी, आज नारायण मोसों, क्यों राखै लागरी ॥ ११ ॥

वार्तिक ।

सखी बोली हे प्यारे ! यामें मेरो कछु दोष नहीं मैं तो उनकी आज्ञा सों रोकूं, परन्तु अब आप एक

काम कीजै, जा रीतिसों मैं कहूं वाही रीतिसों उनके निकट जायके विनती करौ ॥ १२

झंझोटी का ज़िला ।

प्यारी ढिग जाय लाल धीरे वचन कहियो ॥ आस्ताई ॥ नीची रखि दृष्टि नैन, विनती कीजो बिचारी, सन्मुख ह्वै ठाढ़े दोऊ हाथ जोरे रहियो ॥ अचरा मुख पै दुराय, कबहूं भूषण सँभारि ह्वैके बलिहार उनकी कबहूं ठोड़ी गहियो ॥ नारायण भूलिकेन डरपियो निरादरसों, जो कछु वह कहैं आप, सबही बात सहियो ॥ १३ ॥

दोहा ।

सखी वचन सुनि मुदित मन, गये प्रिया ढिग लाल।
भोरहि आज उदास क्यों, एरी रूप विशाल॥ १४॥

प्रियाजी वचन लालजी प्रति ।

ठुमरी खम्माच ।

प्यारे तेरे जिय की न जानी जाय बातरे ॥ आस्ताई ॥ कहूं तो सांझ आधी रात, रहत कहूं पिछिली रात, कहूं प्रातरे ॥ उनहीं सों जाओ, बतराओ सुख पाओ तुम, जिन यह सिखाये दाँव घातरे ॥ अब तोसों भूलिके न बोलूं नारायण, जहां लग अपनी बसातरे ॥ १५ ॥



लालजी वचन ।

ठुमरी ज़िले में ।

प्यारीजी तिहारे बिन कल न परत है॥ आस्ताई॥ मंदिर अटारी चित्रसारी ओर फुलवारी, मोहि कछु प्रिय न लगत है ॥ घनो समझायो इत उत बहलायो पुनि, तोहू मन धीर न धरत है ॥ एतौ हठ आगे कब कियो नारायण, जेतौ हठ आज तू करत है ॥ १६ ॥

वार्तिक ।

जब श्रीलालजी किशोरीजी की बलैयां लैके गलबैयां दैवे लगे तब श्री किशोरीजी को वचन ॥ १७॥

ठुमरी खम्माच ।

प्यारे मेरे गरवा में जिन डारो बैयां ॥ आस्ताई॥ छुऔ न लँगर मेरो पकरौ न कर तुम, छाँड़ौ अब कपट बलैयां।। जावो पिया वाही मनभाईके भवन तुम जाके निस परत हौ पैयां॥ झूंठी मूंठी सौहें क्यों खाओ नारायण, जानूं मैं तिहारी चतुरैयां ॥ १८॥

लालजी वचन श्रीजी प्रति।

जोगिया ।

सांची कहौ किधों हांसी करौ जी ॥ आस्ताई ॥

आज कहा कारण जो मोसों, बेर बेर कहौ यहां सों टरौ जी ॥ कौन सखी कितमें घर वाको, तुम जाको मोहिं दोष धरौ जी ॥ नारायण यही अचरज मोको, झूंठ कहत नहिं नेक डरौ जी ॥ १९ ॥

श्रीजी वचन लालजी प्रति ।

कालिंगड़ा ।

श्याम तुम वाही सजनी के पधारौ ॥ आस्ताई ॥ जाके बिना पल चैन न तुमको, झांकत हौ निशि-ताही को द्वारौ ॥ यहां ठाढ़े क्यों देर लगावत, जाओ लाल नवरूप निहारौ ॥ नारायण तिहारी बातन को, अब मोको न रह्यौ पतियारौ ॥ २० ॥

लालजी वचन ।

लावनी की राह में ।

उठौ अब मान तजौ गोरी। रही है रैन बहुतथोरी आस्ताई॥सदां सों तुम मन की भोरी॥कहूं मैं शपथ खाय तोरी ॥ओरन के बहकाये तुम, करि बैठति हौ रोष॥ झूंठ सांच परखत नहीं, वृथा देत हौ दोष ॥ यही मोहिं अचरज है भारी ॥ १ ॥ तनक हँसि चितवौ सुकुमारी ॥ शशी मुखपै हूं बलिहारी ॥ अपनी ओर निहारिके, देउ अभय वरदान ॥ क्षमा

करौ सब चूक अब, जो कछु भई अजान ॥ एती बिनती मानों मोरी ॥ २ ॥ तिहारे गुण नितप्रति गाऊं ॥ बिना आज्ञा न कहूं जाऊं॥ताहू पै दृग अरुण करि, भृकुटी लेत चढ़ाय ॥ जोरावर सों निबल की, काहू बिधि न बसाय ॥ हारे हूं हार जीतेहूं हार॥ ३ ॥ जिन्हें तुम समझौ हितकारी, सोई अति कपटी ब्रजनारी॥हम में फूट करायके, आप अलग मुसिक्यात ।। नारायण तुमने करी, खरी न्याव की बात ॥ भले को दंड बुरे पै प्यार ॥ ४ ॥ २१ ॥

वार्त्तिक ।

पास तें सखी बोली हे प्यारी! ऐसे अपने प्रीतम प्यारे की ओर सों कठोर न होनो चाहिये ॥ २२ ॥

सखी वचन।

ध्रुपद ।

तेरोरी मुखारविंद, शरदचंद, छबिनिकन्द ताहि सदा निरखिवेको सांवरो चकोर है ॥ आस्ताई ॥ तापर तू भ्रुकुटी तानि,बैठत नित मान ठानि छाँड़त नाहिं रिस की बानि, बड़ी तू कठोर है ॥ ता दिनते सोंह खाई, अब नहि रूठोंगी माई,चाहें पिया प्यारे

मांहि, औगुन करोर है॥ यह सुनि मुसिक्याई, बाल अंक भरे नवल लाल, नारायण हरखि सखी, डारत तृण तोर है ॥ २३ ॥

दोहा ।

भानुकुमरि नँदलाल की, यह लीला अभिराम ।
नारायण हितसों सुने, पूरण होवें काम ॥ २४ ॥

इति श्रीसंभ्रममानलीला श्रीनारायण
स्वामीजीकृत संपूर्णा ॥ १२ ॥

अथ रूपगर्वितामानलीलाप्रारंभः ।

समाजी वचन ।

दोहा ।

शशिवदनी प्रियसों कह्यो, प्रीतम अति हरषाय ।
यह सुनि प्यारी रिस भई, भृकुटीलई चढ़ाय ॥ १ ॥

श्रीजी वचन लालजी प्रति ।

दोहा ।

तरक वचन सों करत तुम, मोमुख अस्तुतिलाल ।
ज्यों भुजंग सूधीहु मग, चलत ब्यंगही चाल ॥ २ ॥
मो मुख सम किमि होय शशि, सुनो सांवरे गात ।
घटत बढ़त सकलंक विष, बंधु प्रगट जड़ तात ॥ ३ ॥

लालजी वचन ।

वार्तिक ।

लालजी बोले हे प्राणप्यारी ! मैं तो सहज सुभाव आपके मुख की बड़ाई करी हुती ॥ ४ ॥

श्रीजी वचन ।

दोहा ।

प्रीतम कछु बोरे भये, मोहि देत हौ सीख ।
मुख मीठे मन में कपट, जाविधि गांठें ईख ॥ ५ ॥

समाजी वचन ।

दोहा ।

निठुर वचन सुनि लालने, कही सखी सों आय ।
वा भोरी रिस भरी कूं, तुम समझावौ जाय ॥ ६ ॥

सखी वचन श्रीजी प्रति ।

मलहार तीन ताला ।

काहे को मानिनी मान बढ़ावत ॥ आस्ताई ॥ तोहि तौ बानि परी रूठन की, मैं नित हार गई हूं मनावत ॥ आप तनक मन में नहिं समझति, औरन कूं भट्ट नीति सिखावत ॥ नारायण प्रीतम प्यारे कूं, हँसि रसके क्यों न कंठ लगावत ॥ ७ ॥

श्रीजी वचन सखी प्रति ।

जिला धीमाताल ।

प्रीतम की चरचा न चला री ॥ आस्ताई ॥ अब उनके गुण जानि गई मैं, जो वे खेलत कपट कला री ॥ तू उनकी अति सुघड़ मिलनियां, और काहू सों जाय मिला री ॥ नारायण ऐसो संदेश तू, फेर कबू मो ढिग मति ला री ॥ ८ ॥

सखी वचन श्रीजी प्रति ।

कान्हड़ा दरबारी ।

ऐसो मान न कीजै बार बार ॥ आस्ताई ॥ एरी सुहागिनि भागिन, तोपै हों पीवौं जल बार बार ॥ उतसों लाल पठावत तो ढिग, तू इतसों दे टार टार ॥ मैं चौगान की गैंद भई री, मेरे नहीं पग चार चार ॥ तेरो मान अपमान है मेरो, समझावत गई हार हार ॥ नारायण विधि कैसे लगै, तू पात पात मैं डार डार ॥ ९ ॥

श्रीजी वचन ।

दोहा ।

जो इतसों रवि उत उगै, तौभी करूं न प्यार
फिरि तू क्यों आवत सखी, मो ढिग वारंवार ॥ १० ॥

सखी वचन श्रीजीप्रति।

कालिंगड़ा।

सुनि राधे तोहि ऐसी न चहिये ॥ आस्ताई ॥ जो अपने आधीन रहै नित, ताहि कहा इतनों डरपैये ॥ तुम कछु प्रीति की रीति न जानों, फिरि कहां लों तुम को समझैये ॥ नारायण यह प्रीति कहावैं, हँस रसके पिया कंठ लगैये ॥ ११ ॥

श्रीजी वचन सखी प्रति।

देश धीमा ताल।

चलि हठि री सखी क्यों बात गढ़त, सो मैं सब जानूं जो वह पाटी पढ़त, हिय कपट बचन मानों फूल से झड़त ॥ आस्ताई ॥ जानि नेक कहेकी न आवत लाज, मन भावतही करत फिरत है काज, मोहि इनहीं लछिन सों रिसहू बढ़त ॥ अब नारायण मैं न करूंगी प्यार, नित देखिचुकी वाकी यही है तार, जेती कीजिये बड़ाई तेतौ मूंड पै चढ़त ॥ १२ ॥

सखी वचन श्रीजी प्रति।

ज़िला।

तोसी नहीं कोऊ देखीरी हठीली ॥ आस्ताई ॥ ज्यों ज्यों मैं अब तोंहि मनावत, त्यों त्यों तू होवै अति

गर्ब्बीली॥ऐसे समय बलि रोश न कीजै, भौंहें कमान तनक करि ढीली॥ नारायण उठि मिलि प्रीतमसों, तजि दै मान की बान छबीली ॥ १३ ॥

वार्त्तिक ।

फिर सखी ने लालजी सों जाय कही हे प्यारे! आप झटपट नागरी भेष धारिके प्रिया जीके भवन द्वार पै आयके बार बार भीतर कूं झांकियो, जब उनकी दृष्टि तिहारे ऊपर परै अरु तुम्हें बुलायके कछु बूझें तो जा भांतिसों मैं समझाय चली हूं वाही रीति सों उनको उत्तर दीजो ॥ १४ ॥

कान्हड़ा झपताला ।

देखि री आज नवनागरी भेष धरि, ललीके छलन हित, ललन कैसे सजैं॥ आस्ताई ॥ पहर भूषण बसन, दृगन कजरा दियो, निरखि श्रृंगार सुरवधू मनमें लजैं ॥ मन्द मुसिक्यान, मग चलत गति ठुमकि के, मधुर धुनि किंकिणि चरण नूपुर बजैं॥ रूप अभिराम, नारायण लखि श्याम को, कौनसी माननी मान जो ना तजैं ॥ १५ ॥

समाजी वचन ।

दोहा ।

जाय द्वार ठाड़ी भई, साँवरि रूप विशाल ।

पुनि पुनि झांकत भवन में, अद्भुत जाके ख्याल १६॥

किशोरीजी वचन।

दोहा।

अरी सखी उठि देखि तू, को झांकत है द्वार।
याकूं तनक बुलाय ला, बूझें ढिग बैठार ॥ १७॥

श्रीजी वचन नागरी प्रति।

सोरठ धीमा ताल।

या बिरियां सखी तू कित डोलैरी ॥ आस्ताई ॥ निपट अकेली संग न सहेली, पग पग में अपनी छबि तोलैरी ॥ नहिं अवसर दधि बेचन को अब, पिछिली रैनि पहरुआ बोलैरी ॥ नारायण अति चतुर साँवरी, नेहकी गांठि तनक नहिं खोलैरी ॥ १८॥

नवनागरी वचन श्रीजी प्रति।

जंगला काफ़ी।

सकल वृत्तान्त कहूं मैं तुमसों, सुनो दयानिधि भानुलली ।। आस्ताई ।। एक सखी कूं मिलन चली मैं संग लिये दश पांच अली ।। पीछेते कही टेरि काहु ने आयो तुमे पकरन को छली ।। यह सुनिके सँग की सब भागीं, काहू गली कोऊ काहू गली ॥ मैं पुनि दौरि यहां आय दुबकी, देखि मनोहर

ठौर भली ॥ नारायण भई भेट आपसों, कछु मेरी पुनि बेलि फली ॥ १९ ॥

श्रीजी वचन साँवरी प्रति ।

दोहा ।

राति यहां विश्राम करि, एरी साँवरि अंग ।
प्रात भवन पहुँचाउँगी, तोहि सखीके संग॥२०॥

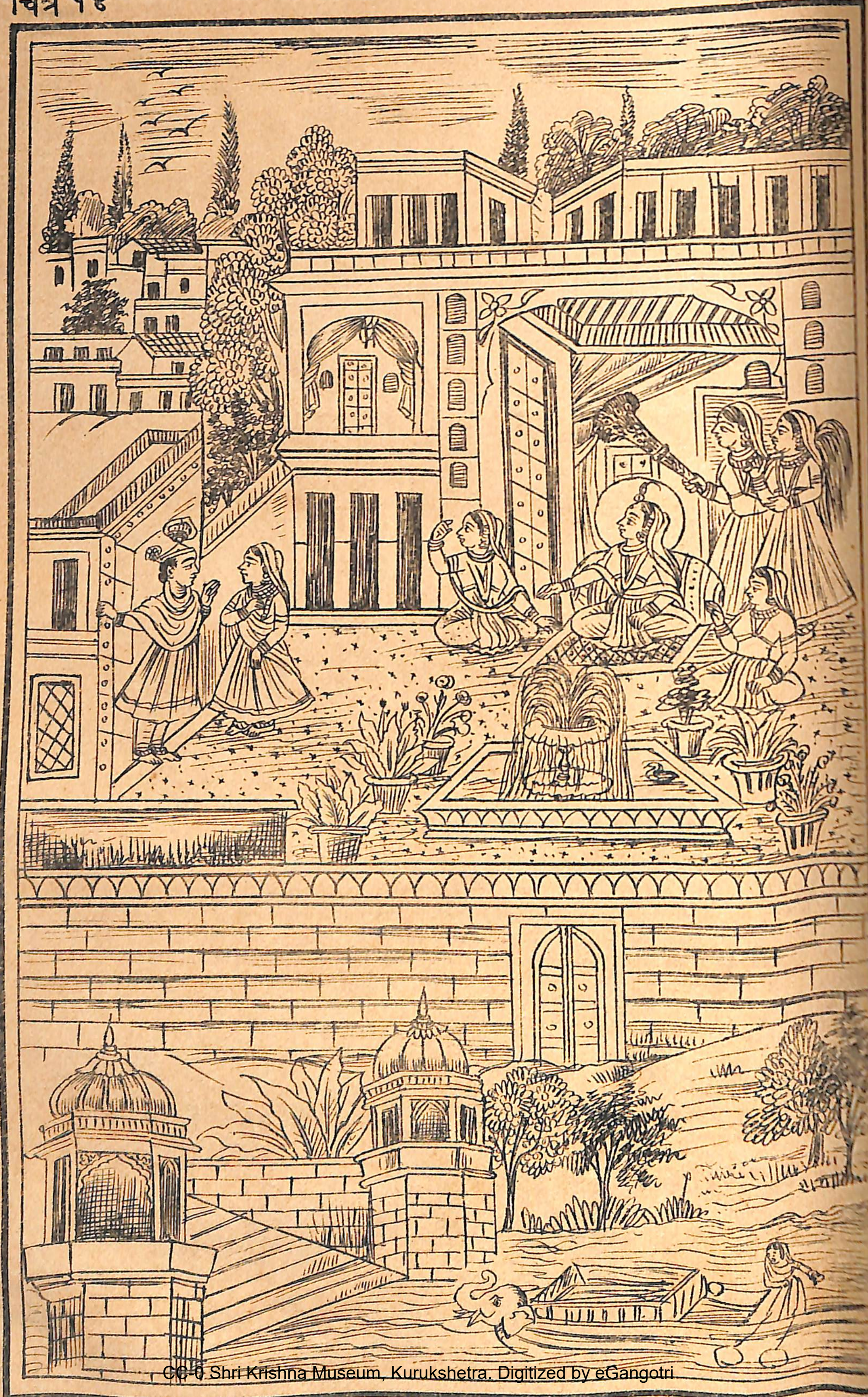
वार्तिक ।

यह वचन सुनिके सखी बलिहार प्रिया प्रीतम की कहिवे लगीं, तब श्रीजी अचरज है के बोलीं, अरी सखी! कछु देखि भारिके बात कहौ, पुनि सखी कर जोरिके बोली, हे प्यारी! अब आप ही देखि भारि लीजै, तब श्रीजीने लालजी की ओर देख्यौ, लालजी झट मुसिक्याय गये फिर तौ हँसी की बातें हैवे लगीं, लालजी ने कही हे प्यारी! आप तो नेकसी बात में मान करि बैठति हो॥२१॥

श्रीजी वचन लालजी प्रति ।

खम्माच ।

प्रीतम तुम मोहि प्रान ते प्यारो ॥ आस्ताई ॥जो तोहि देखि हिये सुख पावत, सो बड़ भागिन वारो ॥ तुम जीवन धन सरवस तुमहीं तुमहीं दृगनकोतारो



जो तुमको पलभर न निहारूं दीखत जग अँधियारो ॥ मोद बढ़ावन के कारण हम, मानिनी रूप को धारो ॥ नारायण हम दोऊ एक हैं, फूल सुगंधि न न्यारो ॥ २२ ॥

दोहा ।

नारायण गावें सुने, ये लीला सुख धाम ।
प्रियाप्रीतममें मनलगै, रसिकन में ह्वै नाम॥२३॥

इति श्रीरूपगर्वितामानलीला श्रीनारायण स्वामीजी कृत सम्पूर्णा ॥ १३ ॥

अथ नवपनिहारी लीलाप्रारंभः ।

समाजी वचन ।

दोहा ।

ब्रजमंडल के बास की, करत चतुर्मुख आस ।
नारायण ते धन्य हैं, जिनको नित्य निवास ॥ १ ॥

दोहा ।

पनघट की लीला सुनों, सज्जन जन धरि ध्यान ।
नारायण वर्णन करूं, अपनी बुद्धि प्रमान ॥ २ ॥

दोहा ।

एक दिवस उठि भोरही, छलिया श्याम सुजान ।

त्रिया भेष धरिके चले, गली भूप वृषभान ॥ ३ ॥

दोहा ।

शिरपै सोहै ईडुरी, रत्न टके चहुँपास ।
तापै कंचन कलश धरि, चले रूप की रास ॥ ४ ॥

दोहा ।

भूप द्वार पै जायके, टेरत सुर गम्भीर ।
एरी कोऊ चलत है, भरिवे यमुना नीर ॥ ५ ॥

नवपनिहारी वचन ।

जैजैवन्ती आसावरी ।

बेगि चलौ जल भरिवे नवेली ॥ आस्ताई ॥ कब सों टेरि रही मैं द्वारे, एक न निकसति सखी सहेली ॥ संग साथ मैं खोजत डोलूं, कोऊ मिलै मेरी मन मेली ॥ नारायण मग डर लागत है, यमुना जाय सकूं नअकेली ॥ ६ ॥

समाजी वचन ।

दोहा ।

टेर सुनत नवनारि की, गोप लली छबिरास ।
कंचन घट धरि शीस पै, जुरि मिलि आईपास ॥ ७ ॥

दोहा ।

अद्भुत शोभा निरखिके, उर सुख भयो अपार ।

रूप ठगौरी मैं ठगी, इकटक रहीं निहार ॥ ८ ॥

श्रीजी वचन नवनागरी प्रति ।

दादरा ।

तुम या ग्राम कहां रहौ आली ॥ आस्ताई ॥ हम कबहूं देखी न सुनी है, यह शोभा छबि रूप निराली ॥ नख शिख लों शृंगार मनोहर, अधर रची पानन की लाली ॥ नारायण कहौ प्रगट खोलिके, बात न राखौ बीच बिचाली ॥ ९ ॥

नवपनिहारी वचन श्रीजी प्रति ।

रागदेश सोरठ ।

प्यारी होंतौ याही पुर मांहि बसत, पै मैं निशि दिन अपने भवनहीं रहत, निज प्रीतम सों हँसि रस सुख विलसत ॥ आस्ताई ॥ पनघट यमुना तट अरु जित तित, दरशन झांकी बन बिहरन हित, कहुं बहुत न मैं घरसों निकसत ॥ नित डगर बगर इत उत डोलत, मोहि नारायण अति सकुच लगत याही सों मैं नहीं कितहूं उकसत ॥ १० ॥

श्रीजी वचन नवपनिहारी प्रति ।

दोहा ।

नाम कहा तेरो सखी, हमसों प्रगट बखान ।

नाम है मेरो गुणवती, सुनो कुमारि वृषभान ॥११॥

दोहा ।

अरी गुणवती गुण भरी, मृदुल मनोहर गात ।
क्यों कांपत तेरो बदन, सांचीकहि तू बात ॥ १२॥

गुणवती वचन श्रीजीप्रति।

राग आसावरी ।

नन्दसुवन प्रगट्यो उतपाती ॥ आस्ताई ॥ कहा कहूं वाके गुण तुमसों, चोर जार घटवार जगाती ॥ जो कबहूं मोहि डगर बगर में, देखत है कहुं इत उत जाती ॥ सब के बीच पुकार कहत है, कहां चली जोबन मदमाती ॥ वाकी इन कुचाल सों सजनी, अति भयभीत कँपत दिनराती ॥ नारायण निज लाज काज हित, गिरिजापति नित रहूं मनाती ॥ १३ ॥

वार्तिक ।

श्रीजी ने कही क्योंरी ! वह ऐसोई है, तब गुणवती बोली अजी कछू बूझौ मती ॥ १४ ॥

गुणवती वचन ।

राग काफ़ी ।

सजनी याही सों जिया घबरावै ॥ आस्ताई ॥ मैं

अबही आई या ब्रज में, छल बल नेक न आवै ॥ जो कदापि वा नग सों मग में, इकले भेंट ह्वै जावै ॥ फिरि जानें वह यशुमति ढोटा, कहा कलंक लगावै ॥ याही सोच भई हों दूबरी, धीरज कौन बँधावै ॥ नारायण हरि लाज रखै जो, तौ अब रहने पावै॥१५॥

श्रीजीवचन सखी प्रति।

दादरा।

याहि भली विधि सों लै चलौरी ॥ आस्ताई ॥ नन्दनँदन के नाम सों डरपै, अति भोरी यह गोप किशोरी ॥ यद्यपि हमहूं सब जानति हैं, बिन फागुन वाकी नित होरी ॥ नारायण अब साथ हमारे, लंगर करि न सकै बरजोरी ॥ १६ ॥

सखी वचन गुणवती प्रति।

सोरठ वा रामकली।

तू चलिरी हमारे संग संग ॥आस्ताई॥ अब जिन डरपै वा रसिया के, सुनि सुनिके नये रंग ढंग ॥ तोहि देखि ऐसो को जाके, हिय न लगत अनंग रंग ॥ नारायण सुकुमार साँवरी, तू सुन्दर सब अंग अंग ॥ १७ ॥

समाजी वचन ।

जङ्गला झंझोटी ।

जलकों भरन चलीं ब्रजबाला ॥ आस्ताई ॥ शरद इन्दु सम कान्ति बदन की, लोचन रति पति भाला । तिनके मध्य भेष बनिता को, अति छबि देत गुपाला ॥ नारायण कोऊ न लखै यह, कौतुकी नन्द को लाला ॥ १८ ॥

गुणवती वचन सबसों ।

दादरा ।

या मारग न चलौरी स्यानी ॥ आस्ताई ॥ या मारग वह ठाड़ो ह्वै है, मैं निज मन अनुमान सों जानी ॥ हों तुम को इक गैल बताऊं, जाहि कोऊ नहिं जानत प्रानी ॥ नारायण स्नान ध्यान करि, निरभय भरि लावैंगी पानी ॥ १९ ॥

दोहा ।

अरी सखी मिठबोलनी, लै चलि वाही गैल ॥
जा मारग हम सबन को, लखि न सकै वह छैल ॥ २० ॥

गुणवती वचन ।

दोहा ।

ठुमकि धरति तुम चरण को, नूपुर बजत विशाल ।

सुनि पावैगो सांवरो, आवैगो ततकाल ॥ २१ ॥

गुणवती वचन।

दादरा।

धीरें चलौ तुम गोप लली री ॥ आस्ताई ॥
नूपुर धुनि जो सुनि पावैगो, घेरैगो फिर आय गली री ॥ उरझौ झार कठिन सों सुरझत, हम अबला वह पुरुष बली री ॥ नारायण मग दाँव घात में, लग्यो रहै नित छैल छली री ॥ २२ ॥

सखीजी वचन।

दोहा।

बात कहत खेलत हँसत, बिधुवदनी बर बाम।
जब पहुँची यमुना निकट, बोले छलिया श्याम२३

दोहा।

एक दिन याही ठौर पै, मोहिं रोकियो लाल।
सो तुमसों मैं कहा कहूँ, जा विधि करी कुचाल२४॥

सखी वचन गुणवती प्रति।

दोहा।

पुनि तोसों उन कहा कही, सो सुनिबे को चाव।
प्रगट कहौ तू खोलिके, अब जिन राख दुराव२५॥

गुणवती वचन ।

खम्माच वा कल्याण ।

लंगर की बात सुनों सगरी ।। आस्ताई ।। एक दिना मैं जलकूं आवत, शीस धरें कंचन गगरी ।। याही ठौर मो भेट भई, उन बहुत करी झगरा झगरी ।। नारायण कर झटक पटक घट, घेर लई पनघट डगरी ।। २६ ।।

ईमन कल्याण ।

तुम सुनों छैल की बात ।। आस्ताई ।। बेर बेर मोतन हँसि हेरे, चंचल नैन चलात ।। मैं सकुची कोऊ लखि लेगो, मग में आवत जात ।। नारायण पुनि चरचा होगी, भवन भवन में प्रात ।। २७ ।।

दोहा ।

यों मेरी बैयां गही, यों रूखेपन हेरि ।
यों सिरसों गागरि पटकी, यों ठाड़ो मग घेरि २८ ।।

वार्तिक ।

बतरातही में निज स्वरूप प्रगट करिके आगे ठाढ़े ह्वै रहे ।। २९ ।।

लालजी वचन।

मल्हार।

ठाढ़ी रहौ नव गोपकुमारी ॥ आस्ताई ॥ बिन हमसों बूझें कित जावौ, तुमहीं नई आइ पनिहारी॥ इन घाटन मेरो कर लागे, जानत हैं सगरे नर नारी ॥ नारायण सों बेग चुकावौ, गजगामिनि कटिकेहरि वारी ॥ ३० ॥

सखी वचन परस्पर।

दोहा।

अरी सखी यह छल भयो, हम सब भोरी बाम।
भेद नहीं जान्यौं किनूं, यह छलिया घनश्याम३१

दादरा मल्हार।

कैसे भरें अब जल की गगरिया ॥ आस्ताई ॥ ललित त्रिभंग आगे ह्वै ठाढ़ो, रोकि रह्यो नँदलाल डगरिया ॥ हम याकूं जानत रहीं अबला, यह तौ निकस्यो श्याम झगरिया ॥ नर सों नारि नारि सों नर पुनि, यह कौतुक होय याही नगरिया ॥ तासों कहा बस्यावे जाने, बाँधी निलजताई की पगरिया ॥ नारायण अँगुरी दांतन दे, भई अचरज ब्रजनारि सगरिया ॥ ३२ ॥

सखी वचन ।

दोहा ।

रोकनहारे कौन तुम, हमें गैल नहिं देत ।
हम यहाँके राजा सखी, निज कर तुमसों लेत ३३

सखी वचन ।

झंझोटीका ज़िला ।

चलि परें हटिरे काहे को इतरावै ॥ आस्ताइ ॥ भूषण वसन दधि माखन चुरैया, अब कैसी कैसी बात बनावै ॥ जिनके बसाये तुम उनहीं सों झगरत, निलज न नेक लजावै ॥ नितप्रति धेनु को चरैया नारायण, आज तू भूप कहावै ॥ ३४ ॥

लालजी वचन सखी प्रति ।

देश सोरठ ।

जोबन की माती इठलाती डोलै ग्वालिनि, हमकूं लगावत दोस ॥ आस्ताई ॥ निज कर मांगे बिना मैं तो सों, और कहा लियो खोस ॥ लखि न परत तेरे मनकी गति, छिन में हँसत छिन रोस ॥ नारायण तोसी अबला के, धन्य जो वसत परोस ॥ ३५ ॥

सखी वचन लालजी प्रति।

राग देश।

छाँड़ो मेरी डगर झगर जिन सांवरे मोहि अति देर भई॥ आस्ताई॥ कब की मैं आई जल भरिवे को तैं बिच घेर लई॥ सास ननँदिया देखत संग मोहि, नाम धरेंगी कई॥ यमुना को मिस करि गगरिया सिर धरि, जानैं कहां तू गई॥ लाज को रहिवे कठिन हीं दिखे, कैसी करूं हे दई॥ अब तो मैं जानि चुकी नारायण, होयगी चरचा नई॥ ३६॥

लालजी वचन सखी प्रति।

खम्माच।

जो इतनी तू लाज लजावै॥ आस्ताई॥ घर ही बैठिके जल न भरावत, क्यों यमुना तक दौरी आवै॥ तो समान या ब्रजमंडल में कोऊ नहीं कुलवंति कहावै॥ निज मन कपट वसत नारायण, सास ननँद को दोष लगावै॥ ३७॥

सखी वचन सखी प्रति।

खम्माच।

एरी सखी याकूं हम जाने॥ आस्ताई॥ यह अपनी हठ नाहिं तजैगो, कबसों रोकि रखी हम याने॥ हौं अबला की कौन चलाई, विधिनाहू की

कही नहीं माने ॥ नारायण जोबन गरवीलो, मटकि मटकिके कुटिल भौं ताने ॥ ३८ ॥

लालजी वचन सखी प्रति ।

खम्माच का ज़िला वा रामकली ।

तुमहीं कुलवन्ति मैं देखी आज, मणि गागरि नागरि शीश धरी॥ आस्ताई ॥ दृग मीन से चपल चलत इत उत, मुसिक्यान अधर छल छन्द भरी॥ फरके सब अंग अनंग रंगे, भृकुटी अति कुटिल कमान खरी ॥ तन रोम रोम सों नारायण, चंचल ताई की बरषै झरी ॥ ३९ ॥

वार्त्तिक ।

तब सखी आपसमें कहिवे लगीं, अरी बीर ! याकूं विना कछु दिये छूटबे न पाओगी, ताते यासों बूझो कहा कर मांगे, जब सखीनने बूझी, तब लालजी बोले, सोऊ सुनों ॥ ४० ॥

लालजी वचन ।

कालिंगड़ा ।

सो तुम सुनों सकल सुकुमारी ॥ आस्ताई ॥ मैं नित जल शिवजी पै चढ़ाऊं या बन सघन मझारी ॥ आज गयो म गऊ बिबायवे, एरी रूप

उजारी ॥ ता कारण सों बिना नहाये, मैं नाहिं पूजे त्रिपुरारी ॥ तुम निज निज घट जल सों भरिके, अपनी अपनी पारी॥नारायण चलि शम्भु न्हवावौ, मो बदले ब्रजनारी ॥ ४१ ॥

सखी वचन लालजी प्रति।

दोहा।

हम कबहूँ देखी नहीं, कौन ओर वह ठौर।
जहां विराजत उमापति, देवन के शिरमौर ॥ ४२॥

लालजी वचन।

दोहा।

जो तुम में मुखिया सखी, चलौ हमारे साथ।
ठौर बतावें हम तुमें, जहाँ भवानी नाथ ॥ ४३ ॥

सखी वचन श्रीजी प्रति।

कालिंगड़ा।

तब सखियन नें कही सुनि प्यारी ॥ आस्ताई॥ पहलेही तुम यमुना जल भरिके, जाय पूजि आवौ त्रिपुरारी॥ यह प्रिय वचन सुनत सजनी के, निज हीये हरषी राजदुलारी ॥ नारायण ऊपर के मन सों, मन जाऊं कह भानुकुमारी ॥ ४४ ॥

प्रियाजी वचन सखी प्रति ।

कालिंगड़ा ।

मैं इन के संग इकली न जाऊं ॥ आस्ताई ॥ बीर तिहारे नित तानेनसों, फिर कैसे मैं पीछौ छुटाऊं ॥ जैसी कछू तुम हौ सब जानूं, प्रगट कहते कहा फल पाऊं ॥ नारायण मैं जानि बूझिके, क्यों अपने पट झार लगाऊं ॥ ४५ ॥

सखी वचन श्रीजी प्रति ।

परज ।

साँचैही तुम मन की अति भोरी ॥ आस्ताई ॥ तुमको सदा हमारी ओर सों, बन्यो रहत है बहम किशोरी ॥ हमहूं तौ इकली इकली सब, इन के संग जायँगी गोरी ॥ नारायण फिर तुम क्यों डरपौ, जावौ बेगि भई देर न थोरी ॥ ४६ ॥

वार्त्तिक ।

श्रीजीने कही अरीसखी ! जल तो मैं चढ़ाय आऊं-गी पर तुम कहूं चली मति जैयो. जब कंचन झारी जल सों भरिके प्रीतम के संग चलीं; तब मार्गमें लाल जी ने कही हे प्यारी ! यह सब रचना आपही के मिलिबे कारण रची है, आप मुसिक्याय के बोलीं

सो तौ हम जानें, फिर अपनी प्राणप्यारी कूं वन की शोभा दिखायवे लगे ॥ ४७ ॥

लालजी वचन श्रीजी प्रति।

ज़िला कबित्त।

देखौ प्यारी बिपिनमें, कैसी छबि छाय रही झुकि रहीं लता, अति लगत सुहावनी ॥ आस्ताई ॥ फूले फूल रंग रंग, भँवर गुंजार करें, ठौर ठौर कोकिला बोलत मनभावनी ॥ मृगीनके सहित मृग, डोलत हैं इत उत, चलत पवन तन, तपनि नसावनी ॥ कहैं नारायण गोरी, आपको आगम भयो, तासों बन-राज ने, करी पधरावनी ॥ ४८ ॥

वार्तिक।

यहां सब सखी परस्पर सोचिवे लगीं।

राग ठोडी।

देर भई क्यों न आई प्यारी ॥ आस्ताई ॥ कै कहुँ डगर भूलि गई भोरी, कै मग चलत भयो श्रम भारी ॥ कै पूजन में विलम लगी है, कै बन में निरखत फुलवारी ॥ कै बिरमाय रखी रसिया ने कै अबलों ढूंढत त्रिपुरारी ॥ कै मग में कहूँ कांटो लाग्यौ, कै इकली निज भवन पधारी ॥ कै छिपिरही

खिजावनके हित, नारायण सोचत ब्रजनारी ॥४९॥

समाजी वचन।

दोहा।

घट उठाय उतही चलीं, जहाँ दोऊ बन माहिं।
जाय निहारे द्रुमतरे, ठाढ़े दै गलबाहिं ॥ ५० ॥

दोहा।

सघन लता की ओट तें, छबि निरखत बृज बाल।
भागि सराहत आपनो, पुनि २ होत निहाल ॥५१॥

राग बिलावल।

आज इन दोऊन पै बलि जैये ॥ आस्ताई ॥ रोम रोम सों छबि बरसत है, निरखत नैन सिरैये ॥ रूप रास मृदुहास ललित मुख, उपमा देत लजैये ॥ नारायण या गौर श्यामको, हिये निकुंज बसैये५२

वार्तिक।

फिर सखीं प्रगट होयके बोलीं, बलिहार लालजी महाराज भली पूजा करवायबे आये, तब आप बोले अरी सखी! एक इनकेही जल चढ़ायबे सों भोलानाथ प्रसन्न ह्वै गये, अब तुम भलेही जल भरौ-





तब सखी दंडौत करिके बोलीं, धन्य हा पुजारीजी महाराज ॥ ५३ ॥

दोहा।

यह लीला भक्तन लिये, करत लाडिली लाल।
नारायण गावें सुने, परें न यम के जाल ॥ ५४ ॥

इति श्रीनवपनिहारीलीला श्रीनारायण स्वामीजी कृत सम्पूर्णा ॥ १४ ॥

अथ श्रीश्यामविरहिनी लीलाप्रारंभः।

समाजी वचन।

दोहा।

एक दिवस तिय भेष धरि, परमकौतुकी श्याम।
विरहिनि बनि डोलत डगर, लै लै अपनो नाम॥ १॥

विरहिनी वचन।

दोहा।

प्रीतम तो देखे विना, छिन छिन कल्प बिहाय।
बेगदीजिये दरश अब, मो विरहिनिको आय॥२॥

वार्तिक।

काहू सखी ने इनको देखिके श्रीजी सों जाय कही हे प्यारी! मैं एक अचरज देखि आई हूं। तब श्रीजी ने बूझी कहां, पुनि सखी बोली ॥ ३ ॥

सखी वचन ।

राग देश ।

चलौ तौ बताऊं तुमें भवन के द्वार ॥ आस्ताई॥ एक नारि विरहिनि भई डोलै, तनकी नाहिं सँभार॥ श्याम श्याम मुख नाम रटति है, साँवरी रूप अपार ॥ नारायण ऐसी मोहि दीखति, है बड़ गोपकुमार ॥ ४ ॥

समाजी वचन ।

कुंडलिया ।

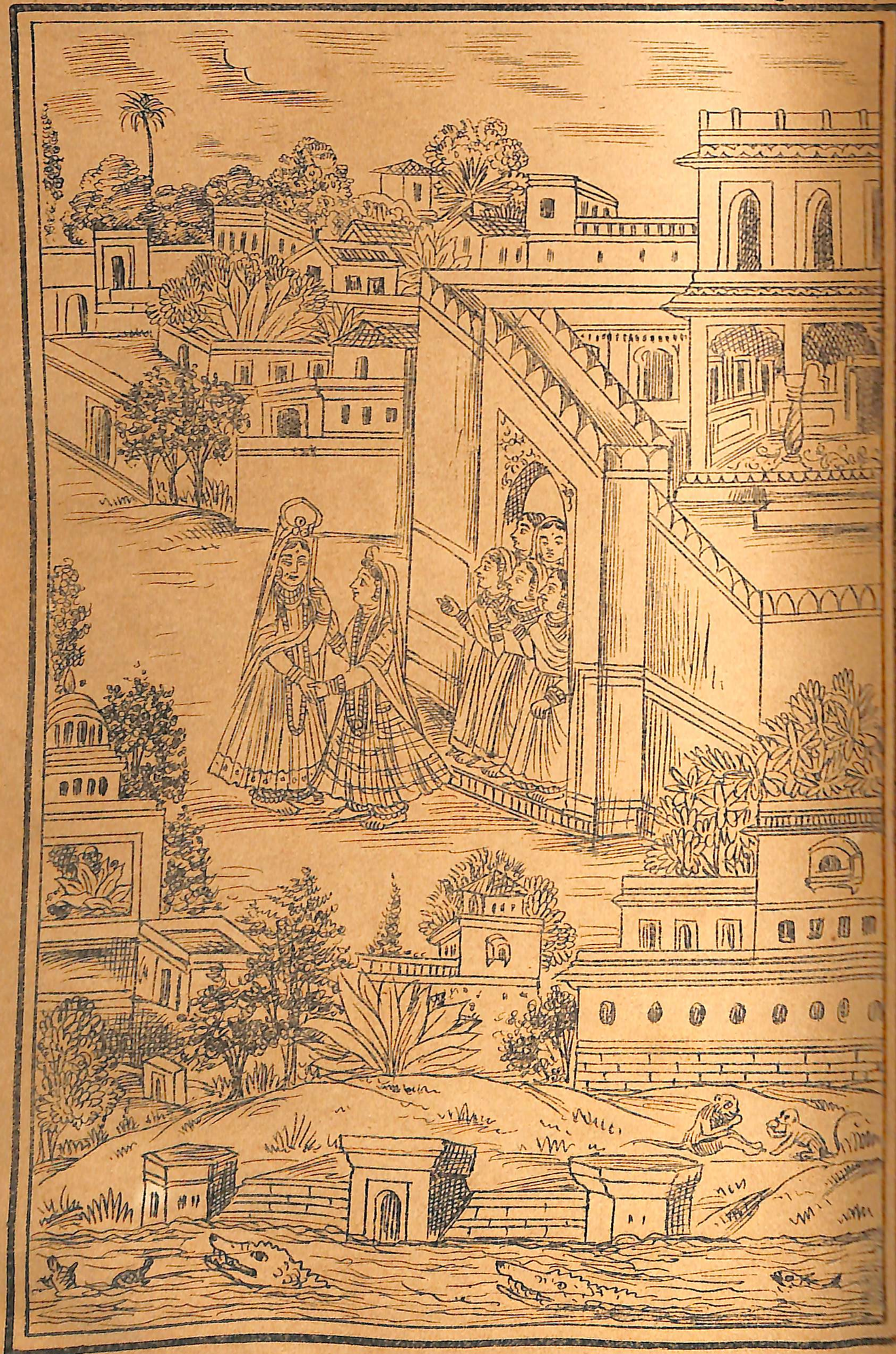
सुनि सजनी के वचन, प्रिया मन में ललचाई ॥ निरखन को वह नारि, द्वार पै दौरी आई ॥ दौरी आई द्वार, देखि वह सखी बिरहिनी ॥ पुनि ताके ढिग गई, आप इकली मृगनैनी ॥ कर गहि बूझत कौन तू, कहा लगाई श्याम धुनि ॥ नारायण तू सांच कहि, हों आई तो दशा सुनि ॥ ५ ॥

श्रीजीवचनविरहिनी प्रति ।

पद सोरठ का ज़िला ।

तोहि डगर चलत कहा भयौरी वीर ॥ कहूं पग की पायल, कहूं सिरको चीर, भई बावरी न कछु सुधि बुधि शरीर ॥ आस्ताई ॥ तेरे मतवारेन सम

चित्र १६.   पृष्ठ ११५



झूमत नैन, मुख भाषति है तू अति बिरह के बैन, मानो घायल काहू ने करी दृगन तीर ॥ मोसों नारायण जिन राखै दुराव, जो तू कहै सोई तेरौ करूं उपाव, जा सों रोगहू घटै हटै सकल पीर ॥ ६ ॥

विरहिनी वचन श्रीजी प्रति।

गिरनारी सोरठ।

मैंने देखीरी आज मोहनकी हँसन ॥ आस्ताई ॥ अधरन पै अद्भुत अरुणाई, मुतियन की लर पाँति दशन ॥ वा शोभा के दृग रहे प्यासे, पीवे लगे भरि भरिकें पसन ॥ नारायण तब सों मोहिं सजनी, सुधि न रही निज बदन बसन ॥ ७ ॥

वार्त्तिक।

प्रियाजीने बूझी अरी! तैने उनकूं कहां देख्योहै॥८॥

साँवरी वचन।

आसावरी।

आज सखी भोरही मैं पनियां गईरी ॥ आस्ताई ॥ सांवरो सलोनों एक बड़े २ नैन जाके, यमुना के तट मोसों भेट भईरी ॥ देखि अति रूप वाको नेह उर हार भयो, ताही समय लाज को तिलांजली दईरी ॥ उन बिन कल न परत नारायण, कैसी घरी लगी लगन नईरी ॥ ९ ॥

श्रीजी वचन बिरहिनी प्रति।

कान्हरा बागेश्वरी।

सखी क्यों बौरी भई है वा छलिया के वियोग॥ आस्ताई॥ भूलिके नाम न लीजो श्याम को, चरचा करेंगे लोग॥ तू सुकुमार कठिन मग नेह को नहिं श्रम तेरे जोग॥ नारायण बिन जाने बूझै तू मति लगावै तन रोग॥ १०॥

बिरहिनी वचन श्रीजी प्रति।

जोगिया आसावरी।

सखी मेरे मन की को जाने॥ आस्ताई॥ कासों कहूं सुने जो चित दै, हित की बात बखाने॥ ऐसो को है अन्तरयामी, तुरत पीर पहँचाने॥ नारायण जो बीति रही है, कब कोई सच माने॥ ११॥

वार्त्तिक।

प्रियाजीने कही, अरी! तू घबरावै मति, नेक धीरज राखि॥ १२॥

बिरहिनी वचन श्रीजी प्रति।

लावनी की राह।

सखी कैसी करूं मैं हाय, न कछु वश मेरो॥ बिन देखें साँवरो चन्द, द्दगन में अँधेरो॥

सखी ऐसो सुन्दर नाहिं कोऊ, मैं सब जग हेरो ॥ वाकी जो लिखै तसवीर, सो कौन चितेरो ॥ सखी कठिन छैल को विरह, आनि मोहि घेरो ॥ सगरी निशि तारे गिनतही, होत सबेरो ॥ सखी जो तू मिलावै आज, वह रूप उजेरो ॥ जबलों जीवोंगी, गुण न भूलूंगी तेरो ॥ सखी नारायण जो न मिलै, वह मन को लुटेरो ॥ तब नन्द द्वार पै, जाय करूंगी डेरो ॥ १३ ॥

दोहा।

नन्द भवन जानू नहीं, एरी राजकुमार ॥
नेक दया करि संग है, लैचलि वाके द्वार ॥ १४ ॥

श्रीजी वचन विरहिनी प्रति।

कालिंगड़ा।

उठि सजनी चली तोहि बताऊं, सन्मुख नन्द को द्वार दिखावै ॥ तू कित धावति है पुर बाहर, मो पीछे भटु क्यों नहीं आवै ॥ एक एतौ हिय में डर मोकूं, जो कबहूं यशुमति लखि पावै॥ नारायण मन में जानेगी, यह सब ब्याधि यही संग लावै ॥ १५ ॥

समाजी वचन।

दोहा।

नन्द द्वारपै गई जब, कपट विरहिनी बाम ।

पुनिपुनिअतिअकुलायके, लेतश्यामकोनाम १६

विरहिनी वचन ।

राग काफ़ी ।

बेदरदी तोहि दरद न आवै॥आस्ताई॥चितवन में चित बस करि मेरो, अब काहे को आँखि चुरावै॥ कबसों परी तेरे द्वारेपै, बिन देखे जियराउकलावै॥ नारायण महबूब साँवरे, घायल करि फिर गैल बतावै॥ १७॥

वार्तिक।

श्रीजी ने कही अरी ! सखी तू तौ यहां बैठि, अरु मैं तो अब जाऊं, कछू तेरे संग मोहि बावरी तौ नहिं होनों, तब बिरहिनी बोली अजी ! अब मैं कैसी करूं, जब श्रीजी ने कही यहां तो यशोदाजी देखेंगी, चलि तोहि और ठौर बैठाऊं वहांसूं तू उनकूं देखि लीजो॥ १८॥

साँवरी वचन।

ईमन कल्यान।

तैंढी बांकी चितवन, सानूं प्यारी लगदी, सांवला मेंढा दिलदार॥ आस्ताई॥ सोहनी सूरत बड़ी

बड़ी अँखियां गल बिच गजमुतियनदा हार ॥ एक नज़र तुसी हँसकर देखौ वारूं में जियरा हजार बार ॥ नारायण असीं रूप दिवानी आय परी अब तैंढे द्वार ॥ १९ ॥

श्रीजी वचन विरहिनी प्रति।

देश का ज़िला।

सखी तू मति ले वाको नाम, नहीं पछितावैगी॥ आस्ताई॥मन कपटी मुख मीठो बोले, कली कली रस चाखत डोलै, ऐसे सों करि प्रीति कहा फल पावैगी॥ मेरी कही तू चित न धरत है, जासों मोहि अब जानि परत है, तू अपने सुन्दर तन रोग लगावैगी ॥ नेह किये कछु हाथ न आवै, लोक लाज कुल धर्म नसावै, नारायण तू नाहक जगत हँसावैगी ॥ २० ॥

विरहिनी वचन।

राग काफ़ी।

बिन देखे मन माने न मेरो॥ आस्ताई ॥ श्याम वरण चित हरन लाड़िलो, रूप सुधा निधि जगत उजेरो॥ चाल मराल मनोहर बोलन, चपल नयन मो तन हँसि हेरो॥ नारायण त्रिभुवन को स्वामी, हों वृषभान कुमरिको चेरो ॥ २१ ॥

वार्तिक।

जब विरहिनी ने अपनेकूं चेरो कह्यो, तब प्रियाजी अचरज मानिके सखी सों बूझिवे लगी, अरी! ललिता यह लुगाई ह्वैके फिरि लोग कैसे बनिवे लगी, जो आप कूं चेरो बनावै, चेरी बने तौ एक बात है ॥ २२ ॥

दोहा।

ललिता लखि नवलालको, बोली सुन शिरमौर।
विन प्रीतम चेरे चतुर, चेरी बनै न और ॥ २३ ॥

सोरठा।

सुनि ललिता के बैन, प्यारी निज मनमें हरष।
मानों छबि को ऐन, पुनि पुनि निरखत लाल मुख ॥ २४ ॥

वार्तिक।

धन्य हौ लालजी महाराज जो काहू की बहू बेटी होते भला काहू को घर तोऊ बसावते ॥ २५॥

श्रीजी वचन लालजी प्रति।

ध्रुपद कान्हड़ा दरबारी।

आज भले बने लाल, अद्भुत नई ब्रज की बाल, दृगन सोहै कजरा, अति मीठी २ करत बात ॥ आ

स्ताई ॥ अँगिया मनमोहन हारी, दामन की शोभा न्यारी, झीनी नव चूनरीमें झलकत है श्याम गात॥ हाथन में चूरी, माथें मुतियन की मांग भरी, कानन में झुमका पग बिछियन धुनि अति सुहात ॥ नारायण बार बार, प्रीतम की छबि निहार, अचरा मुख दैके प्यारी, मंद मंद हँसत जात॥२६॥

वार्तिक ।

लालजी बोले हे प्यारी! आपने तौ कही हुती कि अब तुम्हारे छल में हम कभू न आवेंगी, अब कैसे आईं, श्रीजीने कही तिहारे प्रसन्न करिवे कूं ॥२७॥

दोहा ।

यह लीला श्रीलालकी, चारि पदारथ देत।
नारायण गावे सुनें, युगल प्रीतिके हेत ॥ २८ ॥

इति श्रीश्यामविरहिनी लीला श्रीनारायण स्वामीजी कृत सम्पूर्णा ॥ १९ ॥

अथ युगलछद्मलीला प्रारंभः ।

समाजी वचन ।

दोहा ।

श्याम सखी को भेष धरि, डोलत अपने द्वार ।
नारायण झांकत कभू, अचककिंवार उघार ॥ १ ॥

उतसों आवत लाडिली, संग सखी बहु भीर।
देख सांवरी बिकल सी, बूझति गौर शरीर ॥ २ ॥

श्रीजी वचन सांवरी प्रति ।

कालिंगड़ा ।

सखी तू इत उत क्यों डोल रही ॥ आस्ताई ॥ कै कछु बस्तु गिरी मारग में, कै निज गति छबि तोल रही ॥ कबहुंक नंद भवन को द्वारो, उझकि अचक तू खोलि रही ॥ नारायण नहिं दीखत कोऊ, कौन सों हँसि हँसि बोल रही ॥ ३ ॥

साँवरी वचन श्रीजी प्रति ।

राग देश ।

सखी जबसों नंदलाल निहारे॥आस्ताई॥तबही सों बौरी भई डोलूं, इत उत गली गिरारे ॥ शीस मुकुट शिर पेच रतन को, लसत बार घुँघरारे ॥ खंजन नैन मैन मद गंजन, अंजन रेख समारे ॥ कुंडल लोल कपोल मनोहर, कोटि भानु उजियारे ॥ मानो रूपसिंधु में खेलत, मकरन्द के द्वै बारे ॥ मंद हँसन मुख श्याम बरन छबि, शशिमनोज लखि हारे ॥ दशन पांति ज्यों मुतियन की लर, अधर सोहैं अरुणारे ॥ नाक बुलाक कुटिल बर

भृकुटी, वचन रचन अति प्यारे ॥ नारायण नख
शिख शृंगार करि, ठाढ़े भवन के द्वारे ॥ ४ ॥

श्रीजी वचन सखी प्रति।

सोरठका ज़िला।

मन मोहन जाकी दृष्टि परत, ताकी गति होत
है और और ॥ आस्ताई ॥ न सुहात भवन तन
अशन वसन, बनही कूं धावत दौर दौर ॥
नहिं धरत धीर हिय विरह पीर, व्याकुल भई
भटकत ठौर ठौर ॥ कबहूँ अँसुवन भरि नारा-
यण, मग झांकत डोलत पौर पौर ॥ ५ ॥

सखी वचन श्रीजी प्रति।

राग सोरठ।

जाहि लगन लगै घनश्यामकी ॥ आस्ताई ॥
धरत कहूं पग परत हैं कितहू, भूलि जाय सुधि
धाम की ॥ छबि निहार नहिं रहत सार कछु, घरी
पल निशिदिन याम की ॥ जित मुँह उठै तितै ही
धावै, सुरति न छाया घाम की ॥ कोई करौ निन्दा
कोई अस्तुति, मेड़ तजी कुल ग्राम की ॥ नारायण
बौरी भई डोलै, रहै न काहू काम की ॥ ६ ॥

श्रीजी वचन सखी प्रति ।

राग देश ।

सांवरे की जिन निरखी मुसिक्यान ॥ आस्ताई ॥ सो तौ भई घायल ताही छिन, बिन बरछी बिन बान ॥ कल नाहिं लेत धरत नहिं धीरज, तड़फत मीन समान ॥ नारायण भूली सुधि तन की, बिसर गयो सब ज्ञान ॥ ७ ॥

सांवरी वचन ।

राग झंझोटी ।

सांवरे क्यों मोसों रिस मानी ॥ आस्ताई ॥ तेरे काज घरबार त्यागिके, गलियन फिरत दिवानी ॥ लोक लाज कुल रीति प्रीति जग, इनहूं को दियो पानी ॥ नारायण अब तौ हँसि चितवौ, एरे रूप गुमानी ॥ ८ ॥

श्रीजी वचन सांवरी प्रति ।

राग देश ।

सांवरे वदन छबि सदन मदन मद, गंजन अंजन दृग रेख ॥ आस्ताई ॥ अतिही विकल नहीं जिय में परत कल, जब सों श्यामलियो देख ॥ डोलत डगर बड़ गोप कुमरि है, तजि कुल लाज

विशेख ॥ नारायण नहिं मिटत सखी जो, लिख्यो विधाता लेख ॥ ९ ॥

सांवरी वचन ।

राग काफ़ी ।

यह नैना रिझवार नयेरी ॥ आस्ताई ॥ एक बेर लखि रूप लाल को, तजि घरबार फकीर भयेरी ॥ अब देखे बिन डारत आंसू, युग समान पल बीति गयेरी ॥ नारायण येहू अति चंचल, फल पाये जो बीज बयेरी ॥ १० ॥

श्रीजी वचन ।

दोहा ।

भामिनि तू भोरी निपट, जादू मुख घनश्याम ।
वाकी ओर निहारिके, वस्यो कौन को धाम ॥ ११ ॥

सांवरी वचन ।

राग भैरवी ।

अब मैं कैसी करूंरी बीर ॥ आस्ताई ॥ हौं तो घनो चाहूं न करूं सुधि, मन तो धरत न धीर ॥ जो घायल उन नैन बान के, सो जानत यह पीर ॥ नारायण करि गयो बावरी, सुंदर श्याम शरीर ॥ १२ ॥

श्रीजी वचन ।

दोहा ।

जाकी तू घायल फिरै, निजकुल लाज बिहाय ।
सो अब मेरी समझ में, गयो चरावन गाय ॥ १३ ॥

वार्तिक ।

सांवरी बोली हे सखी ! मैं अब कैसो करूं ॥ १४ ॥

श्रीजी वचन ।

झंझोटीका ज़िला ।

जौलों श्याम विपिन ते आवें ॥ आस्ताई ॥ तौलों तू चलि भवन हमारे, काहू विधि तो मन बहलावें ॥ भलो नहीं यों डगर डोलिवो, बृजवनिता मिलि दोष लगावें ॥ नारायण बलि प्रीति मानिके, हम तेरे हित की समझावें ॥ १५ ॥

सांवरी वचन ।

दोहा ।

गुण मानूंगी आप को, एरी परम सुजान ।
काहू विधि मोसों मिलै, मेरो जीवन प्रान ॥ १६ ॥

वार्तिक ।

तब श्री प्रियाजी इनकूं अपने भवन में लिवाय लेगईं ॥ १७ ॥

समाजी वचन।

दोहा।

वहां जाय पुनि साँवरी, लै लै ठंढे श्वास।
विरहवचनभाषनलगी,श्याममिलनकीआस १८॥

सांवरी वचन।

दोहा।

कब आवेंगे हे सखी, बन ते मोहन लाल।
यों कहिके भुइं पै गिरी, जैसे कोउ बिहाल॥१९॥

श्रीजी वचन।

दोहा।

अरी सखी ये कहा भयो, झटपट देखो आय।
मो माथे याको कहूं, मति कलंक लगिजाय॥२०॥

वार्तिक।

सखी देखिके बोली हे प्यारी! याको तौ यही उपाय है॥ २१॥

दोहा।

आप श्याम को भेष धरि, तनक दूरि पै जाय।
हाथ लकुट कटि पीतपट, आवौ धेनु लिवाय॥ २२॥

वार्तिक ।

फिर यासों हम कहेंगी देखिरी नंदलाल बनतें गऊ चरायके आवें तब याकूं चेत होय गो ॥ २३ ॥

दोहा ।

बहुत भली कहि लाड़िली, धरि प्रीतम को भेष ।
आवत धेनु लिवायके, बंशी शब्द विशेष ॥ २४ ॥

वार्तिक ।

इत में साँवरी कछुक चेत में आयके बोली ॥ २५ ॥

राग काफ़ी ।

लाल तेरे जादू भरे दोऊ नैन ॥ आस्ताई ॥ चितवन में चित बस कर लेवें, मोहनी मंत्र है सैन ॥ अति बांके सुन्दर मतवारे, अनियारे छबि ऐन ॥ नारायण इनके बिन देखे, पल छिन परत न चैन ॥ २६ ॥

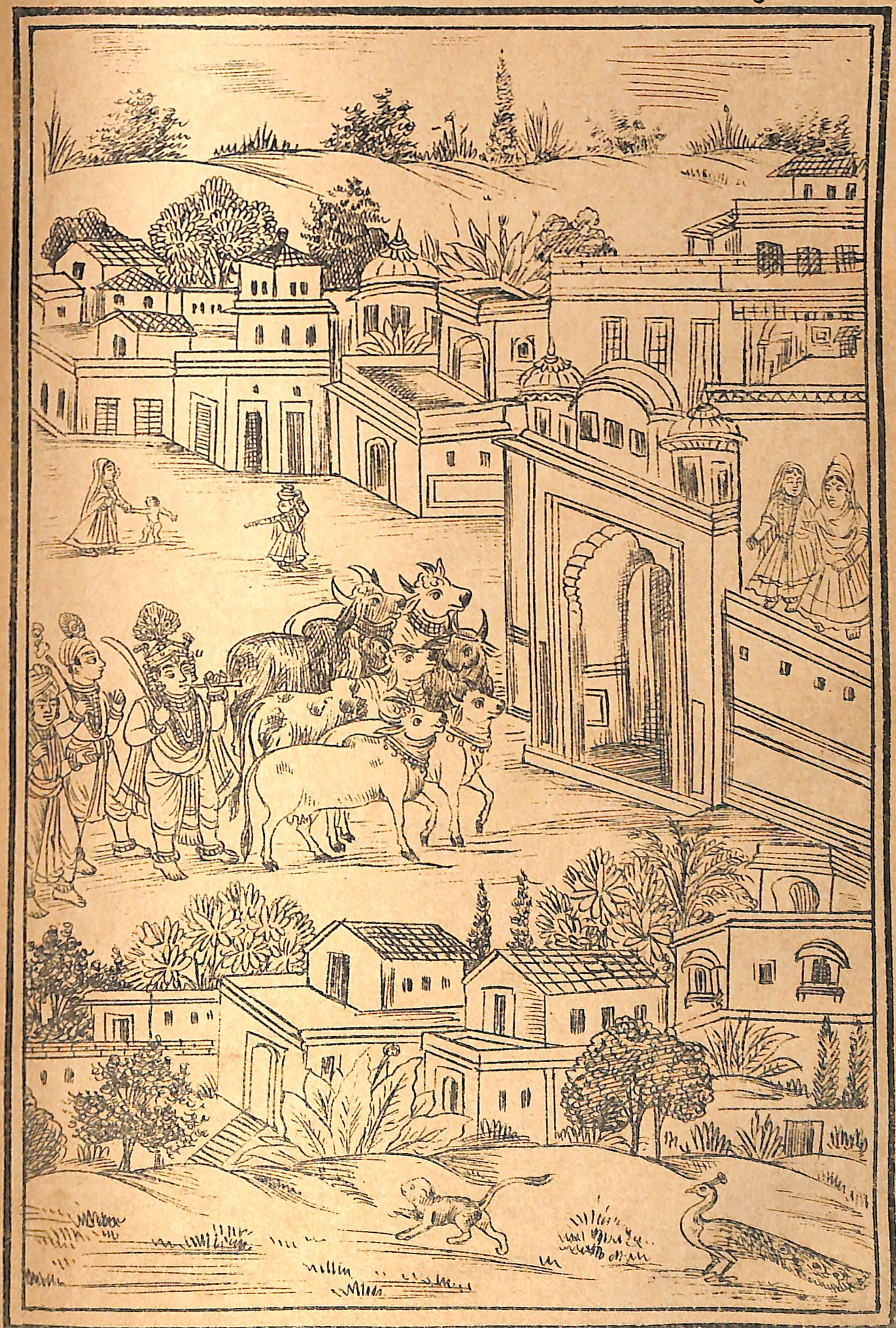
वार्तिक ।

जब श्रीजी प्रीतम भेष सों पधारीं तब सखी बोली ॥ २७ ॥

सखी अरु साँवरी के वचन ।

ध्रुपद रागयमन कल्याण ।

देख सखी नंदलाल, साथ लिये ग्वालबाल, आगे आगे धेनु, पाछे आवत बंशी बजात ॥ आस्ताई ॥



कानन पै कदम फूल, अटपटे चीरी के पेच, घुंघरारी अलकें बदन, गोरज सों अति सुहात ॥ सो शोभा कहि न जाय, जब ये हँसत खिलखिलाय, मानों मुख सों छबि की झरीं, एक संग बरस जात ॥ नारायण एरी बीर, अब नहिं मन धरत धीर, ऐसी मोहि जिय में आवै, झपट मिलूं याके गात ॥ २८ ॥

समाजी वचन ।

दोहा ।

मिलत लाल को सांवरी, गिरी बांसुरी भूम ।
निरखि सखी हँसिवे लगी, मची ठठोलीधूम॥२९॥

वार्तिक ।

फिर सखियों ने वाही भेष सों श्यामसुन्दर को नवदुलहिन अरु श्रीकिशोरीजी को नवदूलह बनायके भांवरे पार, आप बनरा गायवे लगीं ॥ ३० ॥

राग शहानो ।

या बनरे पै मैं जाऊं बलिहारी ॥ आस्ताई ॥ जाहि मिल्यो ऐसो बर सुन्दर, सो बनरी बड़ भागिनवारी ॥ गौर बरन केशरिया बागौ, कटि पटका बांधे जरतारी ॥ शीस मोर माथे पै सेहरा, कानन

में मुतियन छबि न्यारी ॥ हाथन महँदी रची कर कंकन जाहि, निरखि रति पति मतिहारी ॥ नारायण लखि रूप मनोहर, सफल भईं अब आंख हमारी ॥ ३१ ॥

वार्त्तिक ।

ता पीछे युगल सर्कार निकुंज पधारे, सखी अपनी अपनी सेवा पै ॥ ३२ ॥

दोहा ।

भक्ति सुधारस देत है, यह लीला ब्रजनाथ ।
नारायण तजि तरकना, सुने प्रीति के साथ ॥ ३३ ॥

इति श्रीयुगलछद्मलीला श्रीनारायणस्वामीजी कृत सम्पूर्णा ॥ १६ ॥

अथ श्रीप्रथमअनुरागलीला प्रारंभः ।

समाजी वचन ।

दोहा ।

ननँदि भवन दुलरी धरी, लैन चली ब्रजनार ।
अपर सखी बरजन लगी, तू जिन निकसे द्वार ॥ १ ॥

राग देश ।

सखी तोहि ढूँढत है नन्दलाल, कहूं मति जावैरी ॥ आस्ताई ॥ तेरी सों अबही यहां आयो, घनी देर

मोसों बतरायो, तोहि देखिवे कारण फिरि फिरि आवैरी ॥ आज कालि सगरे ब्रज माहीं, रूप वान तेरे सम नाहीं, तेरे वदन के आगे चन्द लजावैरी ॥ नारायण मोहि यह डर भारी, जो वासों भई भेट तिहारी, फिर जाने वह कहा कलङ्क लगावैरी ॥ २ ॥

सखी वचन नवनागरी प्रति।

जैजैवंती प्रभाती।

मेरो कह्यो अब मान सहेली, तू जिन बाहर निकस अकेली॥आस्ताई॥आज कालि तेरे जोबन की घर घर में चरचा है हेली ॥ मनमोहन तेरे निरखनको, डगर बगर नित फिरत नवेली ॥ नारायण वासों बचि आवै, तौ मेरी तू गुरू मैं चेली ॥ ३ ॥

समाजी वचन।

दोहा

समझाई बहु भांति सों, कहिके वचन अनेक।
बरजोरी गोरी चली, कहीन मानी एक ॥ ४ ॥

राग मल्हार।

थोरी दूर जब गई ब्रजनारी॥ आस्ताई ॥ आगे ते आवत मनमोहन, भेट भई तब डगर मझारी ॥ नवशृंगार हँसन अवलोकन, श्याम बरन शशिमुख

छबि न्यारी ॥ नारायण लखि रूप लालको, तन मन की सब सुरति बिसारी ॥ ५ ॥

दोहा ।

लाल गये निज भवन तब, सखी भई गति और ।
नैननसों लखिबे लगी, विकल परी वा ठौर ॥ ६ ॥

विरहिनी वचन ।

राग काफ़ी ।

नैनोरे हितचोर बतावौ ॥ आस्ताई ॥ तुमही रहत भवन रखवारे, बांके बीर कहावौ॥तिहारे बीच गयो मन मेरो, चाहें जितै सों खावौ ॥ घरके भेदी बैठी द्वार पै, दिन में घर लुटवावौ ॥ अब क्यों रोवत हौ दईमारे,कहुं तौ थांग लगावौ॥ नारायण मोहि वस्तु न चहिये, लैनेहार दिखावौ ॥ ७ ॥

दोहा ।

एक सखी निकसी उतै, तिन देखी मग मांहि ।
निकट जाय बूझन लगी, बिरहिनि की गहि बांहि ८

सखी वचन अपर सखीन सों ।

कालिंगड़ा ।

यहां लग नेक आओ ब्रजनारी ॥ आस्ताई ॥ या सजनी को कहा भयो है, लोटति धरनि मँझारी ॥

कै काहू की दृष्टि लगी है, सुन्दर रूप निहारी ॥ कै दृग बान मृगी उर मारे, काहू बड़े शिकारी ॥ भयो कहा याकूं मारग में, सुधि बुधि सकल बिसारी ॥ नारायण कछू कहत न आवै, गोविन्द की गति न्यारी ॥ ९ ॥

सखी वचन नवनागरी प्रति।

सोरठ का ज़िला।

सखी तू कैसे अचेत परी॥आस्ताई॥चीर सँभारि निहारि बावरी, टूटि रही दुलरी ॥ जा बिरियां तू गई ननँद गृह, जानें वो कैसी घरी॥ नारायण मग में कहु डरपी, बात यही सगरी ॥ १० ॥

नवनागरि वचन।

कालिंगड़ा।

सखी तब सों चैन नहिं आवै, जब सों मैं निरख्यो नन्दलाल गल मुतियन माल सुहावै ॥ आस्ताई ॥ घुंघरारी अलकें मुख राजें, कोटि मदन दृग छबि लखि लाजें, कुंडल हलन चलन श्रवणन में बंशी मधुर बजावै ॥ सुधि बुधि हरण बचन हँसि बोलै, चाल मराल इतै उत डोलै, बजत चरण छुम छननन नूपुर ताहू पर मुसि

क्यावै। कर कंकन पहुँची मणि झलकें, देखि स्वरूप लगत नहिं पलकें, नारायण बेसर को मोती लटकत हिये समावै ॥ ११ ॥

सखी वचन।

दोहा।

जितनी तू वा छैल की, सुरति करैगी बीर।
तितनी व्याकुल होयगी, धरि न सकैगी धीर॥ १२॥

नवनागरि वचन सखी प्रति।

राग मल्हार।

नहिं बिसरति सखी श्यामकी सुरतियां॥ आस्ताई ॥ हँसन दशन द्युति दामिनि सी दमकन, चन्द से बदन सों अति मृदु बतियां ॥ कुंडल झलक लखि लगै न पलक, नकबेसरिकी हलन चलन गज गतियां ॥ नारायण जब निरखूं लालकूं, सफल नैन शीतल ह्वै छतियां ॥ १३ ॥

सखी वचन नवनागरी प्रति।

दोहा।

अरी सखी तू बहुत अब, लै न श्याम को नाम।
चरचा होगी जगत में, हँसी करें ब्रजबाम ॥ १४॥

नवनागरी वचन।

रेखता।

मन हरि लियो है मेरो, वा नंद के दुलारे।
मुसिक्यायके अदां सों, नैनों के कर इशारे॥ १॥
इक दृष्टि ही में वाने, जाने कहा कियो है।
नहिं चैन रैन दिन में, वाके विना निहारे॥ २॥
चीरे के पेच बांके, शिर मुकुट झुकि रह्यो है।
कटि किंकिनी रतन की, नूपुर बजत हैं प्यारे॥ ३॥
बेसरि बुलाक सोहै, गल मोतियन की माला।
कंकन जड़ाऊ कर में, नख चंद सों उजारे मन०४॥
छबि देत आरसी से, सुंदर कपोल दोउ।
बरछी समान लोचन, नई सान पै समारे मन०॥५॥
फूलन के हाथ गजरे, मुख पान की ललाई। कानों में मोती बाले, कुंडलहू झलके न्यारे मन०।६॥
लखि श्याम की निकाई, सुधि बुधि सकल गँवाई।
बौरी बनाय मोको, कित गयो वंशी वारे मन० ॥७॥
जन्तर अनेक मन्तर, गण्डा तबीज टोना।
स्याने तबीब पण्डित, करि कोटि जतन हारे॥ मन०॥८॥ नारायण इन दृगनने, जब सों वह रूप देख्यो। तब सों भये हैं ध्यानी, उघरत नहीं उघारे॥ मन०॥९॥ १५॥

वार्तिक।

अरी चुपकी रही बावरी क्यों जगत हँसावे, नेक तौ धीरज राखि ॥ १६ ॥

नवनागरी वचन सखी प्रति।

कालिङ्गड़ा।

सखी यह दृग वा रूप लुभाने ॥ आस्ताई ॥ मचलि रहे शशिमुख निरखन को, जा विधि बाल अयाने ॥ लोकलाज कुलधर्म खिलौना, दिये तऊ नहिं माने ॥ नारायण सोऊ इन फोरे, ऐसे निडर सयाने ॥ १७॥

सखी वचन नवनागरी प्रति।

रागदेश सोरठ।

सखी तू जान दै वाकी अधिक न सुधि कर वीर॥ आस्ताई ॥ है अति ही निर्मोही सांवरो, नहिं जानत पर पीर ॥ प्रीति मांहि फल प्रगट देखि तू ढरकावत दृग नीर ॥ नारायण इतनी न विकल हो, नेक हिये धरि धीर ॥ १८ ॥

नवनागरी वचन सखी प्रति।

झंझोटीका जङ्गला।

श्याम दृगन की चोट बुरीरी॥आस्ताई॥ज्यों ज्यों नाम लेत तुम वाको, मो घायल पै नौन पुरीरी ॥

नाजानूं अब सुधि बुधि मेरी, कौन विपिन में जाय दुरी री ॥ नारायण नहिं छूटत सजनी, जाकी जासों प्रीति जुरी री ॥ १९ ॥

सखी वचन नवनागरी प्रति।

दोहा।

भामिनि तू जाने नहीं, या मारग की सार।
कुल कलंक सब जग हँसै, चरचा ह्वै घरबार ॥ २० ॥

नवनागरी वचन।

राग यमन दादरा।

लगन नहिं छूटै एरी बीर ॥ आस्ताई ॥ ताने देउ भलें नाम धरौ चाहें कोटि करौ तदबीर ॥ क्षण में करत चतुर को बौरा, नृपको करत फ़कीर ॥ नारायण अब कठिन है बचिवौ, बिंधे हिये दृग तीर ॥ २१ ॥

वार्तिक।

तब सखी ने कही अरी ! तू अब घर में चलिके भोजन पानी करि तेरे दुःख दूरि होवे को उपाय करेंगी ॥ २२ ॥

विरहिनी वचन।

कालिंगड़ा।

मोपै कैसी यह मोहनी डारी ॥ चितचोर छैल गिर

धारी ॥ आस्ताई ॥ गृहकारज में जी न लगत है, खान पान लगै खारी ॥ निपट उदास रहति हूं जब सों, सूरति देखी तिहारी ॥ संग की सखी देति मोहिं धीरज, वचन कहत हितकारी ॥ एक न लगत कही काहू की, कहत कहत सब हारी ॥ रही न लाज सकुच गुरुजन की, तन मन सुरति बिसारी ॥ नारायण मोहि समझिबावरी, हँसत सकल नर नारी२३

सखी वचन अपर सखी प्रति ।

राग शहानो ।

तुम ऐसो कछु यतन बिचारो ॥ आस्ताई ॥ जा विधि सों या अति विरहिनि को, आय मिलै ब्रजराज दुलारो ॥ कछु बीति रही अब यापै, को याके बिन जाननहारो ॥ नारायण जौलों जीवैगी, मानेगी गुण अधिक तिहारो ॥ २४ ॥

समाजी वचन ।

दोहा ।

एक सखी उठि तुरतही, लाई श्याम लिवाय ।
विरहिनिसोंकहि देखि री, को ठाढ़ोढिग आय २५

नवनागरी वचन सखी प्रति ।

राग सोरठ ।

सखीरी यह मेरो चितचोर ॥ आस्ताई ॥ भृकुटी



कुटिल बंक अवलोकनि, सुन्दर नवलकिशोर ॥ गैल चलत मैं सहजहिं निरखी, या छलिया की ओर ॥ नारायण जाने कहा कीनो, इन लखि नैनन कोर ॥ २६ ॥

सखी वचन लालजी प्रति।

राग खम्माच।

लाल इती विनती सुनि लीजै ॥ आस्ताई ॥ जा विधि याहि चेत ह्वै तन की, सो उपाय बलि वेगहि कीजै ॥ नहिं सुधि वदन वसन भूषण की, छिन छिन छटा रूप की छीजै ॥ नारायण या अति विहाल को, ज्यों त्यों जीवदान अब दीजै ॥ २७ ॥

वार्त्तिक।

लालजी बोले हमने तो याको कछु नहिं कियो, परन्तु एक मन्त्रं हमको आवै है सो याके कान में कहिवे सों यह अच्छी ह्वै जायगी ॥ २८ ॥

समाजी वचन।

दोहा।

उझकि सखी के कान में, कही लाल यों बात।
बंशीवट यमुना निकट, तोहि मिलूंगो प्रात ॥ २९ ॥

वार्तिक।

या वचन के सुनतेही सखी झटपट उठि बैठी॥ ३०॥

दोहा।

या लीला को जो सुने, करि मन में विश्वास।
नारायण मन कामना, पावै बिना प्रयास॥ ३१॥

इति श्रीप्रथम अनुरागलीला श्रीनारायण स्वामीजी कृत सम्पूर्णा॥ १७॥

अथ चौसरलीलाप्रारंभः।

समाजी वचन।

दोहा।

रैन दिवारी घर बगर, दीपदान चहुँ ओर।
यह शोभा देखन चले, नागर नन्दकिशोर॥ १॥

दोहा।

छबि निरखत ब्रज गलिन की, गये प्रिया के द्वार।
उझकि झांकि खांसन लगे, रसिक रूप रिझवार २॥

सखी वचन श्रीजी प्रति।

राग देश।

प्यारी तेरे काजे कोऊ ठाढौ द्वार॥ आस्ताई॥
है अति चतुर प्रगट नहिं बोलत, खांसत बार-म्बार॥ करत प्रकाश फिरत मन्दिर ढिग, पग

नूपुर झनकार ॥ देखिरी कौन कहांते आयो, बूझि किंवार उघार। निशि आधी मग फिरत पहरुआ, सोवत सब संसार ॥ नारायण या बिरियां को है, बिन ब्रजराज कुमार ॥ ३ ॥

श्रीजी वचन सखी प्रति।

राग कामोद।

सखी मोहि योंहीं करौ बदनाम ॥ आस्ताई ॥ मैं घर सों बाहर नहिं निकसी, नैन न देखे श्याम ॥ पीठि पिछार करौ तुम चरचा, लै लै मेरो नाम ॥ कौन कौन को मुख पकरूं मैं, तुम सब एकसी बाम ॥ झूंठ सांच इत उतै लगावौ, यही तिहारो काम ॥ नारायण अब नेक दया करि, बसन देओ या ग्राम ॥ ४ ॥

वार्तिक।

फिरि सखीन ने मुसिक्याय के कही, हे प्यारी! हमने तौ हँसिके कही है, आप बुरो मति मानों, परन्तु कछु औरहू आपने सुनी है, श्रीलालजी यों कहैं चौसर के खेल में कौन की सामर्थ्य है जो हम सों जीति सकै, जो आप की आज्ञा होय तो उनको बुलायके चौसर में हरावें ॥ और तारी बजावें, राति

दिवारी की है, आपने कछु मुख फेरिके कही, तिहारी राजी ॥ ५ ॥

दोहा ।

एक सखी हँसिके उठी, खोले तुरत किंवार ।
चलौ लाल भीतर भवन, बोलत भानुकुमार ॥६ ॥

अपर सखी वचन लालजी प्रति ।

दोहा ।

तुम चौसर के खेल में, अति प्रवीण हौ लाल ।
आज तनक हमहूं लखें, चतुराई की चाल ॥ ७॥

वार्तिक ।

लालजी बोले बाजी कहा, सखी बोली मैं अपनो लाल या चित्रसारी में छोड़ि देऊंगी जो हारे सो पकरै ॥ ८ ॥

समाजी वचन ।

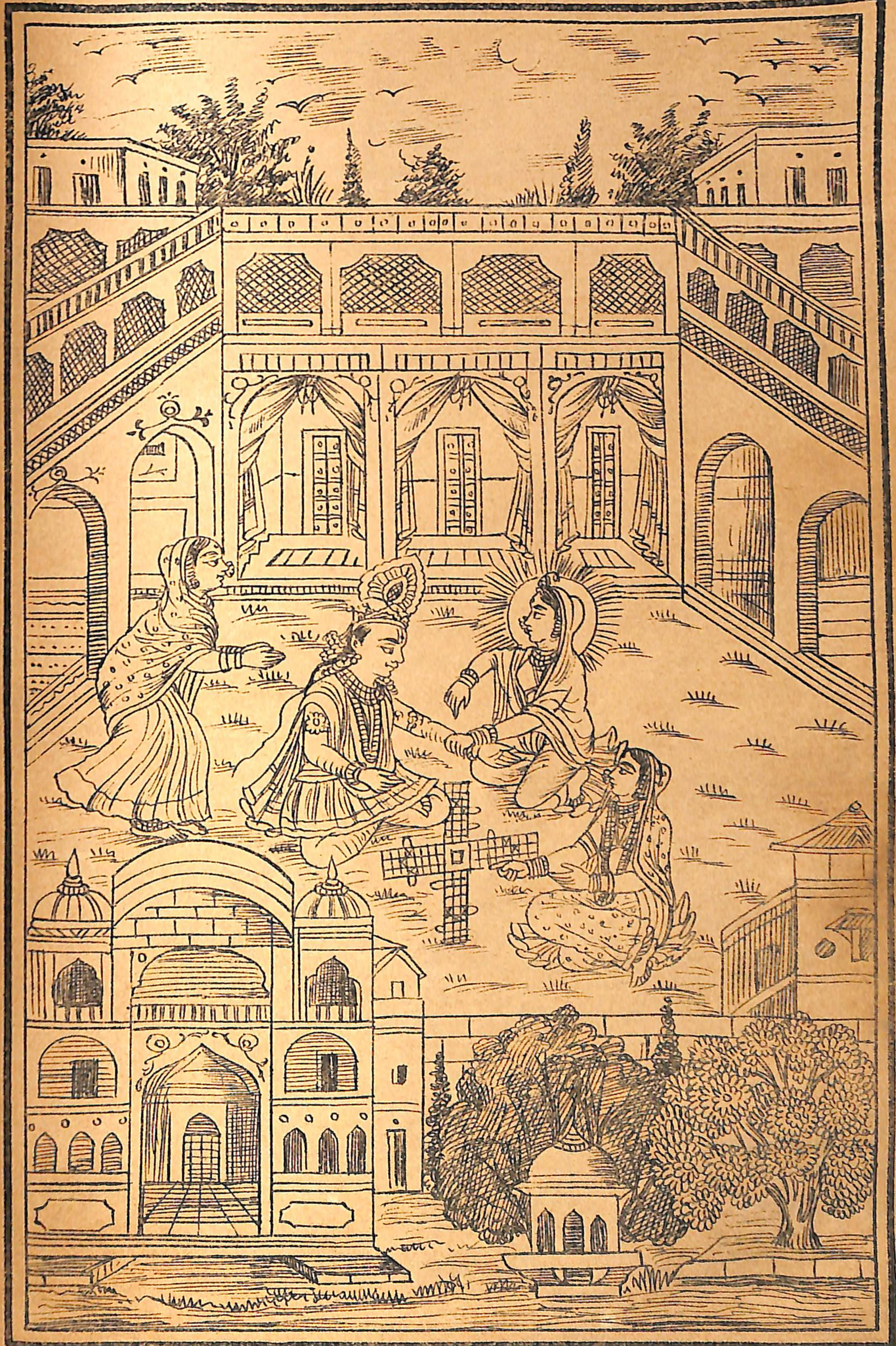
दोहा ।

हँसि हँसि खेलत युगल वर, चाल परस्पर हेरि ।
जीत हार की चोंप पै, डारत पासे फेरि ॥ ९ ॥

सखी वचन परस्पर ।

ध्रुपद दरबारी कान्हड़ा ।

चौसर खेलत हैं आज, गौर श्याम रसिक



राज, ललितादिक ढिग समाज, चाल को बतावैं ॥ आस्ताई ॥ छक्के पँजड़ी अठारैं, कबहुँ परत पूरे बारैं, रंग रंग नरद चलत अतिही शोभा पावैं ॥ प्यारी हिय अधिक चाव, अपनो जब परत दाँव, लपक झपक झटही चोट गोट पै चलावैं ॥ प्रीतम निज देखि हार, झगरत हैं बार बार, नारायण जीति कुमरि सन्मुख मुसिक्यावै ॥ १० ॥

श्रीजी वचन।

राग यमन।

हँसि हँसि प्रीतम सों कहै प्यारी ॥ आस्ताई ॥ मनमोहन अब क्यों खिसियावो, कहा भयो एक बाजी हारी ॥ कहें सुने को बुरो न मानो, तुम समान है कौन खिलारी ॥ नारायण उदास जिन होवो, अबकी ह्वैहै जीत तिहारी ॥ ११ ॥

वार्तिक।

फिर सखीने पींजरे में ते लाल निकासि करि चित्रसारी में छोड़ि दियो, अरु लाल जी सों बोली, अब आप पकरो और हमें तौ नींद लगि रही है, जायके सोवें, तब श्रीजी ने कही गवाह कौन रहैगो, सखीं बोलीं गवाह आप रहौगी, या प्रकार कहिके किंवार मूँदिके चिक डारी दई ॥ १२ ॥

दोहा ।

ये लीला ब्रजचन्द की, श्रवण करै जो नित्त ।
नारायण प्रीतम प्रिया, बसिहैं ताके चित्त ॥ १३ ॥

इति श्रीचौसर लीला श्रीनारायण स्वामीजी
कृत सम्पूर्णा ॥ १८ ॥

अथ सखीखण्डिता लीला प्रारंभः ।

वार्तिक ।

एक समय श्री लालजी महाराज ब्रजगलियन की शोभा निरखते हुये चले जाते रहे, मार्ग में एक सखी अपनी अटारी की खिरकी में ते उझकिके बोली ॥ १ ॥

सखी वचन ।

दोहा ।

आज अकेले या समय, कहां पधारे श्याम ।
नेक हमारे भवनहूं, आय करौ विश्राम ॥ २ ॥

लालजी वचन ।

दोहा ।

तनक देरमें बगदिके, आऊंगो तो पास ।
मृगनैनी अब राख तू, मो वचनन विश्वास ॥ ३ ॥

समाजी वचन।

दोहा।

आप गये प्रिय के भवन, यहां सखी बेचैन।
छिन भीतर छिन द्वार पै, बीति गई सब रैन॥ ४॥

सखी वचन।

राग कालिंगड़ा वा खट।

श्यामसुन्दर अबहूं नहिं आये॥ आस्ताई॥ दीपकी जोत उदास लगत है, तारागण सब गगन बिलाये॥ अरुणशिखा बोलत हैं कब सों, फिरत न पहरू पथिक मग धाये॥ कमलनके मुख खिले चहत हैं, फूल कमोदिनि के मुरझाये॥ गोरसमथन लगीं ब्रज बनिता, मिल चकई चकवा हरषाये॥ नारायण पियको बिरमाके, किन सजनी निज भाग मनाये॥ ५॥

समाजी वचन।

दोहा।

बड़े भोर आई सुरति, रसिक शिरोमणि श्याम।
बाट निहारत होयगी, उत में वह ब्रजवाम॥ ६॥

दोहा।

पीताम्बर की भूल में, नीलाम्बर तन धार।

नूपुर शब्द बचायके, पहुचे वाके द्वार ॥ ७ ॥

और सखी वचन या सखी प्रति ।

कालिंगड़ा ।

उठि देखि सखी छबि नन्दलाल ॥ आस्ताई ॥ मींडत नैन उनींदे रैन के, आवत हैं डगमगी चाल॥ पगिया पेच ह्वैरहे ढीले, अलकावलि वर बिथुरी भाल॥ नारायण प्रीतम की शोभा, तू लखिके होगी निहाल ॥ ८ ॥

राग खट ।

देखि सखी प्रीतम की शोभा, निज नैनन को भाग मनारी ॥ आस्ताई ॥ अद्भुत देत बहार बदन पै, बिथुर रहीं अलकें घुँघरारी ॥ मुख भोरापन दृग अलसाने, कोटि मदन कीज बलिहारी ॥ मानों चंचलता तजि खंजन, राजत ललित रूप फुलवारी॥ लेत जँभाई बजावत चुटकी, छाय रही तन रैन खुमारी ॥ नारायण यह छबि निहारिके, को न मोहै जग में नर नारी ॥ ९ ॥

सखी मुसिक्यायके लालजी सों बोलीं ।

कालिंगड़ा ।

तुम कौन के भवन सों आये श्याम ॥ आस्ताई॥

पलटी माल नीलपट कांधे, योंहीं मिल्यो है कि दिये दाम ॥ पीक कपोल अधर दृग अंजन, यह लीला भई जाके धाम ॥ नारायण काहेको दुरावौ, प्रगट कहौ क्यों न वाको नाम ॥ १० ॥

लालजी वचन।

कुण्डलिया।

रात गयो मैं भूलि भवन की, गैल तिहारी ॥ भ्रमत रह्यो सब ठौर बूझतौ घर घर नारी ॥ बूझत घर घर नारि, काहू नहिं पतौ बतायो ॥ तुमहूं मेरे काज राति, अतिशय दुख पायो ॥ औरहु जो मोसों भई, सो बरनत सकुचात ॥ नारायण योंहीं फिरत, बीति गई सब रात ॥ ११ ॥

कालिंगड़ा।

तेरे भवनकी गैल भुलायो ॥ आस्ताई ॥ फिरत रह्यो सगरी निशि खोजत, तोऊ पतौ न कहूं मैं पायो ॥ एक ठौर मोहि चोर जानि के, बोले इन कछु माल चुरायो ॥ पुनि मेरे पकरन को दौरे, मैं इक घरजुधस्यौ घबरायो ॥ वा घरवारी दयावन्त नें, मेरो पीताम्बर दुबकायो ॥ निज नीलाम्बर मोय उढ़ाके, तुरतहि भामिनि भेष बनायो ॥ तौलों

पकरनहारहु पहुँचे, तिने देखि मोहि वचन सुनायो॥ लैजारी अपनी मणिमाला, बहुत तगादौ मोहि न भायो ॥ पुनि दीपक लै खोजत चोरैं, मैं तब दाँव आपनो पायो ॥ नारायण झट निकसि बहां ते, ज्यों त्यों प्रात यहां लों आयो ॥ १२ ॥

लालजी वचन ।

राग काफ़ी ।

. दृग मींड़त काजर लग्यो हाथ ॥ आस्ताई ॥ मुख पोंछत लाग्यो अधरन पै, अधर पान रँग हाथ साथ ॥ पुनि सोई कर लग्यो कपोलन, कहूं हाथ धरि तेरे माथ ॥ नारायण या भाँति सखी को, समझावत रसिकन को नाथ ॥ १३ ॥

सखी वचन सखी प्रति ।

बागेसरी कान्हड़ा ।

मेरे री आये मनहूं के भाये, प्रीतम प्रान ते प्यारे ॥ आस्ताई ॥ ता मग पै बलिहार जाऊं मैं, जा मग लाल पधारे ॥ मधुरे वचन रचन अति जादू, मनके मोहन हारे ॥ नारायण यह धन्य घरी पल, इन दृग श्याम निहारे ॥ १४ ॥

वार्तिक।

ता पीछे परम रिझवार ने फूलनके गजरे गूँथिके सखी को पहराये, जब सखी शृंगार करिबे लगी, तब आप दर्पन दिखायवे लगे, यह शोभा अपर सखी छिपिके देखि रही हुती, पुनि प्रगट ह्वैके बोली ॥ १५ ॥

सखी वचन सखी प्रति।

राग कान्हड़ा।

तू है सखी बड़भाग भरी, नन्दलाल तेरे घर आवत हैं ॥आस्ताइ॥ निज कर गूंथि सुमनके गजरे, हरषि तोहि पहरावतहैं ॥ तू अपनो शृंगार करत जब, दर-पन तोहि दिखावत हैं ॥ आनन्द कन्द चन्द मुख तेरो, निरखि निरखि सुख पावत हैं ॥ जाके गुण सब जगत बखानत, सो तेरो गुण गावत हैं ॥ नारा-यण बिन दाम आज कल, तेरेही हाथ बिका-वत हैं ॥ १६ ॥

लालजी वचन।

दोहा।

अब हम घर जावें सखी, नूपुर लेयँ उतार।
इनकी धुनि सुनि करेंगी, तो चरचा ब्रजनार॥१७॥

सखी वचन ।

कालिंगड़ा ।

प्रीतम नूपुर मति ना उतारो ॥ आस्ताई ॥ इनकी धुनि सुनि पारपरौसिन, कहा करेंगी हमारो ॥ भले करो जग चरचा मेरी, तुम निज प्रण नहिं टारो ॥ नारायण जे शरण चरण की, तिने न कीजै न्यारो ॥ १८ ॥

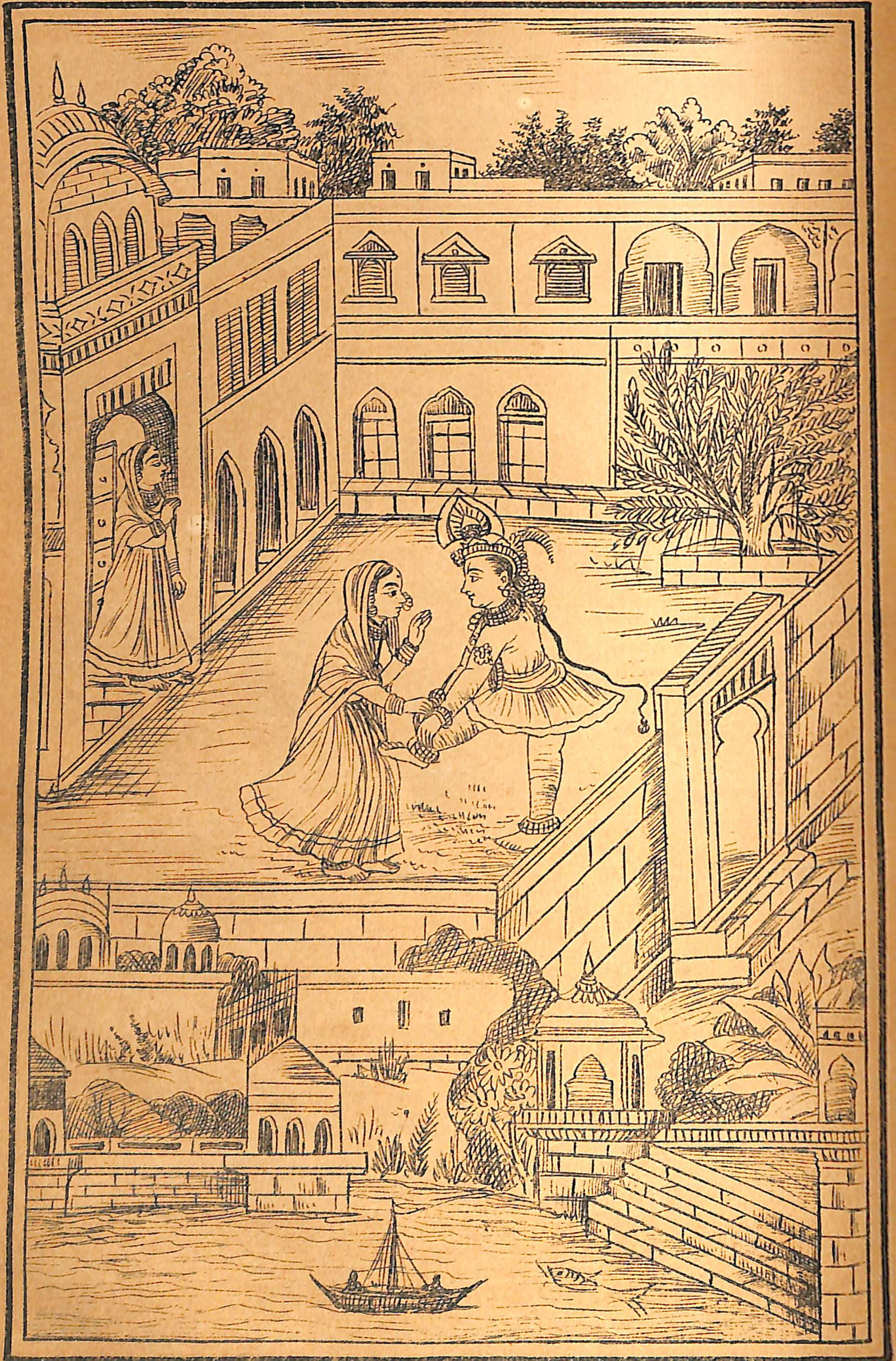
वार्तिक ।

सखी बोली हेप्यारे ! जो आप शरणागतको त्यागोगे तौ आपको प्रण जातो रहैगो, फिर कोई जीव आपके चरणकी शरणमें न आवैगो, क्योंकि वे कहैंगे, कि नूपुर जो बहुत दिनोंसे लालजीके चरण की शरण लग रहेथे, उनको ही त्यागदियो, तो हम नयोंको चरणोंकी शरणमें काहेको राखेंगे और बिना शरण आये जीवोंका कल्याण कैसे होयगो. इसलिये मेरी जगत्में निंदा होय तौ भलेही होय, परंतु आप शरणागतको मत त्यागो, भलेही नूपुर बजायें जाओ, आपकी प्रतिज्ञा न जावै ॥ १९ ॥

समाजी वचन ।

दोहा ।

मुसिक्याये सुनिके वचन, सांचे मनके मीत ।



गये सखी ते बिदा ह्वै, देखि प्रीति की रीत ॥ २० ॥

दोहा।

ये लीला श्रद्धा सहित, जो जन सुने सुनाय।
नारायण भवसिन्धु ते, बिना यत्न तरि जाय॥२१॥

इति श्रीखण्डिता लीला श्रीनारायण स्वामीजी कृत
सम्पूर्णा ॥ १९ ॥

अथ वंशीलीला प्रारंभः।

समाजी वचन।

राग आसावरी।

हंसै मोती चुगावत प्यारी ॥ आस्ताई ॥ पुचकारत कर कमल फेरके, भूख लगी तोहि भारी ॥ जित जित चलत बजावत चुटकी, गजगामिनि सुकुमारी । तितहिं तितहिं वुह अति प्रिय बोलत, डोलत फिरत पिछारी ॥ कबहुँ बुलावत निकट आपने, डरपावत दै तारी ॥ नारायण या विधि सों खेलत, श्रीवृषभान कुमारी ॥ १ ॥

समाजी वचन।

दोहा।

वंशी धुनि सुनि कुमरिको, रही न तन की सार।
कित हँसिबौ कित बोलिबौ, कितै हंस सों प्यार २॥

वार्तिक ।

सखीने बूझी हे प्यारी! कहा भयो आपने कही॥३॥

राग मल्हार ।

नन्दनन्दन वन बंशी बजाई री ॥ आस्ताई ॥ श्रवण करत सुधि रही न तन की, एक संग मो मति बौराई री । नयन चकोर चहत निरखनको, शरद चन्दमुख कुँवर कन्हाई री ॥ नारायण नहिं भवन सुहावत,कहा करूं अब एरी माई री ॥ ४ ॥

राग देश अथवा आसावरी ।

बंशी नहीं यह सौति है दारी ॥ आस्ताई ॥ याहीने गृहकाज भुलाये, सुधि बुधि सब हरि लई हमारी ॥ जे कुलवन्ति प्रवीण नारि जग, धीरज धर्म पतिव्रत वारी ॥ तिनहूं की इन लाज बिगोई, वन वन फिरत हैं वदन उघारी ॥ नारायण हमतौ नित तरसें, यह भई अधरन की अधिकारी ॥ कैतौ यही रहैगी ब्रज में, कै ब्रजमें बसिहैं ब्रजनारी ॥ ५ ॥

दोहा ।

अरी सखी कितकों बजी, बंशी चितकी चोर ।
मो मन ऐंचत आप को, ज्यों चकई को डोर॥६॥



सखी वचन श्रीजी प्रति।

दोहा।

मैं आई लखि लालको, इकले धीर समीर।
कदम तरे ठाढ़े हुते, सुन्दर श्याम शरीर ॥ ७ ॥

श्रीजी वचन।

कान्हरा बागेसरी झपताला।

चलोरी आज ब्रजराज मुख निरखिये, जगत की लाज सों काज नहिं सरैगो ॥ आस्ताई ॥ बहुत कोई कहैगो श्याम के ढिग गईं, याहूते अधिक पुनि और कहा करैगो॥ नाचिवे लगीं तो फेरि घूंघट कहा, सूर रण चढ़े पै कौन सों डरैगो ॥ बेगि निज प्यारेते मिलो नारायण, बहुरि ऐसो सखी दाँव कब परैगो ॥ ८ ॥

सखी वचन श्रीजी प्रति।

राग काफ़ी।

निज प्रीतम की तू छबि निहार ॥ आस्ताई ॥ श्याम बरन लखि लजत नीलमणि, सुंदरता मुख पै अपार ॥ भृकुटी कुटिल मधुर मुसक्यावन, चितवन की कछु नई ढार॥ नारायण कटि पै कर धरिके, ठाढ़े पकरिके कदम डार ॥९॥

प्रियाजी वचन ।

कालिंगड़ा ।

मोहन वसि गये मेरे मन में ॥ आस्ताई ॥ लोक लाज कुलकानि छूटि गई, इन की लगन लगन में ॥ जित देखूं तितही यही दीखें, घर बाहर आँगनमें ॥ अंग अंग प्रति रोम रोम में, छाय रहे सब तन में ॥ कुण्डल झलक कपोलन सोहै, बाजूबंद भुजन में ॥ कंकन कलितललित मणिमाला, नूपुर धुनि चरणन में ॥ चपल नयन भृकुटी वर बांकी, ठाढ़े सघन लतन में ॥ नारायण बिन मोल बिकी मैं इनकी नेक हँसन में ॥ १० ॥

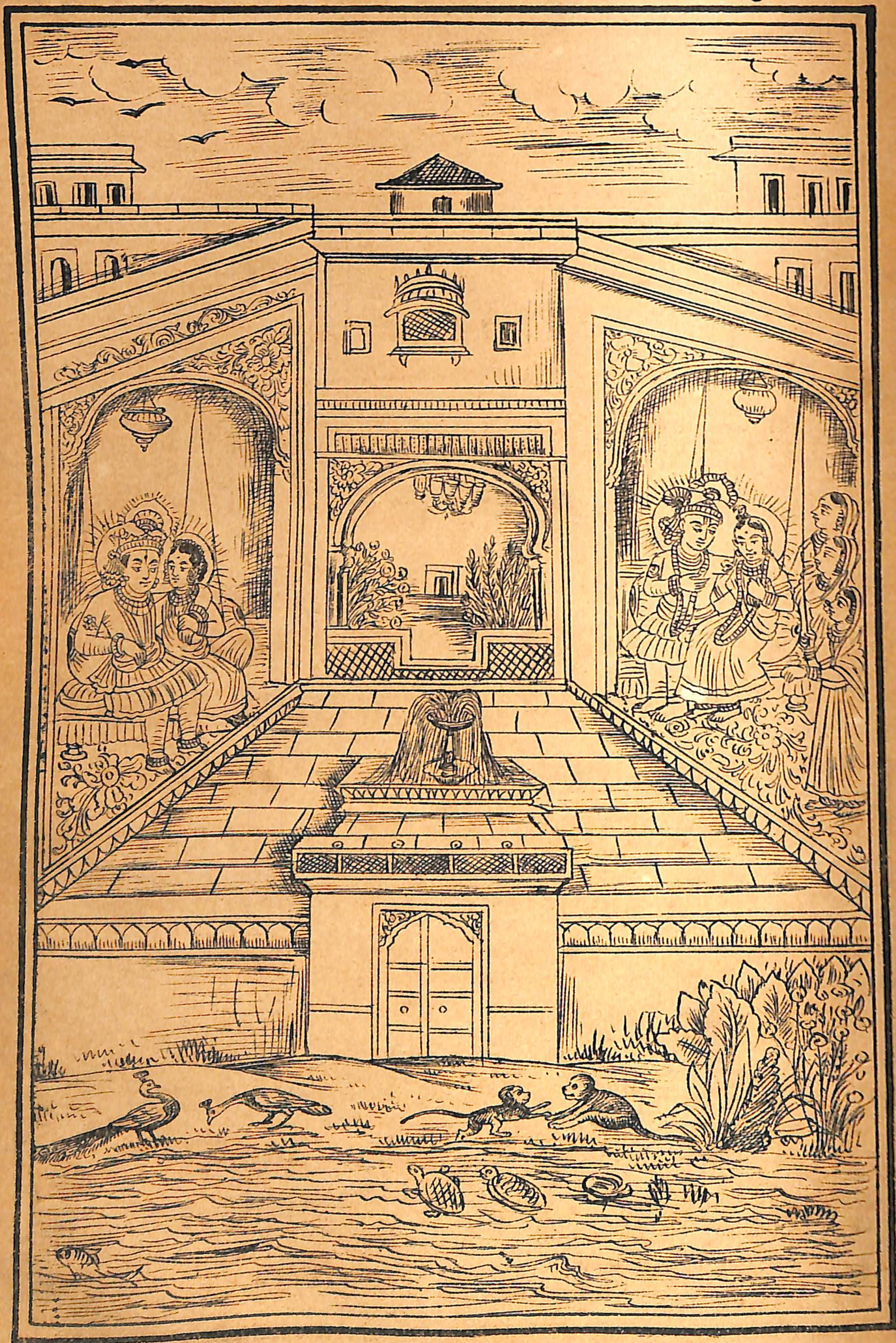
श्रीजी वचन लालजी प्रति ।

राग धनाक्षरी ।

सखीरी यह नवरूप उजारो ॥ आस्ताई ॥ पिछिलेपन पायो यशुमति ने, पुण्य प्रताप तिहारो॥ लगि न जाय कहुं दृष्टि हमारी, अधिक न याहि निहारो ॥ नारायण छबि धाम श्याम पै, राई नौन उतारो ॥ ११ ॥

वार्तिक ।

तब लालजी बोले, हे प्यारी! आपकी सुदृष्टि सों कबहूँ दृष्टि न लगैगी ॥ १२ ॥



दोहा।

लीला युगल स्वरूप की, दुखभंजन सुख दैन।
नारायण जे नित सुने, गावें पावें चैन ॥ १३ ॥

इति श्रीबंशीलीला श्रीनारायण स्वामीजी
कृत सम्पूर्णा ॥ २० ॥

अथ निकुञ्जहिंडोरालीलाप्रारंभः।

समाजी वचन।

राग भैरों।

आज दोऊ जागे अति अलसात ॥ आस्ताई ॥
मूंदे नयन अटपटे बैना, नहिं सम्हार निज गात ॥
नींद विवश ह्वै बूझत प्यारी, सांझ भई कै प्रात ॥
कहन चहत हैं भोर सांवरो, मुखते निकसत रात ॥
झूमत गिरत परस्पर ऊपर, देखि सखी मुसिक्यात ॥
नारायण या अद्भुत छबि कूं, निरखत दृग न अघात ॥ १ ॥

वार्तिक।

ता पीछे सखीननें प्रिया प्रीतमको स्नान कराय अद्भुत शृंगार करिके नाना प्रकारकी सामग्री भोगधरी ॥ २ ॥

समाजी वचन ।

दोहा ।

रुचि सों जेंवें युगलवर, लै अचमन हरषात ।
बीरी दै मुख परस्पर, पुनि पुनि मृदु मुसिक्यात ३

वार्त्तिक ।

फिर सखीनने प्रार्थना करी, आज आप काँचके भवनमें हिंडोरा झूलें और हम सुस निरखें, आप मुसिक्यायके बोले, चलो सखी ॥ ४ ॥

समाजी वचन ।

दोहा ।

झूलत रंग हिंडोरना, पिय प्यारी मिलि संग ।
अली झुलावत गायके, अतिहि प्रफुल्लित अंग ॥५॥

सखी गायवे लगीं ।

राग मलहार ।

देखि युगल छबि सावन लाजै ॥ आस्ताई ॥ उत घन इत घनश्याम लाड़िलो, उत दामिनि इत प्रिय संग राजै ॥ उत वरषत बूंदन की लरियां, इत गल मुतियन हार विराजै ॥ उत दादुर इत बजत बांसुरी, उत गरजत इत नूपुर बाजै ॥ उत रंग के बादर इत बागे, उतै धनुष वनमाल इत साजै ॥ उत घनघुमड़

इतै दृग घूमत, नारायण बरषा सुख आजै ॥ ६ ॥

सखी वचन परस्पर।

राग मल्हार।

आज दोऊ झूलत मुसिक्यावत॥आस्ताई॥औरहु बात लखी तें सजनी, सैनन माहिं कछू बतरावत ॥ मेल कपोल अधर धर बंशी, एक संग पुनि दोऊ बजावत ॥ बजत नहीं झगरत आपस में, निरखि सखी अतिशय सुख पावत ॥ निज प्रतिबिम्ब देखि दरपन में, भानुलली मन में सकुचावत ॥ बूझत पिय सों यह को झूलत, जो निज छबि सों हमें लजावत ॥ हँसत श्याम प्रियकूं लखि भोरी, कंठ लगाय बहुत समझावत ॥ नारायण हठ तजत नहीं जब, सन्मुख ते सखी काँच हटावत ॥ ७ ॥

समाजी वचन।

दोहा।

प्यारी निज प्रतिबिम्ब लखि, सकुच गई मन माहिं।
तब प्यारो हँसि हँसि परत, दै प्रिय के गलबाँहिं॥८॥

दोहा।

यह लीला नित सुने सों, कृपा करे घनश्याम।
वृन्दावन को वास दें, और आपनों नाम ॥ ९ ॥

इति श्रीनिकुंजहिंडोरा लीला श्रीनारायण
स्वामीजी कृत संपूर्णा ॥ २१ ॥

अथ शयन लीला प्रारंभः ।

समाजी वचन ।

दोहा ।

एक समय रसरास में, निरतत प्यारी पीय ।
अधिक रैन पुनि गई जब, बोली पिय सों प्रीय ॥ १ ॥

प्यारी वचन ।

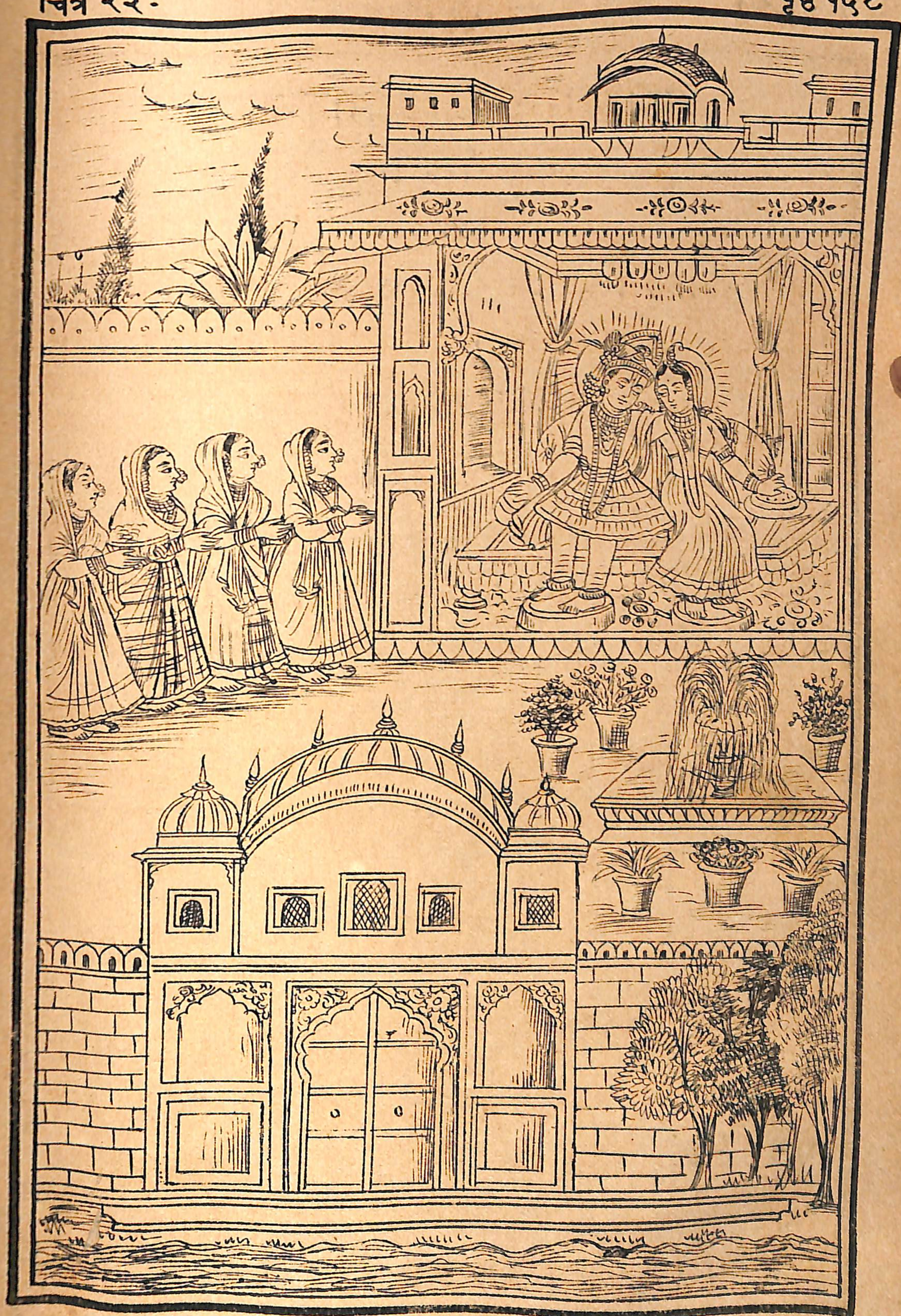
दरबारी कान्हड़ा ।

प्रीतम वेगि निकुंज पधारो ॥ आस्ताई ॥ रजनी बहुत गई या सुख में, अधिक न रस विस्तारो ॥ अति आलस वश दीखत प्यारे, कोमल वदन तिहारो ॥ दृग झूमत पग डगमगात उत, बोल शिथिल है न्यारो ॥ रास विलास करत श्रम पायो, ताकूं तनक निवारो ॥ नारायण जीवन अधार तुम, मोनयनन को तारो ॥ २ ॥

सखी वचन

राग देश ।

युगल छबिदेखि मेरो हियरा सिरात ॥ आस्ताई ॥ नींद भरे मग चलत झूमिके, शिथिल भये सब गात ॥ कह्यो चहत कछु कढ़त कछू मुख, कहत कहत रहि जात ॥ नारायण या विधि निकुंज में पहुँचे अति अलसात ॥ ३ ॥



सखी वचन और सखी प्रति।

राग जैजैवन्ती।

आज बिराजि रहे मणिमंदिर, नंदनन्दन वृषभान किशोरी॥ आस्ताई॥ केलि करत युग याम गई निशि, लेत जम्हाई सांवरो गोरी॥ अति आलस वश झूमत दोऊ, बात करत मुख अटपटि भोरी॥ नारायण सोई बड़भागी, जो नित निरखत है यह जोरी॥ ४॥

समाजी वचन।

दोहा।

हँसि रस में गइ अर्द्ध निशि, भये नींद वश नैन।
अलसाने झूमत झुकत, कहत अटपटे बैन॥ ५॥

सखी वचन।

आशीष।

जैजैवन्ती अथवा विहाग।

आनन्द रहौ दृगचन्द दोऊ, शुभ सगुन सदा तुमको आवैं॥ आस्ताई॥ नितही रसकेलि करो मिलिके, हम निरखि निरखि अति सुख पावैं॥ यह धन हम से रंकन को मिल्यो, हम कहांलो विधि के गुण गावैं॥ नारायण अब आशीष करें, तुमहूं पौढ़ो हमहूं जावैं॥ ६॥

वार्त्तिक।

अर्थात् आज्ञानुसार अपनी २ सेवा पै ॥ ७ ॥

दोहा।

लीला श्रीब्रजचन्द की, यामें रस संयोग।
नारायण जे नित सुने, बड़भागी ते लोग ॥ ८ ॥

इति श्रीशयनलीला श्रीनारायण स्वामीजी
कृत संपूर्णा ॥ २२ ॥

अथ साँवरी छद्म झूलन लीला प्रारंभः।

समाजी वचन।

दोहा।

जहाँझुलति रहि लाड़िली, गये तहां घनश्याम।
बोली प्रिय अबलान में, कहा पुरुष को काम ॥ १ ॥

वार्त्तिक।

लालजीने कही हे प्यारी ! यह हमारी भूल समझो जो यहां आये, अब चले जायँगे ॥ २ ॥

समाजी वचन।

दोहा।

अति प्रवीण छलछंद में, रसिकनके शिर मौर।
वानिता भेष बनायके, फिरि पहुंचे वा ठौर ॥ ३ ॥



लालजी वचन।

राग मल्हार।

एरे दई मैं यहां क्यों आई॥आस्ताई॥कोऊ नहीं कहि झूलरी तुमहूँ, अतिही कठोर यहां की लुगाई॥ मैं अपनी सम जानत सब कूं, याही धोखे रही भुलाई॥ नारायण निज भवन चलूं अब, या झूलन तें बहुत अघाई॥ ४॥

श्रीजी वचन सांवरी प्रति।

दोहा।

हँसि कर बोली लाडिली, सुनरी सांवर अंग॥
तू उदास जिन हो सखी, झूलि हमारे संग॥५॥

सखी गावये लगीं।

राग झंझोटी।

ये दोउ झलें री मन के मोहन हार॥आस्ताई॥
सजनी एक सांवरे रँगकी, संग वृषभान कुमार॥
सावन मास सुहावन भावन, फूल रही फुलवार॥
रेशम डोर जड़ाऊ पटली, सघन कदम की डार॥
गर्जत घन चमकत है चपला, बूँदन परत फुहार॥
ठौर ठौर मिलि मोर नचत हैं, या सुखको नहीं पार॥
भाँति भाँति के पक्षी बोलें, शीतल चलत बयार॥
फले कमल सरोवर माहीं, भ्रमर करत गुंजार॥

चहूं ओर छाई हरियाली, अद्भुत विपिन बहार ॥
लिपटि रहीं बरबेलि द्रुमन सों, हरषत युगल निहार ॥
बरन बरन के लाल सोसनी, सखियन किये शृँगार
विविध प्रकार बजावत बाजे, गावत राग मल्हार ॥
चतुर सखी इक जानि गई तब, उर सों चीर उघार ॥
हँसि हँसि परत लखावति औरन, यह लंगर छल-
वार ॥ ललिता कहै इन्हें नहिं ब्यापै, तनक लाज
संसार ॥ पल पल माहिं स्वांग धरि आवत, कबू पुरु-
ष कबू नार ॥ नारायण बोली प्रीतम सों, कीरति
प्राण अधार ॥ वनिता भेष उतारि आपनों, रूप लेउ
निज धार ॥ ६ ॥

वार्त्तिक ।

श्री लालजी बोले हे प्यारी! अबहूं तौ मरद के संग झूलीं, आपने मुसिक्यायके कही, हम तौ लुगाई के संग झूली हैं, यह वचन सुनिके सब सखियाँ परस्पर हँसिवे लगीं ॥ ७ ॥

दोहा ।

तर्क छांड़ि जो नित सुने, यह लीला आनन्द ।
नारायण तापै दया, सदा करें ब्रजचन्द ॥ ८ ॥

इति श्रीसांवरीछद्मझूलन लीला श्रीनारायण स्वामी कृत संपूर्णा ॥ २३ ॥

अथ बनझूलन लीला प्रारंभः ।

समाजी वचन ।

दोहा ।

सावनमास सुहावनो, घन गर्जत चहुँ ओर ।
निरखि निरखि शोभा नई, हर्षत नंदकिशोर ॥ १ ॥

दोहा ।

परत फुहार सुहावनी, भीजत श्रीब्रजराज ।
प्यारी को बोलन चले, झूला झूलन काज ॥ २ ॥

प्रियाजी वचन सखी प्रति ।

राग मलहार ।

सखीरी यह सावन मनभावन ॥ आस्ताई॥ चातक मोर चकोर कोकिला, बोलत बचन सुहावन ॥ गरजत घन घननन घननन कर, लगे मेह बरषावन ॥ नारायण भीजत मेरे गृह, श्यामसुंदर को आवन ॥ ३ ॥

लालजी वचन श्रीजी प्रति ।

राग देश ।

चलौ अकेले झूलें बन में प्यारी मेरे प्रान ॥ आस्ताई ॥ तुम नई नागरि रूप उजागरि, सुखसागर छबि खान ॥ बरन बरन के बादर छाये, मानो गगन बितान ॥ बरषत बूंद सोई मुतियनकी, झालर

शोभा मान ॥ बोलत खग मृग डोलत इत उत, सो नहिं जात बखान ॥ रंग रंग के फूल खिले हैं, भ्रमर करत रसपान ॥ ऐसे समय विपिन सुख विलसें, एरी परम सुजान ॥ नारायण उठि बेगिं पधारौ कुलदीक वृषभान ॥ ४ ॥

दोहा ।

कछुक दूरि बन में गये, बरषन लाग्यो मेह ।
कदम तरे ठाढे कहैं, किहि विधि पहुँचे गेह ॥ ५ ॥

समाजी वचन ।

मल्हार ।

कदम तरे ठाड़े दोऊ बतरावें ॥ आस्ताई ॥ परत फुहार पवन झकझोरत, अब कित भाजिकें जावें ॥ भवन दूरी बन ठौर न दीखत, जहां निज बसन दुरावें ॥ नारायण कछु दूरि जायके, फेरि बगदि वहिं आवे ॥ ६ ॥

वार्तिक ।

तब प्यारीजी ने कही बूंदन सों कहा डरपौ, भीजिवेको तो बन में आयेही हैं, परन्तु काहू और सघन लता तरें चलिके झूलें ॥ ७ ॥

समाजी वचन।

मल्हार।

विहरत बाग झूलके काजें॥ आस्ताई॥ गावत गीत मधुर सुर दोऊ, बीच बीच मुरली धुनि बाजें॥ ठुमकि चलन बोलन अवलोकन, कोटि मदन छबि निरखत लाजें॥ नारायण हुलसत सुख बिलसत, लताभवन तरें आय बिराजें॥ ८॥

समाजी वचन।

दोहा।

झूलत हैं श्री लाडिली, प्रीतम ओर निहार।
बोली अजी गावौकछू, ललित ख्याल मल्हार॥९॥

लालजी गायवे लगे।

मल्हार।

आई बदरिया बरषनिहारी॥ आस्ताई। गरजि गरजि दामिनि दमकावै, ज्यों चूँदरि में झलक किनारी॥ मधुर मधुर कोयल बन बोलै, भवन भवन गावत ब्रजनारी॥ चलत पवन शीतल नारायण, परत फुहार लगति अति प्यारी॥ १०॥

वार्तिक।

प्रियाजी ने प्रसन्न ह्वैके अपने प्रीतम की बड़ाई करी॥ ११॥

समाजी वचन।

दोहा।

एक सखी बन बिहरने, गई हुती वा ओर।
जितमें झूलत दोउ जन, राधा नन्दकिशोर॥ १२॥

दोहा।

लता ओट तें निरखि सुख, कही सखिन सों आय॥
कहा कहूं छबि आजकी, मोपै कही न जाय॥१३॥

सखी वचन अपर सखी प्रति।

राग हिंडोरा।

आवौ री यह शोभा निहारें॥ आस्ताई॥
नन्दलाल वृषभान नन्दिनी, झूलि रहे गरबैयां डारें॥ परत फुहार विपिन हरियाली, वन पक्षी मृदु वचन उचारें॥ अति निरमल जल भरे सरोवर, फूले कमल भ्रमर गुंजारें॥ पवन झकोर उड़त प्रिय को पट, झट प्रीतम निज हाथ समारें॥ नारायण इनकी या छबि पै, आज सखी हम सरबस वारें॥ १४॥

वार्तिक।

फिरि सखी आपस में कहिवे लगीं, देखौरी आज हम सों छिपिके झूलि रहे हैं॥ १५॥



सखी वचन।

ध्रुपद।

ऐसो आनन्द सखी आजलों न देखो कबू, आपही झूलनिहार आपही झुलावें ॥ आस्ताई ॥ वरषत घन गरजि घोर बोलत पिक नचत मोर चपला चमकि चहूं ओर दम्पति हरषावें ॥ भिजि रहे चीर बहे कुसुम रंग अंग अंग तापै, दोऊ एक संग मिलि मलहार गावें ॥ नारायण पीय प्यारी सांवन सुख लेत सखी, गौर श्याय बदन रती मदन को लजावें ॥ १६ ॥

समाजी वचन।

दोहा।

पुनि सजनी दम्पति निकट, जाय करी बलिहार।
निजमनमेंसकुचींप्रिया, ढिगकीसखींनिहार १७॥

श्रीजी वचन सखिन प्रति।

राग सारङ्ग।

तुम सम को जानत चतुराई॥ आस्ताई॥ मोहि अकेली छाड़ि भवन में, आप सभी वन विहरन आई॥ मैं आई यहां तुमें खोजिबे, इत उत हेरत डगर भुलाई॥ नारायण कछु भाग भले जो, मिले विपिन में कुँवरकन्हाई॥ १८॥

वार्तिक ।

सखियनने मुसिक्यायके कही ये हम सों भूल भई फिरि सब मिलिके गायवे लगीं ॥ १९ ॥

राग कानरी ।

आज बंशीवट वरषत रङ्ग ॥ आस्ताई ॥ यमुना तीर समीर सुहावन, बोलत विविध विहङ्ग ॥ कीरति कुंवरि लाल नन्दजी को, झूलि रहे इक सङ्ग ॥ रूपसिन्धु के अङ्ग अङ्ग ते छबि की उठत तरङ्ग ॥ बजत बीन ताऊस सरंगी, बंशी झांझ मृदङ्ग ॥ नारायण गावति मिलि सजनी, हिय में बढ़त उमङ्ग ॥ २० ॥

समाजी वचन ।

दोहा ।

लाल झुलावत लली कूं, झोटा दियो बढ़ाय ।
तासों पिय पै रिस भई, भृकुटी लई चढ़ाय ॥ २१ ॥

लालजी वचन श्रीजी प्रति ।

राग सोरठ ।

कौन समो रूठन को प्यारी झूलो ललित हिंडोरे॥ आस्ताई ॥ रंग बरंग घटा नभ छाई, बिच बिच

चपला चमक सुहाई, परत फुहार परम सुखदाई, चलत समीर झकोरे ॥ विविध भाँति पक्षी बन बोलें, मृगिन सहित मृग बिहरत डोलें, जलजन्तू जिमि करत कलोलें, यही अचरज मन मोरे॥कुसुम चीर पहरें ब्रजनारी, साज समाज आज है भारी, नारायण बलिजाऊं तिहारी,प्रीतम करत निहोरे२२

वार्तिक।

पासतें सखियन ने कही हेप्यारी ! प्रीतम को कछु दोष नहीं इनको झुलायवो नहीं आवै, अब आप दोउ झूलौ और हम झुलावें गावें ॥ २३ ॥

राग मलहार।

सघन बन झूलें दोऊ सुकुमार ॥ आस्ताई ॥ हिय हरषत छबि निरखि परस्पर, छिन छिन बाढ़त प्यार ॥ कबहुँ मुदित मन तान लेत मिलि, होत सखी बलिहार ।। नारायण द्रुम बेलि सुहावनि, हरा कियो शृंगार ॥ २४ ॥

वार्तिक।

श्रीजीने कही सखी ! कछु औरहू गाओ, जो आज्ञा ॥ २५ ॥

राग गौड़ मल्हार ।

बादरवा गहरे आये ॥ आस्ताई ॥ उमाड़ि घुमाड़ि घन गरजि गरजिके, बरषन को उठि धाये ॥ बरन बरन के अति सुन्दर घन, नभमण्डल में छाये ॥ चपला चमकि दुरति पुनि प्रगटति, कंचन अंग सुहाये ॥ नाचत मोर कोकिला बोलत, सबके मन हरषाये ॥ नारायण जित तित हरियाली, मेह ने रंग लगाये ॥ २६ ॥

वार्तिक ।

फिर सखीन ने विनती करी, सर्कार ! अबतौ मेह बहुत आयो है, भवन में पधारो, मारग में जा सखी ने इनको आवत देख्यो, वाने और सखी सों कही ॥ २७ ॥

रेख़्ता ईमन कौ ज़िला ।

सुन्दर अनूप जोरी, अति मन की भावती ।
देखी मैं आज मगमैं, कुंजन सों आवती॥सुन्दर० १
अंग अंग देत शोभा, भूषण जड़ाऊ आली ।
नयनन में सोहै काजर,अधरन पै पानलाली सुं० २
प्रीतम के कांधे कर धर, प्यारी अनन्द सों ।
हँसि हँसि के करत बातैं,मुख ललित चन्द सों॥सुं० ३

पग धरत हौलें हौलें, गति देख हंस लाजैं।
नूपुर परम मनोहर, अति मधुर मधुर बाजैं॥सुं०४॥
या भांति सों मगन है, क्रीड़ा करत है दोऊ।
नारायण रसिक जन विन, ये रस न जाने कोऊ
सुन्दर०॥५॥२८॥

दोहा।

लीला मोहनलाल की, सब साधन को सार।
नारायण रुचि सो सुने, उतरें भवसों पार॥२९॥

इति श्रीबनझूलनलीला श्रीनारायणस्वामीजी
कृत सम्पूर्णा॥२४॥

अथ बसन्तलीला प्रारंभः।

समाजी वचन।

दोहा।

नारायण वृन्दाविपिन, निशि दिन रहत वसन्त।
पियप्यारीमिलिमुदितमन,क्रीड़ाकरतअनन्त १॥
वन विहरन के कारने, लली हिये हरषाय।
सखी पठाई लाल ढिग, लावो संग लिवाय॥२॥

वार्त्तिक।

आज्ञानुसार जब सखी गई, तब रसिकराज बोले, सखी! तू चल हम नेक देर में आवें॥३॥

सखी वचन श्रीजी प्रति ।

दोहा ।

आवेंगे कछु देर में, मोसों भयो मिलाप ।
यह सुनिके कीरति कुमरि, बैठिरही चुपचाप॥४॥

समाजी वचन ।

दोहा ।

फूलन के गहने रचत, लालहिं लगी अवार ।
पुनि यह सुनि कि लाड़िली, बैठी रिस उर धार॥५॥
आन उपावन बनि सक्यो, मालिन भेष बनाय ।
चले प्रिया के भवन कूं, मनहीं मन हरषाय ॥ ६ ॥

समाजी वचन ।

पद रागसारंग ।

मालनि भेष बने पिय प्यारे॥ आस्ताई ॥ फूल शृँगार धरें डलिया में भूषण पटसों अंग सँवारे॥ सकुच सहित मग चलत मन्दगति, पग बिछिया बाजत हैं न्यारे ॥ नारायण अद्भुत शोभा सों, पहुँचे भानुकुमरि के द्वारे ॥ ७ ॥

सखी वचन श्रीजी प्रति ।

राग वसन्त बहार ।

मान सखी जिन मान बढ़ावै ॥ आस्ताई ॥

नवपल्लव विकसे बन बागन, नवबहार सबके मन भावै ॥ नयो रूप नवयौवन तेरो, देखत बने कहत नहिं आवै ॥ नारायण इतनो धन पाके, फिरि गोरी तू न क्यों इतरावै ॥ ८ ॥

वार्तिक।

तब प्यारीजी न बोलीं तब फिरि सखियन ने कही ९

राग वसन्तबहार।

री तू नेक किंवार उघार देख ॥ आस्ताई ॥ द्वार ठाढ़े प्रीतम मालिनियां भेख ॥ आयो तेरे काज ऋतुराज आज फूले फूल मूल फल दल विशेख ॥ नारायण कह्यो मानिलै सजनी यामें नहीं कछु मीन मेष ॥ १० ॥

दोहा।

सखीवचनसुनिलाड़िली, उठीकछुकमुसिक्यात।
जाय द्वार प्रीतम लखे, सखी सामरे गात ॥ ११ ॥

दोहा।

लली लालसों हँसि कहत, तुम्हें न आवत लाज।
लाज किये तें होय कब, या विधि पूरण काज१२ ॥

वार्तिक।

ता पीछे प्रीतमने फूलन के गहने पहराये, सखी बड़ाई करिवे लगीं ॥ १३ ॥

सखी वचन ।

ध्रुपद कान्हडा वा सिन्दूरा ।

फूलन की चन्द्रकला सीसफूल फूलन कौ, फूलनके झूमका श्रवण सुकुमारी के ॥ आस्ताई ॥ फूलन की वन्दनी विशाल नथ फूलन की, फूलन कौ विन्दा भाल राजदुलारी के ॥ फूलन की चम्पा कली हार गरे फूलन के, फूलनके गजरा ललित करे प्यारीके ॥ फूल न की पग में पायल नारायण, फूले फूले भागि सदा लाड़िली हमारी के ॥ १४ ॥

किशोरीजी को वचन लालजी प्रति ।

राग वसन्त धीमाताल ।

चलो लाल खेलें वसन्त मिलि, श्रीयमुनाजी के कूल ॥ आस्ताई ॥ नव निकुंजवन नई ऋतु आई नये नये फूले फूल ॥ द्रुम डारिन बैठे नव पक्षी बोलत अति अनुकूल ॥ नारायण उत नई बहार सुख, इत में तुम सुख मूल ॥ १५ ॥

वार्तिक ।

फिरि श्रीकिशोरीजी ने अपने प्रीतम को नागरि भेष बढ़ायके जब श्रीयमुनाजी के तट मनोहर बाटिका में जायके जड़ाऊ सिंहासन पै गलबैयां



डारके बिराजे तब गन्धर्व सखी को आज्ञा भई, जो तुम कछू गाओ, ताही समय रति मदन मालिनी माली को भेष धारण कर डाली लगायके युगल सर्कार के आगे लाय धरी तब गन्धर्व सखी भी गायवे लगी ॥ १६ ॥

ध्रुपद राग बन्सत।

नवल रंग नवल फूल, नवल शोभा यमुनाकूल नवल सघन बेलि द्रुम प्रफुल्लित चहुँओर ॥आस्ताई॥ ललित नई गुल्मलता, चटकि चटकि खिलत कली बिकसे तरुपात नये नयो नयो बौर ॥ नवल लली नवल लाल, नवल सखी गावें ख्याल, नयो माली मदन डाली लायो कर जोर ॥ नवसमीर नव सुगन्धि नये नये नित है अनन्द, नारायण नव बहार बीतत निशि भोर ॥ १७ ॥

दोहा।

ये लीला नित सुनेंते, कृपाकरें घनश्याम।
निज चरणन की भक्ति दे, अरु बृन्दावन धाम १८

इति श्रीबसन्तलीला श्रीनारायण स्वामीजी कृत संपूर्णा ॥ २९ ॥

अथ होरीलीला प्रारंभः ।

सखी वचन श्रीजी प्रति ।

राग काफ़ी ।

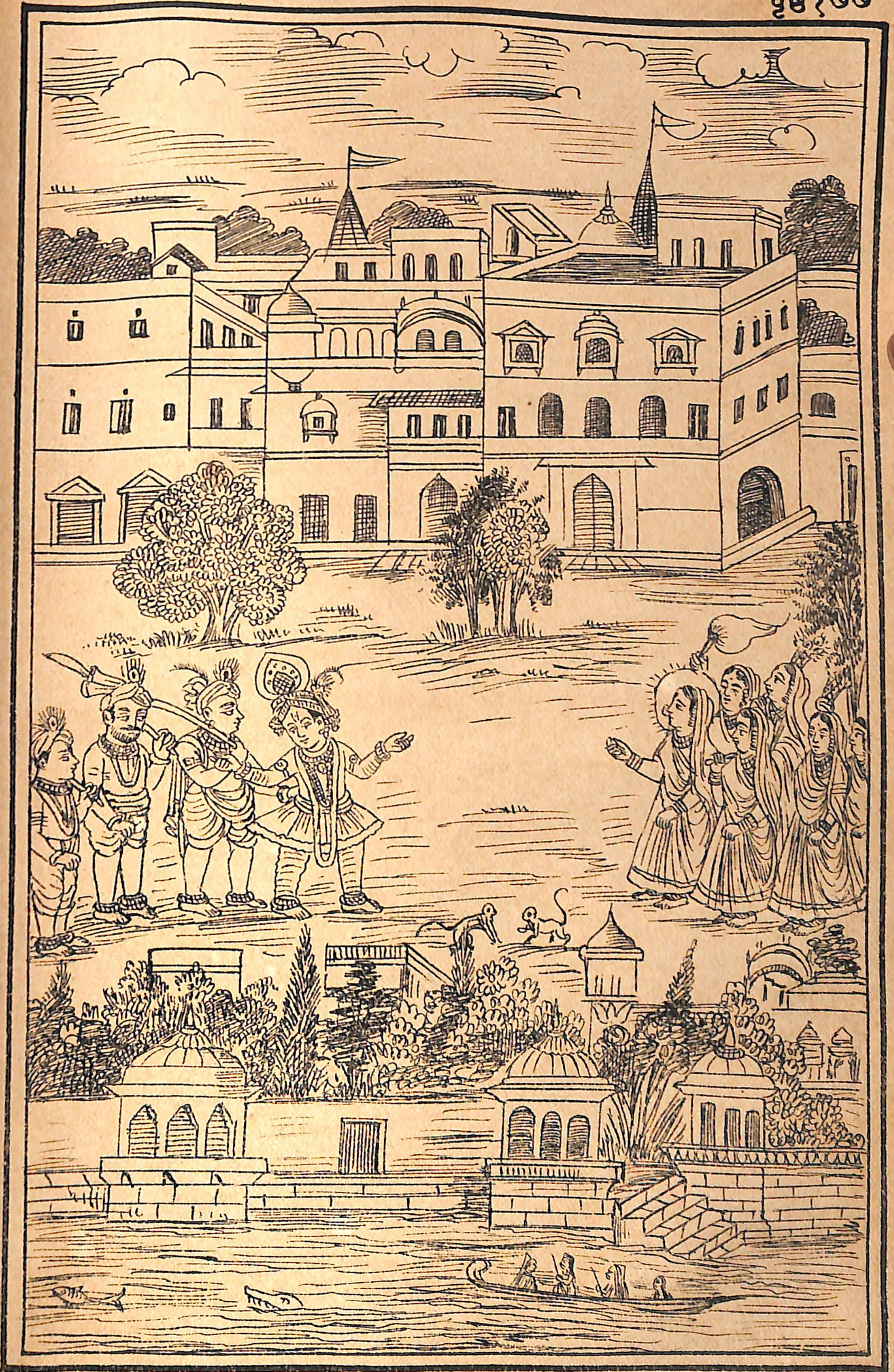
गोरी कुंजन में आज होरी मची, तू कहा बैठी मांग सँवारै ॥ आस्ताई ॥ मेरी कही जो सांच न माने, सुनिलै डफ धुधकारै ॥ उठि सजनी चलि फाग खेलिलै, प्रीतम तोहि पुकारै ॥ नारायण तब बात है तेरी, तू जीतै पिय हारै ॥ १ ॥

वार्तिक ।

तब प्रियाजी ने एक नई सखी सों कही, अरी ! तू होरी खेलिवे न चलैगी तब वह सखी बोली ॥ २ ॥

होरी रसिया ।

सास नँनद मेरी देखि रहीं, मैं होरी कैसे खेलूं बीर ॥ आस्ताई ॥ मैं अपने मन मांहिं कहूं अब, कहा करूं करतार । रसिया नचत बजावत डफ मोहि, टेरत बारहिं बार । द्वारें होय रही भीर ॥ लाज भरी गारी गावत, नहिं नेकहु सकुचत छैल । मूठ गुलाल इतै उत फेंकत, रोकि रह्यो है गैल । संग छोहरा अहीर ॥ याही सों बाहिर नहिं निकसूं, पिचकारी दे मार। नारायण फिरि बात छिपै



कब, निरखेंगे नर नार। भीजे रँग सों चीर ॥ ३ ॥

लालजी वचन सखी प्रति।

सारङ्गको रसिया।

होरी में लाज न कर गोरी ॥ आस्ताई ॥ हम ब्रज के रसिया तुम गोरी, भली बनीहै यह जोरी॥जो हम सों सूधे नाहिं खेलो, यार करेंगे बरजोरी॥ नारायण अब निकसो द्वार पै, छूटौ नहिं बनिके भोरी ॥ ४ ॥

वार्तिक।

पुनि वा सखी सों प्रियाजी ने कही, अरी! जो तू होरीमें इतनो डरैगी तो, ब्रजबास करिचुकी, फिरि सखिन सहित श्रीकिशोरीजी होरी खेलिवे कूं पधारीं ॥ ५ ॥

लालजी वचन सखान प्रति।

राग भूपाली।

यह को आवत है गजचाल, संग बहु भीर लियें शोभा विशाल॥ आस्ताई ॥ पिचकारी निज वसन छिपायें, झोरिन में दीखत गुलाल ॥ एरे सखा तुम चेत करो अब, ये हैं घनी ब्रजबाल ॥ नारायण कहुं हाथ न ऐहौ, भैय्या तुम थोरेसे ग्वाल ॥ ६ ॥

प्रियाजी वचन लालजी प्रति।

राग सिन्दूरा।

एरेलाल फिरि होरी आज खेलन आये, कल

कछू थोरे नचेहौ ॥ आस्ताई ॥ बेशरमी तुम्हरे वट आई, मोहि तौ ऐसे जचेहौ ॥ तिहारे गुण वरने नाहिं जामें, तुमतौ ढीठ सचेहौ ॥ नारायण बलिहार तुम्हारी, लाज सों तुमहीं बचेहौ ॥ ७ ॥

वार्तिक ।

फिरि तौ होरी होने लगी ॥ ८ ॥

सखी वचन परस्पर ।

राग काफ़ी ।

पिय प्यारी आज होरी खेलत यमुना तीर ॥ आस्ताई ॥ हँसि हँसि वदन अरगजा डारत, मारत मूठअबीर ॥ चलत कुमकुमा रँग पिचकारी, भीज रहे तन चीर ॥ जनु घन दामिनि रूप धरें हैं, गोरे श्याम शरीर ॥ बजत अनेक भांति मृदु बाजे, होयरही अति भीर ॥ नारायण या सुख निरखे बिन, कौन धरै मन धीर ॥ ९ ॥

श्रीजी वचन सखी प्रति ।

सारङ्ग रसिया ।

रसिया को नारि बनावौरी ॥ आस्ताई ॥ कटि लहँगा उरमांहि कंचुकी, चुंदरी सीस उढ़ावौरी ॥ गाल गुलाल दृगन बिच काजर, बेंदी भाल लगा-

वौरी ॥ नारायण तारी बजाय के, यशुमति निकट नचावौरी ॥ १० ॥

वार्तिक।

लालजी ने कही हेप्यारी! नागरी तौ मोहि बनाओगी, परन्तु जो मेरी मैय्या ने मोकूं पहिंचान लियो तौ फिर आप की चतुराई कहाँ रहैगी· जासों मैं अपनो शृंगार अपने हाथ सूं करूं, कि फिर कोई भी न पहचाने, और आप की बड़ाई होइ, तब सब ने कही यही ठीक है, फिरि एक एक आभूषण अपनो सबने इनकूं उतारि दियो, जब लालजी सघन लताकुंज के भीतर शृंगार करिबे लगे, झट दूसरी ओर सों निकासि दूर जाय के बोले यार! तौ अपने घरकूं चले, यह कौतुक देखि के सब सखी आपस में कहिवे लगीं, लै बीर ब्रजभूषण तौ गांठ के भूषण हू लै चल्यो ॥ ११ ॥

दोहा।

यह लीला जो नित सुने, गावे चित के चाव।
नारायण भवसिन्धु ते, तुरत पार ह्वै नाव ॥ १२ ॥

इति श्रीहोरीलीला श्रीनारायणस्वामीजीकृत सम्पूर्णा ॥ २६ ॥

अथ गली होरी लीला प्रारंभः ।

समाजी वचन ।

दोहा ।

होरी खेलन के लिये, रसिया श्याम सुजान ।
फेंट अबीर गुलाल भरि, गये गली वृषभान ॥ १ ॥

श्रीजी वचन सखी प्रति ।

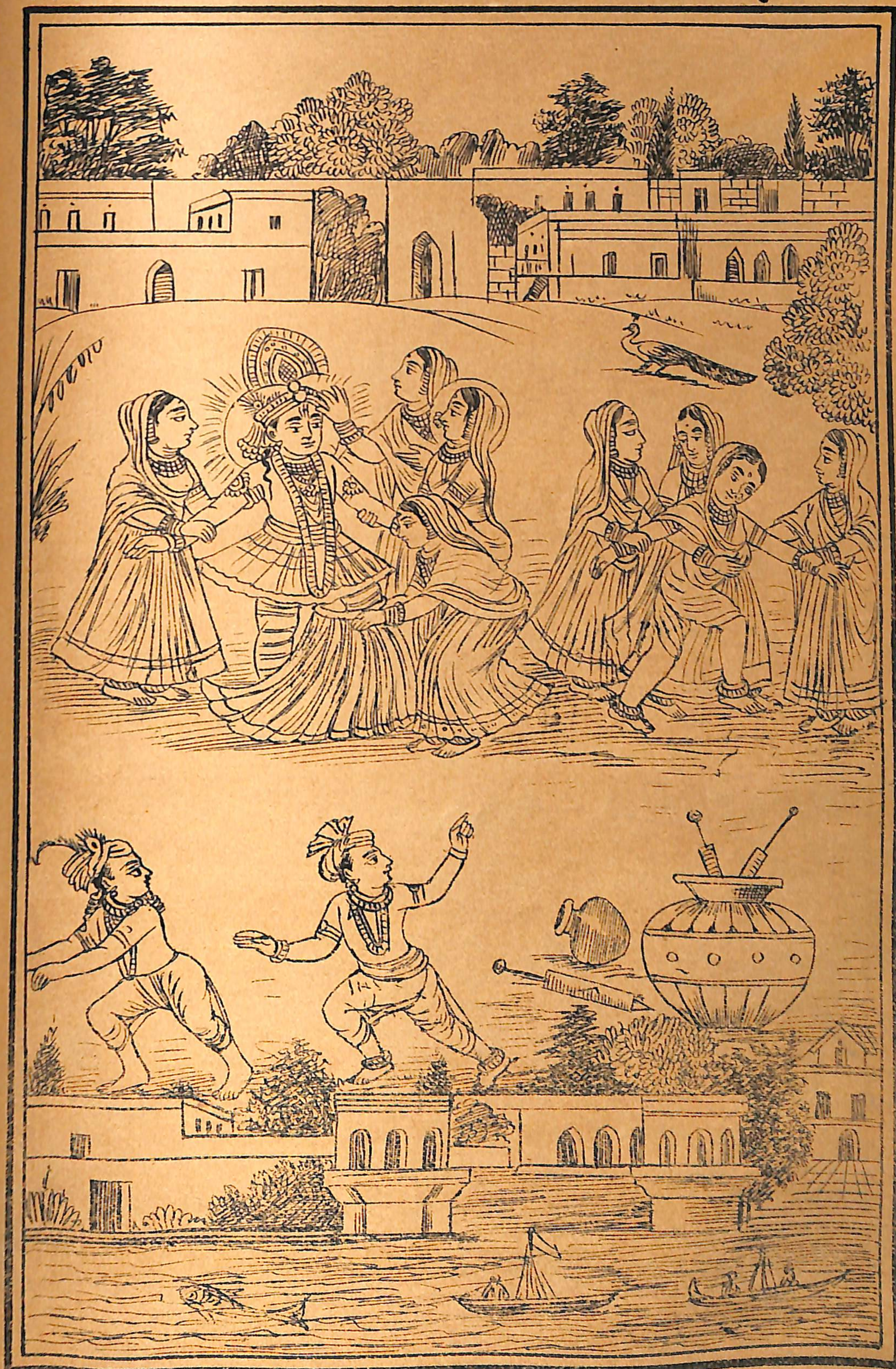
होलीजङ्गले का ज़िला ।

होरी खेलन के लिये नन्दलाल, मग नाचत आवत मटक मटक ॥ आस्ताई ॥ कर डफली गति मधुर बजावत, ताल देत पग पटक पटक ॥ अंग अंग छबि कहि न जाय कछु, चढ़्यो मदन को कटक कटक ॥ नारायण मन हरत है मेरो, पेच पाग के लटक लटक ॥ २ ॥

सखी वचन सखी प्रति ।

राग काफ़ी ।

देखि सखी वृषभान किशोरी ॥ आस्ताई ॥ निज प्रीतम को रूप निहारत, जा विधि चन्द चकोरी ॥ भलो फाग खेलन को निकसी, बीच भई चित-चोरी ॥ नारायण अटके दृग छबि में, भूलिगई सुधि होरी ॥ ३ ॥



सखी वचन श्रीजी प्रति ।

दोहा ।

कौन समो है ध्यान को, एरी नवब्रजबाल ।
डारि अनोखे लाल पै, रंग अबीर गुलाल ॥ ४ ॥

सखी वचन

होरी ।

सखी देखौ आज वृषभान लली, होरी खेलत अति छबि पावै ॥ आस्ताई ॥ प्रीतम के दृग मार कुमकुमा, सन्मुख ते मुसिक्यावै ॥ कबहूँ कहति गिरयो नथ मोती, अब कैसे कर पावै ॥ बातनमें उरझाय लाल को, गाल गुलाल लगावै ॥ जब प्यारो पकरन को लपकत, अधिक अबीर उड़ावै ॥ धूंधरि माँहि कछू नहिं सूझत, आपकूं चतुर बचावै ॥ गौर श्याम मुख भये एक से, शोभा कहत न आवै ॥ नारायण फागुन के सुख में, लोकलाज नहिं भावै ॥ ५ ॥

समाजी वचन ।

दोहा ।

जब थोरोसो रहि गयो, रंग अबीर गुलाल ।
तब टेरत निज यूथ को, सुघर लाडिली लाल॥६॥

होरी काफ़ी धीमा ताल ।

आज दोऊ मदमाते खिलारी, नन्दनँदन वृषभान दुलारी ॥ आस्ताई ॥ निज निज यूथ युगलवर टेरत, चोप बढ़ी जीतन की भारी ॥ १ ॥ भवन भवन ते निकसीं सजि सजि, गोरी सांवरी रूप उजारी ॥ ज्यों अति प्रबल घटा घिर आवत, त्यों मिलिके आईं ब्रजनारी ॥ २ ॥ एक ओर लिये लाल सखा संग, एक ओर सब गोपकुमारी ॥ होन लगी अब होरी परस्पर, चलन लगीं इत उत पिचकारी ॥ ३ ॥ तकि तकि के दृग कुमकुमा मारत, डारि गुलाल देत रसगारी ॥ छिरकत अतर चतुर नवनागर, फूलि रही जोबन फुलवारी ॥ ४ ॥ बीन मृदङ्ग सितार सरङ्गी, तूस मुचङ्ग झाँझ ढप न्यारी ॥ मधुर मधुर सुर साज बजत गति, हैं अति सुघर बजावनवारी ॥ ॥ ५ ॥ सैन चलाय सखी आपस में, सखान के पकरन की विचारी ॥ घबराये सब ग्वाल लाल के, भाग चले मन धीरन धारी ॥ ६ ॥ घेरि लियो तब नन्दनँदन को, भामिनि भेष बनाय शृंगारी ॥ मुतियन मांग भरी दृग अंजन, पग बिछिये नथ भलकाबारी ॥ ७ ॥ दै गुलचा मुख मीड़त रोरी, नभ मण्डल निरखत सुरनारी ॥ ताहि नचावत गीत

गवावत, ध्यान धरत जाको त्रिपुरारी ॥ ८ ॥ पुनि मिलके लै गईं महरि ढिग, नख शिख लौं सब भाँति सँवारी ॥ ब्रजरानी यह मिलिवे आई, नाँते में कछु लगति तिहारी ॥ ९ ॥ जब यशुमति उठि भेटन लागी, ब्रजवनिता मुसिक्यावत सारी ॥ जानिगई तब महरि यशोदा, नारि नहीं है मेरो बिहारी ॥ १० ॥ हँसि हँसि परत देखि मुख सुत को, करि आदर सगरी बैठारी ॥ बड़े भाग जो मो मन्दिर में, सहित सखिन यह कुमरि पधारी ॥ ११ ॥ भानुलली बोली यशुमति सों, बेगि करो फगुआ की त्यारी॥हारि गयो ब्रजभूषण तेरो, देखि लेउ भई जीत हमारी ॥ १२ ॥ आनँद भरे बचन सुनि उनके, मगन भई हरि की महतारी ॥ पट भूषण पहिराय प्रीति सों, गोद सबन के मेवा डारी ॥ १३ ॥ लै आज्ञा बृजनारि महरि सों, शीस नवायके भवन सिधारी ॥ नारायण धनि धनि वृन्दावन जहां विहरत, नित प्रीतम प्यारी॥ १४॥७॥

दोहा ।

सुख उपजावन दुखहरन, यह लीला ब्रजराज ॥
नारायण नित सुनेते, पूरण होवें काज ॥ ८ ॥

इति श्रीगलीहोरीलीला श्रीनारायण स्वामीजी कृत सम्पूर्णा ॥ २७ ॥

अथ छद्म होरी लीला प्रारंभः ।

समाजी वचन ।

दोहा ।

लै गागरि गोरी चली, भरिवे यमुना नीर ।
एक सखी मग में मिली, बोली सुनरी बीर ।। १ ।।

सखी वचन पनिहारी प्रति ।

राग आसावरी ।

तू कित आज चली बनठन के, मनमोहन मग खेलत होरी ।। आस्ताई ।। जाने कहा वाके दृग जादू, जो निरखत सोई होत है बोरी ।। शरद इन्दु सम बदन तिहारो, कोमल अंग ललित अति भोरी ।। तोहि देखि कब छोड़ैगो रसिया, बैठि भवन हठ जिन करि गोरी ।। डोलत डगर लियें पिचकारी, फेंट अबीर गुलाल की झोरी ।। नारायण होरी को मिस करि, मोहन लाल करत चित चोरी ।। २ ।।

पनिहारी वचन ।

वार्तिक ।

अरी सखी ! मैं यमुना जल भरिवे जाऊंगी ।। ३ ।।



पुनि सखी वचन पनिहारिन प्रति।

राग झंझोटी।

आज श्याम मग धूम मचाई ॥ धूम मचाई करत ढिठाई ॥ आस्ताई ॥ बिन रंग डारें देत नहिं निकसन, मैं तेरी सों देखिके आई ॥ तू कहुँ भूलिके मति उत जैयो, जाने कहा वह करै लँगराई ॥ नारायण होरी के दिनन में, अपनेहि हाथ है अपनी बड़ाई ॥ ४ ॥

पनिहारिन वचन सखी प्रति।

वार्तिक।

अरी बीर! तूतौ सांची कहै, पर कहा करूं मेरे घर में पानी की एक बूँदहु नांय ॥ ५ ॥

पुनि सखी वचन।

कान्हड़ा।

आज हरि डगर मचाई धूम ॥ आस्ताई ॥ जो ब्रज नारि गई जल भरिवे, बीचहिते आई घूम ॥ तू सुंदरि नवयोवन भोरी, गजगति चलति है झूम ॥ नारायण जो तू बचि आवै, लेउँ तेरे पग चूम ॥ ६ ॥

समाजी वचन।

दोहा।

एक नहीं मानी कही, गई हठीली बाल।

अचक आयके गैल में, घेरि लई गोपाल ॥ ७ ॥

सखी वचन ।

राग काफ़ी ।

मति मारौ पिचकारी श्याम अब देउंगीमैंगारी॥ आस्ताई ॥ भीजैगी लाल नई मेरी अँगिया चूंदरि बिगरैगी न्यारी ॥ देखैगी सासु रिसायगी मोपै, सँगकी ऐसी हैं दारी हँसेगी दै दै तारी ॥ घाट बाट सब सों अटकत हौ, लै लै रारि उधारी॥कहांलौं तेरी कुचाल कहूं मैं, एक एक ब्रजनारी जानति करतूति तिहारी ॥ मूठी अबीर न डारौ दृगन में दूखैंगी आंखि हमारी । नारायण न बहुत इतरावौ, छाँड़ौ डगर गिरधारी नये भये तुमही खिलारी ॥ ८ ॥

समाजी वचन ।

दोहा ।

सराबोर करि रंगमें, बोले यदुकुलभान ।
जा लिवायला तू उन्हें, जिनको तोहि गुमान॥९॥

वार्त्तिक ।

फिरि आप सखी भेष धारण करिके मारग में आयके ठाढ़े ह्वैरहे और उत में वा सखी ने अपनी सखीन सों जाय कही ॥ १०

राग काफ़ी।

सखीरी या ब्रज में अब कैसे बसें, अनरीति न जाय सही ॥ आस्ताई ॥ गैल चलत वा छैल नंदके, बैयां आय गही ॥ मुख गुलाल मलि रंग भिजोई, सौ सौ बात कही ॥ नारायण मग लोग हँसे सब, आज न लाज रही ॥ ११ ॥

समाजी वचन।

दोहा।

समाचार सुनि सखी मुख, नवयौवन ब्रजबाल।
होरी खेलन को चलीं, लै लै रंग गुलाल ॥ १२ ॥
जब इनसों भइ भेट मग, बोले छलिया श्याम।
यहकुचालिकरिनन्दसुत,भाजिगयोनिजधाम १३

वार्तिक।

यह सुनिके सब सखी आपस में कहिबे लगीं देखोरी या विचारी के नये चीर रंगसों कैसे बिगार गयो है ॥ १४ ॥

पुनि सांवरी वचन।

राग कान्हड़ा।

सब जुरि मिलिके चलो आली ॥ आस्ताई ॥ या

बिरियां निज भवन होयगो, वह लंगर वनमाली ॥ हम तुम बस्यौ चहें या ब्रजमें, कबलों सहे कुचाली॥ नारायण वा नन्दलाल को, आज बनावो लाली ॥ १५ ॥

समाजी वचन ।

दोहा ।

हो हो होरी कहत मग, सहित सांवरी नार ।
जाकर घेरयो सबन ने, नन्दराय को द्वार ॥१६॥

होरी काफ़ी ।

होरी हो ब्रजराज दुलारे ॥ आस्ताई ॥ अब क्यों जाय छिपे जननी ढिग, रे द्वै बापनवारे ॥ कै तौ निकसिके होरी खेलौ, कै मुख सों कहौ हारे, जोर कर आगे हमारे ॥ बहुत दिनन सों तुम मन-मोहन, फागहि फाग पुकारे ॥ आज देखियो सैल फाग की, पिचकारिन के फुहारे, चलें जब कुम कुमा न्यारे ॥ निपट अनीति उठाई तुमने, रोकत गैल गिरारे ॥ नारायण सब खबरि परैगी, नेक तो आयके द्वारे, सुरति अपनी तू दिखारे ॥ १७ ॥

यशोदा वचन सखी प्रति ।

दोहा ।

अबलों घर आयो नहीं, मेरो मोहनलाल ।

इत उत खेलत होयगो, संग साथ लै ग्वाल ॥ १८ ॥

सखी वचन सांवरी प्रति ।

दोहा ।

फिरि आवेंगी हे सखी, होरी खेलन काज ।
बदलौ लैंगी आपनो, छैल छली सों आज ॥ १९ ॥

सांवरी वचन ।

राग काफ़ी ।

यासों बिन होरी खेलें न जाउंगी सखी, मेरी चूंदरि की करी कैसी कुगति ॥ आस्ताई ॥ जौलों मैं अपनो न बदलौ चुकाऊं, तौलों कबू अन जल नहिं पाऊं, ऐसो छैलकूं नांच नचाऊं, देखै तमासो सगरो जगत ॥ मटकि मटकि नट कटि लचकावै, कबहुँ दृगन के भाव बतावै, ताहू पै अति मृदु मुसिक्यावै, याही भांति सबही कूं ठगत ॥ जो इतसों इतमें ऊगै भानू, तोऊयाकी पगिया रंग सानूं, नारायण अब मैं क्यों मानूं, मेरो कछू यह बाप लगत २० ॥

सखी वचन ।

दोहा ।

चलि बैठो मग रोकिके, आवत होइगो लाल ।
सखा सहित पुनि घेरिके, डारौ रंग गुलाल ॥ २१ ॥

वार्तिक ।

सांवरी बोली यह बात मैं मानी, फिरि गैल में आयके सखीन सों कहिवे लगी, अरी! तिहारे पास रंग गुलाल तौ थोरोसो दीखै जो कदापि वाके संग अधिक भीर भई तब कैसी करौगी, जब सखीन ने कही जैसे तू कहैगी ॥ २२ ॥

सांवरी वचन ।

दोहा ।

तुम निज निज दृग मूंदिके, बैठो सब ब्रजबाल ।
तनक देर में होयगो, दूनों रंग गुलाल ॥ २३ ॥

सखी वचन परस्पर ।

सोरठा ।

हँसी सकल ब्रजबाल, अब यह दृग मुँदवाय के ।
रंग अबीर गुलाल, लावैगी कहुँ अन्त सों ॥ २४ ॥

दोहा ।

या विधि निज मन समझि के, मूंदै नेन विशाल ।
तुरत श्याम ने सबन पै, डारयो रंग गुलाल ॥ २५ ॥

समाजी वचन ।

दोहा ।

होरी हो भाभी कहत, हँसे लाल गोपाल ।

देखि कपट अचरज भई, नवगोरी ब्रजबाल ॥२६॥
यह लीला ब्रजचन्द की, रसिक जनन के प्रान।
नारायण याके सुने, सदा होय कल्यान ॥ २७ ॥

इति श्रीछद्म होरीलीला श्रीनारायण स्वामीजी
कृत सम्पूर्णा ॥ २९ ॥

अथ प्रेमपरीक्षालीलाप्रारंभः।

वार्त्तिक।

प्रात समय श्री लाड़िलीजा सहज सुभाव निज भवन द्वार पै आयके ठाड़ी भई, तब एक खंजन को देखिके वाके नेत्रन की बड़ाई करिबे लगीं, पासतें सखी बोली हे प्यारी! या के नेत्र की चपलता तौ ब्रजचन्द के नेत्रन की छटाहू नायँ ॥ १ ॥

राग कान्हड़ा।

ब्रजचंद के ऐसे नैन ॥ आस्ताई ॥ अति छबि भरे नाग के छौना, तुरत डसें करि सैन ॥ इन सम सांवरि मन्त्र न होई, जादू जन्त्र तन्त्र नहिं कोइ, एक दृष्टि में मन हरि लेवे, करि देवे बेचैन ॥ चितवनि में घायल करि डारें, इन पै कोटि बाण लै वारें, अति पैंने तिरछे हिय कसके, श्वास न देवें लैन ॥ चंचल चपल मनोहर कारे, खंजन मीन लजावनहारे,

नारायण सुंदर मतवारे, अनियारे सुख दैन ॥ २ ॥

वार्तिक ।

तब श्रीजी ने बूझी अरी सखी ! सांची कहौ, फिर सखी ने कही ॥ ३ ॥

राग मल्हार ।

मनमोहन सम सुन्दर को है॥आस्ताई॥मैं अपने अनुमान कहूं अब, उन की पटतर और न सोहै॥ चितवन चपल रूप उजियारो, जाको मुख नित चन्दहू जोहै ॥ नारायण जो एक दृष्टि में, सुर नर नाग सकल को मोहै ॥ ४ ॥

समाजी वचन ।

दोहा ।

सखी कहीं जब प्रियासों, या बिधि शोभा लाल ।
तब सुनिके मोहित भई, नवल छबीली बाल ॥ ५ ॥

श्रीजी वचन सखी प्रति ।

जैजैवंती ।

आज सखी प्रीतम जो पाऊं, तौ अपने बड़ भाग मनाऊं ॥ आस्ताई ॥ सांवरी सूरति नयन विशाला, चन्दवदन गल मुतियन माला, रूप मनोहर चाल मराला, सुन्दरता पर बलिबलि जाऊं ॥ जो प्यारो

इन गलियन आवै, मो बिरहनि कूं दरश दिखावै, बैठी निकट मृदु वचन सुनावै, मैं उनको हँसि कंठ लगाऊं ॥ नारायण जीवन गिरधारी, कब लैंगे सुधि आय हमारी, जब मोसों वो कहेंगे प्यारी, तब मैं फूली अंग न समाऊं ॥ ६ ॥

दोहा।

यह वृत्तान्त सुनि लालसों, कह्यो सखी तबजाय।
प्रीतमतो निरखे बिना, रही कुमरि मुरझाय ॥ ७ ॥

सोरठा।

सुनत सखीके बन, हिय हरषे सुन्दर बदन ।
प्रेमपरीक्षा लैन, चले तुरत तिय भेष धरि ॥ ८ ॥

सांवरी वचन प्रियाजी प्रति।

राग जैजैवन्ती।

आज अकेली भवन द्वार पै कौन काज ठाढ़ी सुकुमारी ॥ आस्ताई ॥ कै काहू की बाट निहारत कै कितहूँ चलिबे की त्यारी ॥ मुख उदास कछु देखि तिहारो मोहि उपजी चिन्ता अति भारी ॥ नारायण अब नेक बतावो मैं तिहारी जाऊं बलिहारी ॥ ९ ॥

प्रियाजी वचन ।

वार्तिक ।

हे सखी ! जबसों मैंने श्री लालजी की शोभा सुनी है तब सों बिना देखे कल नहीं परै, सांवरी बोली हे प्यारी ! वह तिहारी कहा बरोबरी करैगो, गुणन में मंगता और चोर रंग में कारो, तब आप रिस ह्वैके बोली, अरी ! तू मुँह सम्हार के बोल, मैं उनके एक एक अंग की शोभा सुनिके चकित हूं ॥ १० ॥

दोहा ।

मैं उनकी पटतर कहां, वह तो शोभाधाम ।
अंग अंग लखि लाल को, लाजत कोटिक काम ११

समाजी वचन ।

दोहा ।

मगन भये श्रीलालजी, लखि प्यारी को नेह ।
पुरुष वचन बोले प्रकट, भूलि गई सुधि देह ॥ १२ ॥

लालजी वचन प्रियाजी प्रति ।

सोरठा ।

विधिना चतुर सुजान, रचतो बदन अनूप अति ।
बचौ कछुक सामान, तासों मोतन निर्मयो ॥ १३ ॥

समाजी वचन।

दोहा।

जानि गई तब लाड़िली, है यह नन्दकुमार।
सहित सखी हँसिबे लगी, प्रीतम भेष निहार॥१४॥

प्रियाजी वचन।

जैजैवन्ती।

आवौ सखी मिलि मंगल गावौ, मेरे पधारे कुँवरकन्हाई॥ आस्ताई॥ मोसम आज कौन बड़भागिनि, घर बैठे ऐसी निधि पाई॥ सुन्दर वदन मदन मनमोहन, मधुर मधुर बोलन सुखदाई॥ नारायण इनके दरशन सों, मुरझी बेलि हरी ह्वै आई॥ १५॥

वार्तिक।

तापीछे श्रीलालजी ने जब नागरी भेष बढ़ाय के निज स्वरूप प्रगट कियो वाही समय मधुमंगल सुखाहू ढूँढतौ आयगयो॥ १६॥

मधुमङ्गल वचन।

सारंग।

लाल तोहि जननी हेर रही॥ आस्ताई॥ चन्दपौर पै नाम तिहारो, लै लै टेर रही॥ जेंवन काज बुलावत तुमको, सांची बात यही॥ नारायण या विधि मधुमंगल, हरिसों आय कही॥ १७॥

वार्तिक ।

तब प्रियाजी ने कही हे प्यारे ! अब मैं विना जिमाये आपको कैसे जायबे देऊंगी याते सखा को बिदा करो, अरु आप हमारे संग विराजके रसोई अरोगो ॥ १८ ॥

राग सारङ्ग ।

जेंवत दोऊ मिलि रूपनिधान ॥आस्ताई॥ षट-रस भोजन रुचिर बनाये, ललिता परम सुजान ॥ हँसि हँसि बूझत प्रियसों प्रीतम, सुनो भानुकुल भान ॥ या व्यञ्जन को नाम कहा है, कीजै आप बखान ॥ कबहुँ ग्रास मुख देत परस्पर, करत मधुर मुसिक्यान ॥ नारायण छबि निरखत सजनी, भाग्य बड़े निज मान ॥ १९ ॥

राग सारङ्ग ।

अचवन करि बैठे दोऊ चन्द ॥आस्ताई॥ पान चबावत मृदु मुसिक्यावत, गौर श्याम सुखकन्द॥ ललिता ललितहि सेज बिछाई, हियमें परम अनन्द ॥ नारायण मन भ्रमर लुभानों, चरण कमल मकरन्द ॥ २० ॥



लालजी वचन श्रीजी प्रति।

राग मलहार।

प्यारी नित ऐसेही तुमें निहारूं॥आस्ताई॥ तृण तोरूं या चन्दबदन पै, राई नोन उतारूं॥ निज कर करूं शृंगार तिहारो, मुख पै भ्रमर बिड़ारूं॥ नारायण जब तुम कछु गावौ, मैं ढिग साज सँवारूं॥ २१॥

वार्तिक।

श्रीलालजीने कही हेप्राणप्यारी! आप के गायबे की प्रशंसा तौ बहुत सुनी है, परन्तु निज श्रवणन सों कभी गानों नहीं सुन्यों तब श्रीप्रियाजी प्रीतम की रुचि जानके प्रसन्न ह्वैके गायबे लगीं॥ २२॥

कान्हड़ा झपताला।

आज ब्रजराजकी देखि शोभा नई,गई तन भूलि सुधि भई हूं बावरी॥ आस्ताई॥ अधर रङ्ग पान मुसिकान जादू भरी, ताहु पै चित हरन दृगन के भावरी॥ कुण्डलन की हलन छलन मन मदन की, चलत गज चाल बसि करन के चावरी॥ निरखिके रूप नारायण हरष्यो हियौ, कौनसे भाग्य सो लग्यो है दाँवरी॥ २३॥

वार्तिक ।

श्रीलालजी ने बहुत बड़ाई करी, तापीछे सखीन ने आरती करिके, परदा छोड़ि दियो ॥ २४ ॥

दोहा ।

श्रीराधा गोपाल की, लीला परम विशाल ।
नारायण गावै सुने, परै न यम के जाल ॥ २५ ॥

इति श्रीप्रेमपरीक्षालीलाश्रीनारायणस्वामीजी कृत सम्पूर्णा ॥ २९ ॥

अथ श्रीरासपञ्चाध्यायीलीलाप्रारंभः ।

समाजी वचन ।

अरिल्ल ।

शरद रैन सुखदैन, मैन मन मोहन हारी ॥ नारायण चहुँओर, परम सुंदर उजियारी ॥ १ ॥ शीतल मन्द सुगन्ध चलत अति पवन त्रिविध बर ॥ फलि रही बनराय निरखि भये मुदित हिये हर ॥ २ ॥ बंशीबट पै जाय श्यामसुंदर मनभावन ॥ बंशी में लै नाम लगे बृजवाम बुलावन ॥ ३ ॥ १ ॥

राग मलहार ।

बंशी श्रवण सुनि गोपकुमारी ॥ आस्ताई ॥ अति आतुर ह्वै चलति श्याम पै, तन मन की सब सुरति



बिसारी ॥ गलको हार पहरि निज कटि में, कटि की किंकिनी गल में डारी ॥ पग पायक लै धारत करमें, करकी पहुंचियां पगन मझारी ॥ कान बुलाक कपोल पै बेंदी, नाक में पहिरी कान की बारी ॥ एक नैन अंजन बिन सोहैं, एक नयन में काजर धारी ॥ कोउ भोजन पति परसत दौरी, कोउ जेवत कर ग्रास सिधारी ॥ नारायण जो जैसे हुती घर, तैसेंही उठि बिपिन पधारी ॥ २ ॥

विरहिनी वचन।

कुण्डलिया।

ज्यों भादों सरिता उमड़ि, चलति सिन्धुकोधाय॥ त्यों गोपी हरि के निकट, तुरतहि पहुँचीं जाय। तुरतहि पहुँचीं जाय तिन्हें हरि लखि हरषाने॥ प्रेम-परीक्षा लैन, श्याम यों वचन बखाने ॥ तजि निज पति ऐसे समय, तुम आई या विपिन क्यों ॥ नारायण सुधि तन नहीं, निपट बावरी फिरत ज्यों ॥ ३॥

लालजी वचन।

दरबारी कान्हड़ा।

या बिरियां तुम यहां क्यों आई॥ आस्ताई॥ अर्द्ध रैन अति सघन विपिन में, डोलत हैं वनमृग समुदाई ॥ कै ब्रज प्रबल भूप चढ़ि आयो, कै तुमसों घर

भई लराई ॥ कै कहुँ त्याग दई पतियन नें, कै बन बिहरन को उठि धाई ॥ जो तुम कहौ तुम्हारे दरशन, येहु हमें नहिं बात सुहाई ॥ नारायण निज निज गृह जावो, याही में कुलधर्म बड़ाई ॥ ४ ॥

समाजी वचन।

दोहा।

निठुर वचन सुनि श्यामके, ह्वै ब्रजबाल निरास।
पग नखसों धरती लिखत, लै लै ठंढ़े श्वास ॥५॥

गोपिका वचन लालजी प्रति ।

छप्पय।

जब बोली इक चतुर, सुनौं तुम नंददुलारे।। श्रवण करत यह वचन, कढ़त हैं प्राण हमारे ।। कढ़त हमारे प्राण, दया करि इनको राखौ ।। ऐसे वचन कठोर लाल मति हमसों भाखौ ।। अति व्याकुल घर बार तजि, हम आईं या बेर तब ।। नारायण तुम नाम लै, वंशी में दई टेर जब ।। ६ ।।

गोपिका वचन।

रागपरज।

ऐसी न चहिये तुमें चितचोर ॥ आस्ताई ॥ नेक समझिके बात कहो तुम, नागर नन्दकिशोर ॥ प्रथम बुलाय लई हम बनमें, करि मुरली की घोर ॥

अब हमसों कहौ जाओ भवन में, प्रीतम निपट कठोर ॥ तात मात पति भ्रात जगत में, जहाँ लग नाते ओर ॥ अब उनसों कहा काज हमारो, हम आई तृण तोर ॥ कोटि भाँतिसों समझावो तुम, जितौ तुम्हारो जोर ॥ नारायण अब तुम्हें त्याग पग, परत न घरकी ओर ॥ ७ ॥

लालजी वचन।

राग बिहाग।

अब तुम मानो बात हमारी ॥ आस्ताई ॥ घर में जाय करो पति सेवा, परखत ह्वैहैं बाट तिहारी ॥ सोइ पतिव्रत वेद विदित है, सुनि लीजै नवगोपकुमारी ॥ नारायण अपने भर्ता बिन, सकल जगतको जाने नारी ॥ ८ ॥

गोपिका वचन।

राग देश।

प्रीतम अब यह प्राणबचावौ॥आस्ताई॥हम दासिन को वेर बेर जिन, बचन कठोर सुनावौ। हमें निरास न करौ प्राणपति, हँसिकर कंठ लगावौ॥ नारायण कर कमल फेरि उर, मन भवताप मिटावौ ॥९॥

लालजी वचन ।

दोहा ।

हम तुमसों हितकी कहें, सुनो सकल ब्रजवाम ।
अब इतनो हठ जिन करो,जावो अपनेधाम॥१०॥

गोपिका वचन ।

दोहा ।

प्राणनाथ या जगत में, सो अभागिनी नार ।
तुम्हैं त्याग पुनि चहैजो,सुख कुटुम्ब परिवार११॥

राग जङ्गला ।

प्रीतम जाओ जाओ मति भाखो ॥ आस्ताई ॥ यह जो नेम धर्म की पोथी, बांधि निकट धरि राखो ॥ कहो काहुसों अमी त्यागिके, तुम अरिण्ड फल चाखो ॥ नारायण वह कब मानत है, लोभ दिखावो लाखो ॥ १२ ॥

लालजी वचन।

वार्तिक ।

हे गोपियो! या समय हमारे पास तिहारो आयबे को कछू प्रयोजन नहीं ॥ १३ ॥

गोपिका वचन।

राग देश सोरठ ।

प्रीतम ऐसे निठुर जिन बोलो ॥ आस्ताई ॥श्रवण

करायके वचन सुधासम, अब कहा विषरस घोलौ॥ तजि परिवार शरण लई तुमरी, नेकतौ मनमें तोलौ॥ नारायण तजि प्रीति डगर कूं, क्यों अनीति मग डोलौ॥ १४॥

लालजी वचन।

राग मल्हार।

जो तिय अपनो धर्म नसावत॥ आस्ताई॥ ताहि न कोऊ भलौ कहै जग में, उभय लोक में अपयश पावत॥ नहिं शुभगति न मिलै सुख सम्पति, योंहीं वृथा वह जनम गँवावत॥ नारायण ऐसी मनमुखिया, निजकुल माहिं कलङ्क लगावत॥ १५॥

गोपिका वचन।

राग शहानो।

वेद विरुद्ध कहा हम कीनों॥ आस्ताई॥ जामनसों कीजै पति सेवा, सो मनतो तुमने हरि लीनो॥ जो तुम फल सब नेम धर्म को, ता तुमरे चरणन चित दीनों॥ नारायण जो सार निगम करि, सो हमने तुमहीं को चीनों॥ १६॥

लालजी वचन।

राग जैजैवन्ती।

नारी को निज पतिही देवा॥ आस्ताई॥ मूरख

वृद्ध रङ्क अति रोगी, ताही की कीजै रुचि सेवा॥सुप-
नेहू परपुरुष न ध्यावै, मनमें धर्म विचारै। तनक
विषैरस भोग कारनै, परमारथ न बिगारै॥ तासों
तुम अपने गृह जावो, करो जो वेद बखाने॥ नारा-
यण नहिं झूंठ कहैं हम, धर्म भली विधि जाने॥१७॥

गोपिका वचन।

राग जैजैवन्ती।

हम बन आयके धर्म कमायो॥ आस्ताई॥ सों
पति तो झूंठे या जगमें, साँचो पति तुमही कूं
पायो॥ प्राण जाओ पै भवन न जैहै, यह जिय
माहिं समायो॥ नारायण ऐसोको मूरख, मणिको
पाय पुनि चहत गिरायो॥१८॥

सखी वचन सखी प्रति।

दोहा।

देखि सखी निर्दईपन, अजहुँ तजत नाहिं श्याम।
पहले हमें बुलायके, अब कहें जावो धाम॥१९॥

सखी वचन।

दोहा।

सुनो लाल ऐसे वचन, फिर जिन करो बखान।
नतु सगरी ब्रजगोपिका, अबहि तजेंगी प्रान॥२०॥

समाजी वचन।

दोहा।

जब जानी निज हिये में, अतिव्याकुल बृजवाम।
हँसि बोले तब प्रेम वश, परमकौतुकी श्याम॥२१॥

लालजी वचन।

राग मलहार।

यह बात बड़े अचरज की भई॥ आस्ताई॥ हमतौ सहज सुभाव कही हँसि, तुम सांची जिय मान लई॥ आओ गोपियो रास करें अब, शरद रैनं अति मोदमई॥ नारायण तातत्थेई कहि, लैन लगे गति श्याम नई॥ २२॥

समाजी वचन।

दोहा।

सुनतवचनअतिहरषमन, निरततमिंलिब्रजबाल।
उभय उभय नवगोपिका, बीच बीच नँदलाल२३

नाइकी कान्हड़ा।

आज रचो रस रास विहारी॥ आस्ताई॥ जै सोई वृन्दा विपिन सुहावनं, तैसंहि शरद रैन उजियारी॥ यमुना तीर पुलिन की शोभा, फूलि रही चहुँदिशि फुलवारी॥ चलत पवन मन मोद बढ़ावन, शीतल मन्द सुगन्धित प्यारी॥ निरतत

लाल सहित ब्रजबाला, चपल चतुर गति लै लै न्यारी ॥ बजत अनेक भाँति मृदु बाजे, परम प्रवीन बजावनवारी ॥ कोऊ सखी सुर दुगुन अलापत, करत बड़ाई लाल गिरिधारी ॥ नाचत सुमन झरत हैं शीसते, मुख श्रम बिन्दु देत छबि न्यारी ॥ कबहूं श्याम बिलग ह्वै नाचत, ताल देत मिलि गोपकुमारी ॥नारायण नभते सुर निरखत, वरषत फूल सहित निज नारी ॥ २४ ॥

राग भैरों।

बंशीवट यमुनातट निरतत बनवारी ॥आस्ताई॥ अति सुगन्ध मन्द मन्द पवन चलत प्यारी ॥ चन्द्र वदन श्याम रसिक, मुकुटचंद शीश लसत, चन्द्र मुखी प्रिया शरद चांदकी उजारी ॥ बाजे बाजत विशाल गति मति सुर अधिक ताल, राग रंग विविध भांति नूपुर धुनि न्यारी ॥ नारायण शिव सुजान, गोपिका को भेष ठान, निरखि निरखि नृत्य गान भये चित्रकारी ॥ २५ ॥

दोहा।

प्रिय प्रीतमके गुण ललित, निगमागम को सार।
नारायण गावै सुने, निश्चय हो भवपार ॥ २६ ॥

इति श्रीरासपंचाध्यायी लीला श्रीनारायण स्वामी जी कृत संपूर्णा ॥ ३० ॥



अथ सखीअनुरागलीलाप्रारंभः।

सखी वचन सखी प्रति।

राग जोगिया।

निशि सोवत में अँगना में सखी, हरि आयके द्वारपै टेर दई ॥ आस्ताई ॥ सुनि वचन मनोहर चौंक परी, दृग नींद नजाने कहां कूं गई ॥ निज सास के त्रास न बोल सकी, उन अपने भवन की गैल लई ॥ निधि पाय के हाथसों जात रही, तबसों नारायण बिकल भई ॥ १ ॥

अनुरागवती वचन।

राग काफ़ी।

अब वाकी चरचा जिन कर री ॥ आस्ताई ॥ जाकी टेर सुनत भई व्याकुल, रूप देखी त्यागैगी घर री ॥ यह हम जानि चुकीं अपने मन, गयो लाज को खेल बिखर री ॥ नारायण जहाँ प्रगट भयो है, मोहनि मूरति नन्दकुमर री ॥ २ ॥

अनुरागवती वचन।

काफ़ी धीमाताल।

या सांवरे सो मैं प्रीति लगाई ॥ आस्ताई ॥ कुल कलङ्कते नाहिं डरूंगी, अबतौ करूं अपने मन भाई ॥ बीच बजार पुकार कहूं मैं, चाहे करौ तुम कोटि बुराई ॥ लाज मर्याद मिली आरन कूं,

मृदु मुसिक्यान मेरे बट आई ॥ बिन देखे मन-
मोहन को मुख, मोहि लागत त्रिभुवन दुखदाई ॥
नारायण तिनकूं सब फीको, जिन चाखी यह
रूप मिठाई ॥ ३ ॥

दोहा।

ताही छिन वा ठौर पै, आय गये ब्रजचन्द ।
निरखि सखी के हिये में, भयो परम आनन्द ॥४॥

इति श्रीसखीअनुरागलीला श्रीनारायण
स्वामीजी कृत सम्पूर्णा ॥ ३१ ॥

अथ सांझीलीलाप्रारंभः ।

प्रियाजी वचन सखीन प्रति ।

दोहा।

हे ललिते चंपकलते, चलौ विपिनमें आज ।
फूल वीन लावें सखी, निज सांझीके काज ॥ १॥

वार्तिक ।

सखी बोलीं जो आज्ञा—फिर वनमें जाय फूल
बीनने लगीं ॥ २ ॥

समाजी वचन।

दोहा।

ये सुधि पाय गये तहां, मोहन गुनन प्रवीन ।
सखिन सहित श्री लाड़िली, सुमन रहीं जहँ वीन ३

लालजी वचन।

आसावरी।

फूल यहां को बीनत है चोरी ॥ आस्ताई ॥ करत प्रकाश फिरत या बनमें, गजगामिनि तनगोरी ॥ हिये माहिं छल बल चतुराई, देखत में अति भोरी ॥ नारायण या ठौर काहुकी, चलत नहीं बरजोरी॥४॥

प्रियाजी वचन लालजी प्रति।

राग भैरवी।

फूल हम बीनति बिपिन हमारो ॥ आस्ताई ॥ तुम ऐसे बोलत कोउ जाने, मानो बन है तिहारो ॥ हटौ वृथा क्यों रारि बढ़ावो, सूधे भवन पधारो ॥ नारायण मन के लड्डुवन सों, भूँख न होय सहारो ५

लालजी वचन प्रियाजी प्रति।

दोहा।

सुनत लली मुखके वचन, विहँसे नंदकुमार ॥
बोले अजी हम बीनदें, फूल अनेक प्रकार ॥ ६ ॥

वार्तिक।

प्रियाजी बोलीं बस तुम्हारी कृपा ही चाहिये, ऐसे कह हँसती खेलती हुई निज भवन में आय के सांझी की रचना में तत्पर हुई—उतमें श्रीलालजी

को और जहां तहां सखिनयको सांझी निरखवे को न्योतो पठवायो, जब श्रीलालजीने आयके सांझी निहारी, तब अति प्रसन्न ह्वै के, प्रियाजीकी चतुराई की बड़ाई करवे लगे ॥ ७ ॥

सखी वचन ।

यमन कल्याण ।

आज प्रियाजू ने सांझी बनाई ॥ आस्ताई ॥ निज कर कमल रची यह रचना, को बरने इनकी सुघराई॥कहूँ गिरिराज कहूँ बरसानों कहुँ वृन्दावन छबि अधिकाई ॥ कहुँ यमुना तट घाट मनोहर, विविध कुंज बर गाखे सुहाई ॥ कहुँ द्रुमलता कहूं फुलवारी, बरन बरन खग मृग समुदाई ॥ नारायण लखि प्रीतमप्यारो, पुनि पुनि हरषत करत बड़ाई ॥ ८ ॥

दोहा ।

विविध कथा गोपाल की, नारायण सुख रास ।
गति पावें सुन भक्त जन, दुष्ट करें उपहास ॥९॥

इति श्रीसांझीलीला श्रीनारायण स्वामीजी
कृत संपूर्णा ॥ ३२ ॥

अथ फुटकर पद प्रारंभः ।

राग धनाश्री ।

रथ पर राजत दोऊ महाराज ॥ आस्ताई ॥ मणिमय कलश पताका सोहैं, सुन्दर चारों बाज॥अद्भुत छत परदा पिछवाई, रतननको सब साज॥नारायण सजनी ढिग गावत, धन्य दिवस है आज ॥ १ ॥

कालिंगडा ।

मोहन दीजै हमारे चीर ॥ आस्ताई ॥ हम कबसों कांपत हैं ठाढ़ी, शीतल यमुना नीर ॥ विना वसन अति लाज लगत है, किहि विधि निकसें तीर ॥ नारायण तुम कैसे पुरुष हो निरखत नगिन शरीर ॥ २ ॥

फुटकर दोहा ।

नारायण संझा समय, चढ़ी अटा ब्रजनार ।
कृष्ण पाख शशिको उदय, यह अचरज करतार ३

होरी कूट ।

एरी उठि देखि सखी होरी मच रही तेरे द्वार ॥
चन्द्रमा मृग गज चाल
आस्ताई ॥ दधिसुत वाहन दृग, करि गामिनि,
कंवल बलदेव श्रीकृष्ण
सरसुत सों मुखसार ॥ वीर अनुज टेरत हैं तोको,
भीर गुरु लाल
डर लिये साथ अपार ॥ गुरुको आदि, लाल पद

शेर मांस ग्यारह
पूरण, ले प्रीतम मुख डार ॥ हरि भोजन नवदोयपै
सोना
आवै, ताहुमें दिन गये चार॥नारायण हाटक तजि
श्याम
सजनी, भ्रमरको रङ्ग निहार ॥ ४ ॥

होरी कूट ।

कल होरी गये हार श्याम आज फिर तुम आये ॥
अक्रूर कंस देवकी वसुदेव
॥ आस्ताई ॥ सुफलकसुत स्वामी भगिनी पति,
नन्द यशोदा मेघनाद मन्दोदरी रावण राम
मीत की नारि पठाये ॥ मेघशब्द जननी पति रिपु
रङ्गजी नृसिंह हिरण्य होरी
कुलदेव नाम संग लाये॥नरकेहरि रिपु की भगिनी
कमल सूर्य राहु केतु
को, नाम लेत न लजाये ॥ सरसुत मित्र शत्रु भ्राता
चन्द्रमा गौ कुल
अरी, सो मुख पान चबाये ।। नारायण सुरभी कुल
अस्थल, क्यों अब चहत हँसाये ।। ५ ।।

राग जोगिया ।

आज सखीसुपनों में देख्यो रैन।।आस्ताई।।जबही
सों जिय भई अति व्याकुल,पल छिन परत न चैन।।
श्याम बरण इक पुरुषमनोहर,नवयौवन छबि ऐन।।
शीस मुकुट कुण्डल गल माला, सुंदर बांके नैन ।।

मैं उनसों कछु कहन न पाई, सुने न उनके बैन॥ नारायण तब आंख उघर गई, ना कछु लैन न दैन॥ ६॥

राग सारङ्ग।

करौ तुम गोवरधन की पूजा॥ आस्ताई॥ मूंग भात को परबत रचिके, बीच लगावौ गूँजा॥ बोले लाल नन्दसों बाबा, प्रथम पूजिबे तूजा॥ नारायण ऐसो त्रिभुवन में, देव नहीं है दूजा॥७॥

ग़ज़ल।

जहां ब्रजराज कल पाये, चलौ सखी आज वा बनमें॥ विना वा रूप के देखें, विरह की दों लगी तन में॥ न कल परती है बेकलको, नजी लगता है बिन जानी॥ भई फिरती हूं जोगन सी, सरे बाजार गलियनमें॥ करूं कुरवान जी उस पर, जनम भर गुन न भूलूंगी॥ मेरा महबूब जो लाके, बिठावे मेरे आंगन में॥ नहीं कछु ग़रज़ दुनियां से, न मतलब लाज सों मेरा॥ जो चाहो सो कहो कोई, बसा अबतौ वही मनमें॥ तेरी यह बात सांची है, नहीं शक इसमें नारायण॥ जो सूरत का है मस्ताना, वह परचे कैसे बातन में॥ ८॥

ग़ज़ल ।

किया बिसमिल मुझे उसकी, अदा के हाथ क्या आया ॥ तड़फ़ता छोड़ कर तेग़े क़ज़ाके हाथ क्या आया ॥ दिखा कर टुक जमाल अपना, मुझेतो करदिया शैदा ॥ भला पूछे कोई उस, माहिलक़ा के हाथ क्या आया ॥ मेरे इस ग़ुंचये दिलको, कभी उसने न आखोला ॥ गई बालाईवाला, उस सबा के हाथ क्या आया ॥ लगाना खून दिल चाहा था, मैंने उसके पाऊंसे ॥ वले इस पेशकदमीसे हिना के हाथ क्या आया ॥ फिरा शहरों वियाबाँ तालिबे दीदार नारायण ॥ बिठाया उसको परदेमें, हयाके हाथ क्या आया ॥ ९ ॥

राग सारङ्ग ।

फूलन के बँगले में राजैं पिया प्यारी हो ॥ आस्ताई ॥ फूलनके भूषण विचित्र सोहैं अंग अंग, फूलनके वसन वदन छबि न्यारी हो ॥ फूल से मुखारविन्द वचन फूलनसम, फूलि सखी तन मन शोभा लखि भारी हो ॥ जैसोही समाज साज आज नारायण, मानों कुंजभवन में फूली फुलवारी हो ॥ १० ॥

राग शहानो।

करत आरती नवब्रजनारी ॥ आस्ताई ॥ अगर कपूर सुगंधित बूका, विविध भाँतिकी सौंझ सँवारी ॥ घंटा झालर शंख नृसिंहा, विजैघंट धुनि परम सुखारी ॥ बंशी बीन मृदंग तँबूरा, सहनाई बाजत है न्यारी ॥ बरषत फूल गगन सों सुरगण, देववधू नाचत दै तारी ॥ हरषत सखी करत नौछावर, नारायण होवै बलिहारी ॥ ११ ॥

इति श्रीब्रजविहार श्रीबृन्दावन निवासी
श्रीनारायण स्वामीजी कृत
सम्पूर्णम् ॥ ३३ ॥



इति

ब्रजविहार

श्रीनारायण स्वामीजीकृत

संपूर्णम् ।

श्रीः ।

श्रीअनुरागरस ।

श्रीयुतमहाराजमुकुन्दस्वामीजीकेचरणकमलसेवी

श्रीवृंदावननिवासीपरमानुरागी-

श्रीनारायणस्वामीजी कृत ।



दोहा-प्रगट भये पंजाब में, सारस्वत द्विज वंश ।
संन्यासी ब्रजरसगमन, सारग्रहण जिमि हंस ॥

जिसमें श्रीकृष्णचंद आनन्दकन्द श्रीब्रजचन्द पूर्णब्रह्म की विचित्र लीला वर्णित हैं.

जिसको

रसिकजनोंकेआनंदार्थ-

खेमराज श्रीकृष्णदासने

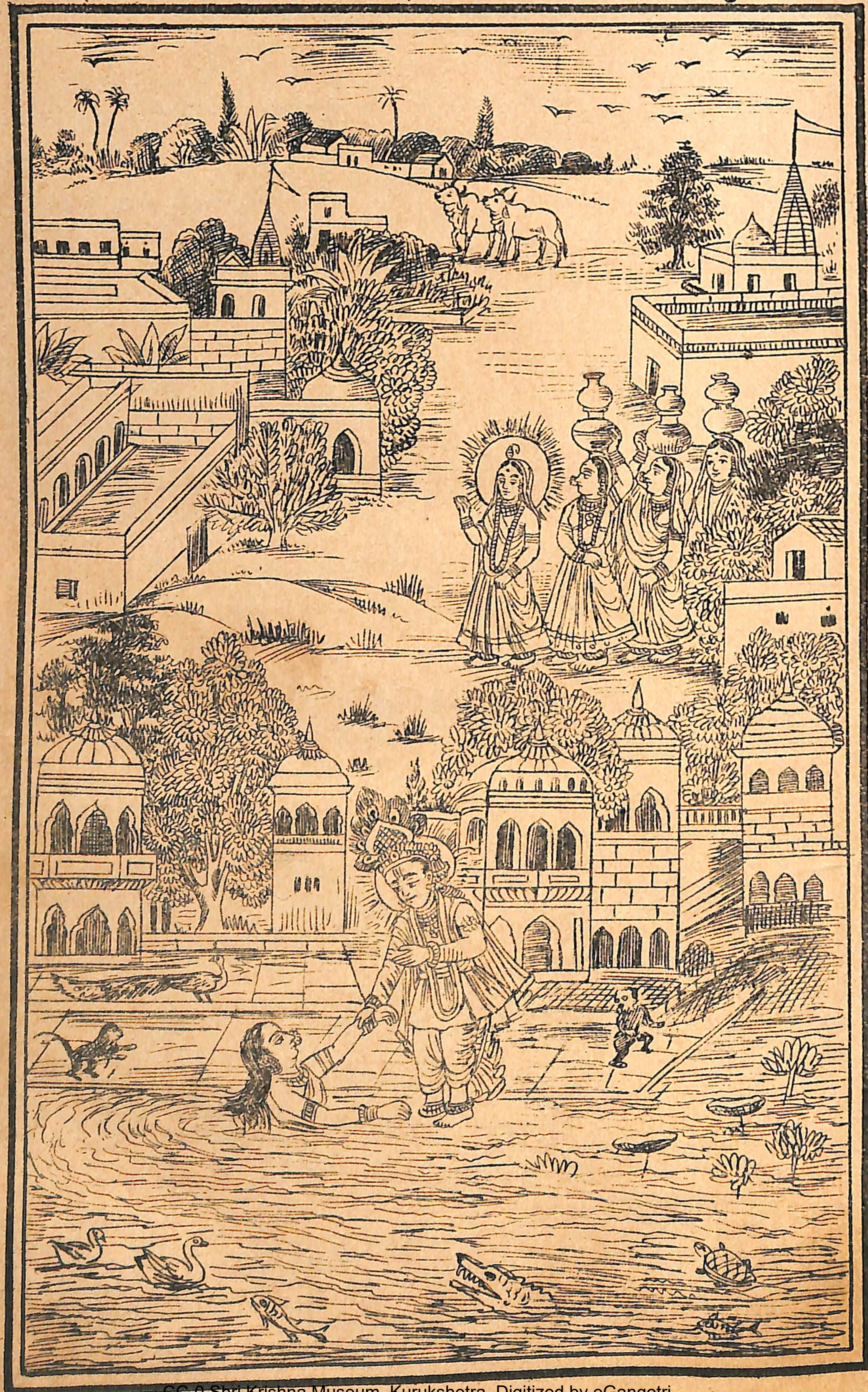
मुम्बई

निज "श्रीवेङ्कटेश्वर" यंत्रालयमें

मुद्रित कर प्रसिद्ध किया.

संवत् १९५६. शके १८२१.

१५



श्रीराधाकृष्णाभ्यां नमः ।

अनुरागरस.

श्रीनारायणस्वामीजी कृत ।

श्रीगुरु वन्दना ।

दोहा ।

श्रीगुरुचरण सरोजरज, वन्दों वारम्वार ।
नारायण भवसिन्धु हित, जे नवका सुखसार ॥ १ ॥
कृपा करो मो दीन पै, हरौ तिमिर अज्ञान ।
नारायण अनुरागरस, निजमति करूं बखान ॥ २ ॥

श्रीराधागोपालवन्दना ।

श्रीराधा गोपाल पद, कर प्रणाम उरधार ।
नारायण अनुरागरस, कहूं बुद्धि अनुसार ॥ ३ ॥
दयासिन्धु अति सुखसदन, सदा रहो अनुकूल ।
नारायण जिन उरधरो, मो पामर की भूल ॥ ४ ॥

श्रीवृन्दावन वन्दना ।

धनि वृन्दावन धाम है, धनि वृन्दावन नाम ।
धनि वृन्दावन रसिक जन, सुमिरे राधे श्याम ॥ ५ ॥
वृन्दावन जे वास कर, शाकपात नितखायँ ।
तिनके भागिन को निरख, ब्रह्मादिक ललचायँ ॥ ६ ॥

हम न भये ब्रज में प्रगट, यही रही मन आस ।
नितप्रति निरखत युगल छबि, कर वृन्दावनवास ७
नारायण ब्रज भूमि कूं, सुरपति नावें माथ ।
जहां आय गोपी भये, श्रीगोपेश्वर नाथ ॥ ८॥

चेतावनी पुनि गुण दोष लक्षण ।

बहुत गई थोरी रही, नारायण अब चेत ।
काल चिरैया चुग रही, निशिदिन आयू खेत ॥ ९ ॥
नारायण सुख भोग में, तू लम्पट दिन रैन ।
अंतसमय आयो निकट, देख खोलके नैन ॥ १० ॥
धन यौवन यों जायगो, जा विधि उड़त कपूर ।
नारायण गोपाल भजि, क्यों चाटे जग धूर ॥ ११ ॥
रम्भक शुम्भ निशुम्भ अरु, त्रिपुर आदि लै शूर ।
नारायण या काल ने, किये सकल भट चूर ॥ १२ ॥
हिरण्याक्ष जगमें विदित, हिरण्यकश्यप बलवान ।
नारायण क्षणमें भये, यह सब राख मसान ॥ १३ ॥
सगर नहूष ययाति खट, और अनेक महीप ।
नारायण अब वह कहां, भुजबल जीते द्वीप ॥ १४ ॥
कुंभकरण दशकंठ से, नारायण रणधीर ।
भये सकल भट काल वश, जिनके कुलिश शरीर १५

दुर्योधन जग में प्रगट, जरासिन्धु शिशुपाल ।
नारायण सो अब कहां, अभिमानी भूपाल ॥१६॥
नारायण संसार में, भूपति भये अनेक ।
मैं मेरी करते रहे, लै न गये तृण एक ॥ १७ ॥
भुजबल जीते लोक सब, निरभय सुख धनधाम ।
नारायण तिन नृपन को, लिख्यो रह गयो नाम १८
हाथ जोरि ठाढ़ो रह्यो, जिनके सनमुख काल ।
नारायण सोऊ बली, परे काल के गाल ॥ १९ ॥
नारायण नवखण्ड में, निरभय जिनको राज ।
ऐसे विदित महीप जग, ग्रसे काल महाराज ॥ २० ॥
गज तुरङ्गरथ सेन अति, निशि दिन जिनकेद्वार ।
नारायण सो अब कहां, देखौ आंख पसार ॥ २१ ॥
नारायण निज हाथ पै, जे नर धरत सुमेर ।
सोऊ वीर या भूमि पै, भये राखके ढेर ॥ २२ ॥
जिनके सहजहिं पग धरत, रजसम होत पखान ।
नारायण तिनको कहूं, रह्यो न नाम निशान॥२३॥
नारायण जिनके भवन, विधि सम भोग विलास ।
अन्त समय सब छाँड़के, भये काल के ग्रास॥२४॥
जिनको रूप निहारके, रवि शशि रथ ठहरात ।
नारायण ते स्वप्न सम, भये मनोहर गात ॥ २५॥
रेमन क्यों भटकत फिरत, भज श्रीनन्दकुमार ।

नारायण अबहू समझ, भयो न कछू बिगार ॥ २६ ॥
नारायण तू भजन कर, कहा करैंगे कूर ।
स्तुति निन्दा जगत की, दोउन के शिर धूर ॥ २७ ॥
नारायण शुभकाज ते, या विधि आवै लाज ।
जो ऐसे अघ सों करै, फिर क्यों होय अकाज ॥ २८ ॥
चार दिननकी चांदनी, यह संपति संसार ।
नारायण हरि भजन करि, जासों होय उबार २९ ॥
उर भीतर अति चाहना, बाहर राखत त्याग ।
नारायण वा त्याग पै, परो भारकी आग ॥ ३० ॥
मान बड़ाई ईरषा, मनमें भरीं अनेक ।
नारायण साधू बने, देखौ अचरज एक ॥ ३१ ॥
तेरे भावें कछु करौ, भलौ बुरौ संसार ।
नारायण तू बैठिके, अपनो भवन बुहार ॥ ३२ ॥
बात बनावै ज्ञानकी, भोगनको ललचात ।
नारायण कालिकाल के, कौतुक कहे न जात ॥ ३३ ॥
नारायण सतसङ्ग कर, सीख भजन की रीति ।
काम क्रोध मद लोभ में, गई आरबल बीति ॥ ३४ ॥
तनक बड़ाई पायके, मनमें अधिक गरूर ।
नारायण जिन बैठ मग, साहब को घर दूर ॥ ३५ ॥
यह शोभा संसारकी, ज्यों टेसू के फूल ।
नारायण फल आश ताजि, ललित देख जिन भूल ३६

धन विद्या गुण और बल, यह न बड़प्पन देत।
नारायण सोई बड़ो, जाको हरिसों हेत ॥ ३७ ॥
सो दुख भोगत आपही, जो दुख अपनीटांट।
नारायण भवरोग को, को लैवैगो बांट ॥ ३८ ॥
निज स्वारथ के मित्र सब, यही जगत की चाल।
नारायण बिन स्वार्थी, हितू नंद को लाल ॥ ३९ ॥
तात मात त्रिय भ्रात सुत, और सकल परिवार।
नारायण अपनो वही, जाको हरिसों प्यार ॥४०॥
नारायण हरि भजन में, तू जिन देर लगाय।
का जाने या देर में, श्वास रहै कै जाय ॥ ४१ ॥
नारायण बिन बोध के, पण्डित पशू समान।
तासों अति मूरख भलौ, जो सुमिरै भगवान ॥ ४२ ॥
ज्ञान कथा सीखी घनी, प्रश्न करत अति गूढ़।
नारायण विन धारणा, वृथा बकत है मूढ़ ॥ ४३ ॥
पुण्य पाठ पूजा प्रगट, करत सहित हंकार।
नारायण रीझै नहीं, चतुरन को सरदार ॥ ४४ ॥
नारायण जाकी विभौ, तन धन धरा निकेत।
तेहिं हित कौड़ी देत में, कर भरकर जल लेत ॥४५॥
भाव भक्ति सतसंग की, स्वप्नेहू नहिं सार।
नारायण समझे बड़ी, सुत दारा की लार ॥ ४६ ॥
पगसों नाव निहारके, पुनि गज होय अरूढ़।

भोगनते तरिबो चहै, नारायण मति मूढ़ ॥ ४७ ॥
चटक मटक नित छैलवन, तकत चलत चहुँ ओर।
नारायण यह सुधि नहीं, आज मरैं कै भोर ॥ ४८ ॥
नारायण जब अंतमें, यम पकरेंगे बाँह।
तिनसों भी कहियो हमें, अभी सोफतो नाँह ॥४९॥
कोऊ नहीं अपनो सगो, बिन राधा गोपाल।
नारायण तू वृथा मति, परै जगत के जाल ॥ ५० ॥
मन लाग्यो सुख भोग में, तरन चहै संसार।
नारायण कैसे बने, दिवस रैन को प्यार ॥ ५१ ॥
काम क्रोध मद लोभ की, लगी हिये में आग।
नारायण वैराग भट, सहित ज्ञान गए भाग ॥ ५२ ॥
विद्यावंत स्वरूप गुण, सुत दारा सुख भोग।
नारायण हरिभक्ति बिन, यह सबही हैं रोग ॥ ५३ ॥
नारायण निज हिये में, अपने दोष विचार।
तापीछे तू और के, औगुण भलें निहार ॥ ५४ ॥
संत सभा झांकी नहीं, कियो न हरिगुण गान।
नारायण फिर कौन विधि, तू चाहत कल्याण॥५५॥
जिन संतनके दरश सों, नारायण अघ जात।
तिनें कहत ये फिरत हैं, घर घर टुकड़े खात॥ ५७ ॥
बहु विधि पूजा दान व्रत, करत गरिब के साथ।
नारायण बिन दीनता, द्रवै न दीनानाथ ॥ ५७ ॥

नारायण मैं सत्य कहुँ, भुज उठाय के आज।
जो जियबने ग़रीब तू, मिलैं ग़रीब निवाज॥ ५८॥
विद्या पढ़ कर तौ फिरै, औरन को अपमान।
नारायण विद्या नहिं, ताहि अविद्या जान॥ ५९॥
कथा सुनत गइ आरबल, भयो न मन अनुराग।
नारायण तिन श्रवणसों, भवन भले हैं नाग॥ ६०॥
कथनी कथ केते गये, कर्म उपासन ज्ञान।
नारायण चारों जुगन, करनी है परमान॥ ६१॥
भीतरसों मैलो हियो, बाहर रूप अनेक।
नारायण तासों भलो, कौआ तन मन एक॥ ६२॥
नारायण ऐसे घने, बकें अनाप सनाप।
दोष लगावे सन्त को, आप पाप के बाप॥ ६३॥
अपनो साखी आप तू, निज मनमाहिं विचार।
नारायण जो खोट है, ताकूं तुरत निकार॥ ६४॥
जिनको मन निज वश भयो, तजकर विषै विलास।
नारायण ते घर रहो, चाहें करो वनवास॥ ६५॥
नारायण सुख भोग में, मस्त सभी संसार।
कोऊ मस्त वा मौज में, देख्यो आंख पसार॥ ६६॥
छबि निहार गोपाल की, जिहिं न होय आनंद।
नारायण तिहिं जानिये, यही चौथ को चंद॥ ६७॥
नारायणते धन्य नर, जिन वश कीये पांच।

साहिब सों मुख ऊजरे, जग की लगी न आंच॥ ६८॥
एक नारि औगुण भरी, एक तिया गुणवन्त ।
नारायण सोई भली, जापै रीझत कन्त ॥ ६९ ॥
रूप रंग सुन्दर घनो, चतुर कुलवती नार ।
नारायण तौ का भयो, प्रीतम करत न प्यार ॥ ७० ॥
चंद्रवदन मृग सम नयन, गति गयंद मृदुबोल ।
नारायण हरि भक्ति बिन, यह कौड़ी के मोल॥ ७१ ॥
नारायण तौ का भयो, पाये नैन विशाल ।
नैन वही जिन में बसे, श्रीराधा गोपाल ॥ ७२ ॥
लखी न जिनछबि श्याम की, कियो न पलभर ध्यान
नारायण ते जगत में, प्रगट निपट पाषान ॥ ७३ ॥
नारायण या जगत में, यह दो वस्तू सार ।
सब सों मीठो बोलिबो, करबौ पर उपकार ॥ ७४ ॥
नारायण परलोक में, यह दो आवत काम ।
देना मुष्टी अन्न की, लेना भगवत नाम ॥ ७५ ॥
बांट खाय हरिको भजे, तजे सकल अभिमान ।
नारायण ता पुरुष को, उभय लोक कल्यान॥ ७६॥
कियो न मानत और को, परहित करत न आप ।
नारायण ता पुरुष को, मुख देखे सो पाप ॥ ७७ ॥
रक्षा करी न जीव की, दियो न आदर दान ।
नारायण ता पुरुष सों, रूख भलो फलवान ॥ ७८ ॥

देत फूल फल पात दल, तनक नीर तरु पाय।
नारायण तासों गयो, खीर खाँड़ नित खाय ॥७९॥
नारायण दो बात को, दीजै सदा बिसार।
करी बुराई और ने, आप कियो उपकार ॥ ८० ॥
दो बातन को भूलि मति, जो चाहत कल्यान।
नारायण इक मौत कूं, दूजे श्रीभगवान ॥ ८१ ॥
वशीकरण के मन्त्र हैं, नारायण यह चार।
रूप राग आधीनता, सेवा भली प्रकार ॥ ८२ ॥
नारायण कीजै सदा, दुष्ट संग को त्याग।
जिमि लुहार के ढिग परै, वदन चिंगारी आग॥८३॥
फूली लता करील की, खिले मनोहर फूल।
नारायण ताके निकट, भ्रमर न बैठत भूल॥ ८४ ॥
नारायण ढिग सन्त के, गये न होत बिगार।
ज्यों बिन मोल सुगन्धिता, मिलै समीप अतार८५

सन्त लक्षण।

तजि पर औगुण नीर को, क्षीर गुणन सों प्रीति।
हंस सन्त की सर्वदा, नारायण यह रीति॥ ८६॥
तनक मान मन में नहीं, सबसों राखत प्यार।
नारायण ता सन्त पै, बार बार बलिहार॥ ८७॥

अति कृपाल संतोषवृति, युगल चरण में प्रीति।
नारायण ते सन्त बर, कोमल वचन विनीति ॥८८॥
उदासीन जग सों रहैं, यथा मान अपमान।
नारायण ते सन्तजन, निपुण भावना ध्यान ॥८९॥
मगन रहैं नित भजन में, चलत न चाल कुचाल।
नारायण ते जानिये, यह लालन के लाल ॥ ९० ॥
परहित प्रीति उदार चित, विगत दंभ मद रोष।
नारायण दुख में लखें, निज कर्मन को दोष ॥ ९१॥
भक्ति कल्पतरु पात गुण, कथा फूल बहु रङ्ग।
नारायण हरिप्रेम फल, चाहत सन्त विहङ्ग ॥ ९२ ॥
सन्त जगत में सो सुखी, मैं मेरी को त्याग।
नारायण गोविन्द पद, दृढ़ राखत अनुराग ॥ ९३ ॥
जिनको पूरण भक्ति है, ते सब सों आधीन।
नारायण तजि मान मद, ध्यान सलिलके मीन९४
नारायण हरि भक्ति की, प्रथम यही पहँचान।
आप अमानी ह्वै रहै, देत और को मान ॥ ९५ ॥
कपट गाँठि मन में नहीं, सब सों सरल सुभाव।
नारायण ता भक्त की, लगी किनारे नाँव ॥ ९६ ॥
जिनको मन हरिपद कमल, निशिदिन भ्रमरसमान
नारायण तिनसों मिले, कबू न होवै हान ॥ ९७ ॥

नारायण जो कृपाकरि, सन्त पधारें धाम ।
आगें ते उठि प्रीति सों, कीजै दण्ड प्रणाम ॥ ९८॥
सन्त दरश की लालसा, नारायण जो होय ।
रीते कर नहिं जाइये, फूल पत्र फल तोय ॥ ९९ ॥
अजा पुत्रमें मैं कहत, दिये आपने प्रान ।
नारायण मैना भली, खाय मलीदा सान ॥ १०० ॥
नारायण दुख सुख उभै, भ्रमत यथा दिन रात ।
बिन बुलाय ज्यों आरहैं, बिना कहें त्योंजात॥१०१
नारायण हरिकृपा की, तकत रहै नित बाट ।
जानहार जिमि पार को, निरखत नौका घाट१०२॥

कृपानिधानकी शोभा ।

रतिपति छबिनिन्दितवदन, नीलजलजसमश्याम।
नवयौवन मृदु हास वर, रूपराशि सुखधाम१०३॥
ऋतु अनुसार सुहावने, अद्भुत पहरें चीर ।
जो निज छबि सों हरत हैं, धीरज हू को धीर॥१०४॥
मोरमुकुट की निरखि छबि, लाजत मदन किशोर ।
चन्द्रवदन सुख सदन पै, भावक नैन चकोर॥१०५॥
जिन मोरन के पंख हरि, राखत अपने शीस ।
तिनके भागिन की सखी, कौन करसके रीस१०६

घुँघरारी अलकावली, मुख पै देत बहार।
रसिक मीन मनके लिये, कांटे अति अनियार १०७
मकराकृत कुण्डल श्रवण, झाईं परत कपोल।
रूपसरोवर माहिं द्वै, मछरी करत कलोल ॥ १०८॥
शुकलजात लखि नाशिका, अद्भुत छबि की सार।
तामें इक मोती पर्‌यो, अजब सुराही दार॥ १०९॥
सदन पाँति मुतियन लरी, अधर ललाई पान।
ताहू पै हँसि हेरबो, को लखि बचै सुजान ॥ ११० ॥
मृदुमुसिक्यान निहारिके, धीर धरत है कौन।
नारायण के तन तजै, कै बौराके मौन ॥ १११ ॥
अधरामृत सम अधर रस, जानत बंशी सार।
सप्त सुरन सो सप्त कर, कहत पुकार पुकार॥११२॥
रतनन की कंठी गरें, मुक्तमाल वनमाल।
त्रिविध ताप तीनों हरें, जो निरखत नँदलाल ११३
हस्त कमल पै मणी मय, जगमगात कर फूल।
जिनकीछबिलखिशम्भुरिपु, गयोसकलसुधिभूल॥
उदर माहिं त्रिवली सुभग, नाभि रुचिर गंभीर।
छबिसमुद्र के निकट अति, भई त्रिवेणी भीर ११५॥
गजमुक्ता की लरी द्वै, अति अमोल छबिकन्द।

सो अद्भुत कटि कोंधनी, पहिर रह्यो ब्रजचन्द ११६
गोल गुलफ पै सजि रहे, नूपुर शोभा ऐन ।
जिनकी धुनि सुनिजगत सो, मिटैलैनअरुदैन ११७
युगल चरण दश अँगुरियां, दशधा भक्ति सुहाय ।
नखनजोतिलखिचन्द्रमा, गयोअकाशउड़ाय ११८
तरुवनकी लखि अरुणता, कवि जन मन सकुचात ।
इन की उपमा का कहैं, पटतर नाहिं दिखात ११९
ब्रजबीथिन जब सांवरो, चलत सुचाल मतङ्ग ।
पग पगमें छबिकी झरी, होत चलै इकसङ्ग ॥१२०॥
जे रसिकन उर नित बसें, निगमागम को सार ।
नारायण तिन चरण की, बार बार बलिहार ॥१२१॥
नन्दलाल कीरति कुमारि, कहिबे कूं यह दोय ।
ज्यों तन की छायाप्रगट, तनसोंबिलग न होय १२२
याविधि सोंजोरसिकजन, धरतदिवसनिशिध्यान ।
नारायण ताकूं सदा, गावत वेद पुरान ॥ १२३ ॥
चलत फिरत बैठत उठत, लगी रहै यह आस ।
श्याम राधिका निरखिबौ, वृन्दाविपिन निवास १२४
नारायण होवै भलें, जो कछु होवनहार ।
हरि सों प्रीति लगायके, अब कहा सोच विचार १२५

नारायण अति कठिन है, हरि मिलिबे की बाट ।
या मारग तब पग धरै, प्रथम शीस दे काट ॥१२६॥

अथ प्रेम लक्षण ।

नारायण मन में बसी, लोकलाज कुलकान ।
आशक़ होना श्याम को, हांसी खेल न जान॥१२७॥
नेह डगर में पग धरै, फेरि विचारै लाज ।
नारायण नेही नहीं, बातन को महाराज ॥ १२८ ॥
चौसर बिछी सनेह की, लगे शीस के दाँव ।
नारायण आशक़ विना, को खेलै चितचाव॥१२९॥
गढ़ि गढ़ि के बातें कहे, मन में तनक न प्रीत ।
नारायण कैसे मिले, साहब सांचे मीत॥ १३० ॥
जो शिर सांटे हरि मिले, तो पुनि लीजे दौर ॥
नारायण ऐसे न हो, गाहक आवे और॥ १३१ ॥
सो क्यों सेवे बाग वन, गुल्मलता तरु मूल ।
नारायण जाके हृदय, फूल रह्यो वह फूल ॥ १३२॥
नारायण प्रीतम निकट, सोई पहुँचनहार ।
गेंद बनावे शीस की, खेले बीच बजार ॥ १३३ ॥
लगन लगन सबही कहें, लगन कहावे सोय ।
नारायण जा लग्न में, तन मन दीजे खोय ॥१३४॥

नर संसारी लगन में, दुख सुख सहैं करोर।
नारायण हरि प्रीति में, जो होवै सो थोर ॥ १३५ ॥
नारायण हरि लगन में, यह पांचो न सुहात।
विषय भोग निद्रा हँसी, जगत प्रीति बहुबात॥ १३६
नारायण घाटी कठिन, जहां नेह को धाम।
बिकल मूर्च्छा ससकिबौ, यह मग में विश्राम १३७
नारायण या डगर में, कोऊ चलत है बीर।
पग पग में बरछी लगै, श्वास श्वास में तीर ॥ १३८॥
लगन लगी गोपाल की, भूली तनकी सार।
नारायण मछली भयो, श्याम रूप जल धार १३९॥
वर्णाश्रम उरझे कोऊ, विधि निषेध व्रत नेम।
नारायण बिरले लखें, जिन मिलि उपजे प्रेम ॥ १४०
प्रेम नगर प्रीतम बसै, पै नारायण नेत।
जानहार या ग्राम को, कोऊ दिखाई देत ॥ १४१ ॥
प्रेमी छुट या प्रेम की, और न जानत सार।
नारायण बिन जौहरी, जैसे लाल बजार ॥ १४२ ॥
तौलों यह फांसी गरें, वर्णाश्रम व्रत नेम।
नारायण जौलों नहीं, मुँह दिखरायो प्रेम ॥ १४३॥
प्रेम सहित अँसुवन भरे, धरे युगल को ध्यान।
नारायण ता भक्त को, जग में दुर्लभ जान ॥ १४४॥
नारायण जाके हिये, उपजत प्रेम प्रधान।

प्रथमही वाकी हरत है, लोक लाज कुलकान १४५॥
नारायण या प्रेम को, नद उमड़त जा ठौर ।
पलमें लाज मर्य्याद के, तट काटत है दौर ॥ १४६॥
विधि निषेध श्रुति वेद की, मेंड़ देत सब मेट ।
नारायण जाके वदन, लागत प्रेम चपेट ॥ १४७ ।
नाराणय ज्ञाता अगम, सब की सम्मति येह ।
विना प्रेम कर्मादि विधि, ज्यों ऊसर में मेह ॥ १४८॥
नारायण जप जोग तप, सब सों प्रेम प्रवीन ।
प्रेम हरी कूं करत हैं, प्रेमी के आधीन १४९ ॥
नारायण यह प्रेम सुख, मुख सों कह्यो न जाय ।
ज्यों गूँगौ गुड़ खात है, सैनन स्वाद लखाय॥ १५०॥
प्रेम खेल सबसों कठिन, खेलत कोउ सुजान ।
नारायण बिन प्रेम के, कहा प्रेम पहँचान ॥ १५१ ॥
जिने प्रेम प्यालो पियो, झूमत तिनके नैन ।
नारायण वा रूप मद, छके रहैं दिन रैन ॥ १५२ ॥
नारायण जाके हिये, लगी प्रेम की रौर ।
ताही को जीवन सुफल, दिन काटें सब और ॥ १५३
नेम धर्म धीरज समझ, सोच विचार अनेक ।
नारायण प्रेमी निकट, इन में रहै न एक ॥ १५४ ॥
रूप छके झूमत रहैं, तन को तनक न ज्ञान ।
नारायण दृग जल भरे, यही प्रेम पहँचान ॥ १५५ ॥

है न्यारो सब पन्थ ते, प्रेम पन्थ अभिराम ।
नारायण यामें चलत, बेगि मिलै पिय धाम ॥१५६॥
मन में लागी चटपटी, कब निरखूं घनश्याम ।
नारायण भूल्यो सबी, खान पान विश्राम ॥१५७॥
सुनत न काहू की कही, कहै न अपनी बात ।
नारायण वा रूप में, मगन रहैं दिन रात ॥ १५८ ॥
देह गेह की सुधि नहीं, टूटि गई जग प्रीत ।
नारायण गावत फिरै, प्रेम भरे रसगीत ॥ १५९ ॥
धरत कहूं पग परत कित, सुरति नहीं इकठौर ।
नारायण प्रीतम बिना, दीखत नहिं कछु और १६०
भयो बावरो प्रेम में, डोलत गलियन माहिं ।
नारायण हरि लग्न में, यह कछु अचरज नाहिं १६१
लतन तरें ठाढ़ौ कबू, कबहू यमुना तीर ।
नारायण नैनन बसी, मूरति श्याम शरीर ॥ १६२ ॥
प्रेम सहित गद गद गिरा, कढ़त न मुख सों बात ।
नारायण महबूब बिन, और न कछू सुहात ॥१६३॥
कह्यो चहै कछु कहत कछु, नयन नीर सुरभंग ।
नारायण बौरा भयो, लग्यो प्रेम को रंग ॥ १६४ ॥
कबू हँसै रोवै कबू, नाचत करि गुण गान ।
नारायण सुधि तन नहीं, लग्यो प्रेम को बान॥१६५
सुरति लगी वा ध्यान में, सुनत और की बात ।

नारायण उत्तर दियो, मृदुल मनोहर गात॥१६६॥
जाके मन यह छबि बसी, सोवतहू बररात ।
नारायण कुण्डल निकट, अद्भुत अलक सुहात १६७
नारायण जाके दृगन, सुंदर श्याम समाय ।
फूल पात फल डार में, ताकूं वही दिखाय ॥ १६८ ॥
ब्रह्मादिक के भोग सुख, विष सम लागत ताहि ।
नारायण ब्रजचन्द की, लगन लगी है जाहि॥१६९॥
नारायण हरि प्रीति में, जाको तन मन चूर ।
ताहि न ममता और सों, निकट रहौ वा दूर ॥१७०॥
गुण गावै गोपाल के, भरि लावै दृग नीर ।
नारायण नहिं कल परै, बिन देखे बलबीर ॥ १७१ ॥
जाके मन में बसि रही, मोहन की मुसिक्यान ।
नारायण ताके हिये, और न लागत ज्ञान ॥ १७२ ॥
जो घायल हरि दृगन के, परे प्रेम के खेत ।
नारायण सुनि श्याम गुण; एक संग रो देत ॥१७३॥
नारायण जाको हियो, विंध्यो श्याम दृग बान ।
जग के भावें जीवतौ, है वह मृतक समान ॥ १७४ ॥
सुख सम्पति धन धामकी, ताहि न मनमें आस ।
नारायण जाके हिये, निशि दिन प्रेम प्रकाश॥१७५॥
नारायण जिनके हृदय, प्रीति लगी घनश्याम ।
जाति पांति कुल सों गये, रहै न काहू काम ॥ १७६॥

नारायण तब जानिये, लगन लगी या काल ।
जित तित में दृष्टी परै, दीखैं मोहनलाल ॥ १७७ ॥
नारायण ब्रजचन्द के, रूप पयोनिधि माहिं ।
डूबत बहुतै एक जन, उछरत एकौ नाहिं ॥ १७८ ॥
परा भक्ति अरु ज्ञान में, नेक नहीं कछु भेद ।
नारायण मुख प्रेम है, कहैं सन्त अरु वेद ॥ १७९ ॥
परा भक्ति याको कहैं, जित तित श्याम दिखात ।
नारायण सों ज्ञान है, पूरण ब्रह्म लखात ॥ १८० ॥
नन्दलाल दशरथ कुमर, उभय एक सरकार ।
नारायण जो दो कहैं, ते नर विना विचार ॥ १८१ ॥
नारायण सब एक हैं, रंग रूप तिल रेख ।
उनके दृग गम्भीर हैं, इनके चपल विशेष ॥ १८२ ॥
नारायण दो बात सों, अधिक और नहिं बात ।
रसिकनकोसत्संगनित, युगलध्यान दिनरात १८३
गुण मन्दिर सुंदर युगल, मंगल मोद निधान ।
नारायण निज चरण रति, यह दीजै वरदान १८४ ॥

इति श्रीवृन्दावननिवासिश्रीनारायणस्वामीजी कृत
श्रीअनुरागरस सम्पूर्णम् ॥ समाप्तोऽयंग्रन्थः ॥

विक्रय्य पुस्तकें ।

नाम.	की. रु. आ.
सूरसागर सूरदासजीकृत--सम्पूर्ण बारहोंस्कन्ध छपा तयार है सुन्दर जिल्द बँधी है	७--०
तथा रफ़ कागजका	६--०
भजनामृत–इसमें मंगल गौरी होली जयध्वनि पद विनय आरती इत्यादि अनेक प्रकार के भजनहैं साधुओंकेवास्ते अतिउत्तमहै	१–०
नवरत्नरासविलास प्रथम भाग–इसमें श्रीकृष्णजीकी अनेक प्रकारकी रासलीला हैं...	०--१२
रागरत्नाकर भक्तचिंतामणि रागमाला सहित जिसमें अति चटकीले २००० पद हैं ६ राग ३६ रागिनी में भजन गानेकाअति उत्तम	२–४
सितारचंद्रिका (सितारबजानेकीरीति)... ...	०--६
लावनी ब्रह्मज्ञानकी–काशीगिरि बनारसीकृत इस्में संपूर्ण लावनी ऐसी भाव गंभीरतासे बनाई हैं कि जिनका अर्थ शृंगार वैराग्य दोनों पक्षोंपर मिलताहै....	१--४
आनंदप्रकाश अर्थात् लावनी तुर्रा	०–४
स्वरताल समूह (संगीत)	१–८
पदावली (महंतरामसखेकृत–रामपद)	०–८
आनन्दगान (यथानाम तथागुणाः)	०–४
कजरीरागसंग्रह (देखनेही योग्य है)	०–३
संगीत सुधानिधि (दिलखुश ग़ज़लें)	०–३
रघुराजविलास–भक्तिउल्लासक रामकृष्णकेपद ...	०–६
भजनरत्नावलीबडी	१–४

जाहिरात।

नाम.	की. रु. आ.
भाषावार्तिक।	
शुकसागर बडा लाला शालिग्रामजी अनुवादित शंका समाधानों दृष्टांतों समेत उत्तमग्लेज ...	१२--०
" " तथा रफ्	१०--०
शुकसागर मध्यम अक्षर ग्लेज ७ रु. रफ्	६--०
शुकसागर छोटाअक्षर ग्लेज लालाशालिग्रामकृत ...	५--०
" " तथा रफ्	४--०
वाल्मीकिरामायण केवल भाषा जिल्दबँधी	१०--०
रामाश्वमेध केवलभाषा जिल्दबँधी	२--०
शिवपुराण केवल भाषा जिल्दबँधी	६--०

संपूर्ण पुस्तकोंका "बड़ासूचीपत्र" अलगहै
देखना होतो मँगालीजिये.

पुस्तकोंके मिलनेका ठिकाना-



"श्रीवेङ्कटेश्वर" छापाखाना-(मुंबई.)

इति

अनुरागरस.

श्रीनारायण स्वामीजीकृत

संपूर्णम् ।

